संक्षेप

साहित्य अकादेमी की द्विमासिक समाचार पत्रिका

सितंबर-अक्टूबर 2016

झलकियाँ

संगोष्ठी • परिसंवाद • लेखक सम्मिलन • साहित्य मंच • कविसंधि/कथासंधि • ग्रामलोक • लेखक से भेंट

हिंदी सप्ताह • अस्मिता • नारी चेतना • अनुवाद कार्यशाला • मेरे झरोखे से • व्यक्ति एवं कृति • नए प्रकाशन

सचिव की क़लम से...

हिंदी ने हमें आपस में जोड़कर रखा है। हिंदी आज दक्षिण और पूर्वोत्तर में भी अपनी जगह बना रही है। साहित्य अकादेमी अनुवाद का सबसे ज़्यादा पुरस्कार पानेवाले अहिंदी क्षेत्र के लोग हैं। कार्यालयों में भी अब हिंदी में पहले की अपेक्षा ज़्यादा काम हो रहा है। यह एक सकारात्मक और उत्साहजनक स्थिति है। राजभाषा सप्ताह के अंतर्गत अकादेमी द्वारा अपने मुख्य कार्यालय सहित सभी क्षेत्रीय कार्यालयों में भी व्याख्यान, साहित्य मंच, परिचर्चा एवं कार्यशाला आदि का आयोजन किया गया, जिसमें विषय के विद्वानों को आमंत्रित किया गया। अकादेमी द्वारा एक नया कार्यक्रम 'ग्रामालोक' आरंभ किया गया है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य प्रसिद्ध रचनाकारों का ग्रामीण क्षेत्र के साहित्य प्रेमियों से परिचित कराना तथा गाँव के लोगों तक साहित्य को पहुँचाना है।

अंतरराष्ट्रीय अनुवाद दिवस के अवसर पर अकादेमी द्वारा एक परिसंवाद का भी आयोजन किया गया। अनुवाद मानवीय सभ्यता की बुनियादी ज़रूरत रही है और वर्तमान में इसकी अनिवार्यता को नकारा नहीं जा सकता। अनुवाद केवल शब्दों का ही नहीं होता बल्कि इसके साथ संस्कृतियाँ भी अनूदित होती हैं। साहित्य अकादेमी के मुख्य उद्देश्यों में भाषाओं का परस्पर अनुवाद भी है।

इसके अतिरिक्त अकादेमी की गतिविधियों में साहित्यिक संगोष्ठियाँ, परिसंवाद, कार्यशाला तथा अन्य नियमित कार्यक्रम विभिन्न भाषाओं और देश के विभिन्न क्षेत्रों में संपन्न हुए हैं। उनकी एक संक्षिप्त झलक संक्षेप के इस अंक में प्रस्तुत है।

हम यह समस्त कार्य अपने सम्मानित लेखकों, अनुवादकों और शुभ चिंतकों के सहयोग और सुझाव से ही कर पाते हैं। हमें विश्वास है, आपका यह सहयोग निरंतर बना रहेगा।

— डॉ. के. श्रीनिवासराव

संपादक की ओर से

सूचना तकनीक के वर्तमान युग में वैश्वीकृत संसार में शायद ही मानव जीवन का कोई पहलू शेष रहा हो जो कि इंटरनेट की चमत्कारी तिलिस्म से अछूता हो। परिवर्तनों के इस तूफ़ान में प्रिंट मीडिया पर मायूसी के बादल छा जाना स्वभाविक है। इसमें संदेह नहीं कि डिजिटल मीडिया पढ़ना, जानना आसान बनाता है, मगर एक ख़ास वर्ग के लोगों को ही। यह कहना भी ग़लत न होगा कि डिजिटल मीडिया की अपेक्षा प्रिंट मीडिया ही उचित व अब भी लोकप्रिय है। आज के डिजिटल दौर में भी प्रिंट मीडिया का समाज पर अच्छा प्रभाव है।

यह बात भी सर्वविदित है कि आज की तारीख़ में स्थानीय, ज़िला, राजकीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर छपने व पढ़े जाने वाले अख़बारों का उनके करोड़ों पाठकों के साथ एक अनोखा रिश्ता है। सच कहें तो, दोनों ही एक दूसरे को उनके इसी रूप में देखने पढ़ने के आदी हो चुके हैं। और तो और, सुबह की चाय की चुस्कियों के साथ कागज़ के चंद पन्नों पर छपने वाली देश-विदेश से जुड़ी हुई विभिन्न ख़बरों को पढ़ने का कुछ अलग ही मज़ा होता है। प्रिंट मीडिया की पहुँच आम-जन तक आसानी से उपलब्ध है।

संपादक : डॉ. ख़ुर्शीद आलम
ई-मेल : po.ho1@sahitya-akademi.gov.in

संगोष्ठी

बी.जी.एल. स्वामी जन्मशतवार्षिकी

16 सितंबर 2016, बेंगळूरु

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु द्वारा नेशनल कॉलेज के कन्नड विभाग के सहयोग से कॉलेज परिसर में बी.जी.एल. स्वामी जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन 16 सितंबर 2016 को किया गया।

क्षेत्रीय सचिव श्री एस. पी. महालिंगेश्वर ने अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी की गतिविधियों से अवगत कराया। अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल के संयोजक श्री नरहल्ली बालसुब्रह्मण्यम ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। प्रसिद्ध लेखक, आलोचक एस. दिवाकर ने अपने बीज वक्तव्य में कहा कि बी.जी.एल. स्वामी मात्र एक लेखक नहीं थे, अपितु एक शोधक भी थे और उनके शोधकार्य को सारे संसार द्वारा मान्य किया गया है। उनके लिए कोई भी क्षेत्र अरुचिकर नहीं था। उनकी रुचि कला, संगीत में थी। उन्हें कई भाषाओं का ज्ञान था। वे तमिळ, संस्कृत, फ्रेंच और स्पैनिश जानते थे। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री नरहल्ली बालसुब्रह्मण्यम ने कहा कि कन्नड में वैज्ञानिक लेखन प्रदान करने की इस दिशा में स्वामी के लेखन को मॉडल बनाया जाना चाहिए। ज्ञान की गहराई के साथ हास्य उनके लेखन की विशेषता है। उन्होंने कहा कि स्वामी का अध्ययन नई पीढ़ी के लिए आवश्यक है।

नेशनल कॉलेज के कन्नड विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. एम. लीलावती ने धन्यवाद ज्ञापन किया। प्रथम सत्र में प्रसिद्ध आलोचक एच.एस.राघवेंद्र राव ने बी.जी.एल. स्वामी एवं विज्ञान लेखन के मॉडल पर बोलते हुए कहा कि स्वामी अपने पिता की तरह विद्वान एवं दिलचस्प व्यक्ति थे। उन्होंने कहा कि बी.जी.एल. ने विज्ञान में पहला आलेख तब लिखा था जब वे मुश्किल से 20 वर्ष के थे तथा अंत तक उन्होंने अपना शोध जारी रखा। प्रसिद्ध विज्ञान लेखक श्री टी. आर. अनंतरमू ने 'कन्नड टाइम्स' में विज्ञान लेखन पर बात की। उन्होंने कहा कि शिवराम कारंत के 'बाल प्रपंच' मॉडल (कन्नड में पहली साइंस इंसाइक्लोपीडिया) 'तेजस्वी' का लेखन, तथा 'कृष्णानंद कामथ' के लेखन के उच्च मानक बी.जी.एल. स्वामी के पहले से थे।

बायें से : एस. दिवाकर, नरहल्ली बालसुब्रह्मण्यम, एस.पी. महालिंगेश्वर, डॉ. एम. लीलावती

सुश्री चंद्रिका ने अपने रचनात्मक प्रतिक्रिया में कहा कि बी.जी.एल. स्वामी विज्ञान के क्षेत्र में एक शरारती बालक की तरह थे। उन्होंने कहा कि स्वामी विज्ञान में एक विद्रोही लेखक थे। भोजनावकाश सत्र के बाद श्री जी.एस. जयदेव, जिन्होंने 'बी.जी.एल. स्वामी का लेखन : शिक्षा और संस्कृति के लिए एक खिड़की' पर बात करते हुए कहा कि स्वामी एक अलग तरह के व्यक्ति थे और उन्हें थोड़ा ग़लत समझा गया। स्वामी ने महसूस किया कि शिक्षा को सीखने और खाने की कामनाओं दोनों को संतुष्ट करना चाहिए। एच. एल. पुष्पा ने स्वामी की कथाशैली पर बात की और कहा कि व्यंग्य और विडंबना के साथ अपने विनोदी शैली की कुछ अनोखी बात थी।

श्री के. एस. मधुसूदन ने अपनी रचनात्मक प्रतिक्रिया में कहा कि स्वामी सदैव शोध बुद्धि के व्यक्ति थे और उन्हें पुराने क्लासिक्स का विस्तृत ज्ञान था। उन्होंने यह भी कहा कि स्वामी की तुलना आधुनिक विचारक चोम्सकी से की जा सकती है।

श्री एस. शेट्टर ने अपने समापन वक्तव्य में कहा कि वे स्वामी की स्पष्टवादिता, साहस एवं निर्भीकता से बहुत प्रभावित थे।

नेशनल एजुकेशन सोसायटी के सचिव श्री एस.एन. नागराज रेड्डी ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि ख़ुशी की बात है कि अकादेमी का यह आयोजन कन्नड लेखन के लिए छात्रों को उत्साहित करने में बहुत सहायक सिद्ध होगा। कन्नड विभाग के बी.पी. विरेंद्र कुमार ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

एन. कृष्णपिल्लै जन्मशतवार्षिकी

22 सितंबर 2016, त्रिवेंद्रम

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु द्वारा प्रो. एन. कृष्ण पिल्लै फ़ाउंडेशन, त्रिवेंद्रम के सहयोग

उद्घाटन सत्र में भारत के पूर्व मुख्य न्यायधीश एवं केरल के राज्यपाल श्री पी. सदाशिवम् एवं अन्य

से आधुनिक मलयाळम् साहित्य के पुरोधा एन. कृष्ण पिल्लै की याद में 22 सितंबर 2016 को जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

संगोष्ठी का उद्घाटन भारत के पूर्व मुख्य न्यायधीश एवं केरल के राज्यपाल श्री पी. सदाशिवम् ने किया तथा अध्यक्षता अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के संयोजक श्री सी. राधाकृष्णन ने की। संगोष्ठी का आरंभ ज्ञानपीठ से सम्मानित एवं एम. कृष्ण पिल्लै के शिष्य ओ. एन.वी. कुरुप की स्वरांजलि के गायन से हुआ। क्षेत्रीय सचिव एस. पी. महालिंगेश्वर ने सम्मानित अतिथियों का स्वागत किया। इसके अतिरिक्त शताब्दी संगोष्ठी की विशेषता और अकादेमी की गतिविधियों की विस्तार से चर्चा की।

अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. कायमकुलम युनुस ने संगोष्ठी को सम्मानित करते हुए प्रो. एन. कृष्ण पिल्लै को श्रद्धांजलि अर्पित की। श्री सी. राधाकृष्णन ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में पूर्व राष्ट्रपति सर्वपल्ली राधाकृष्णन को उद्धृत करते हुए कहा कि शिक्षक भाषायी संस्कृतियों के विलय के अग्रदूत होते हैं और महान शिक्षकों ने तो संसार के उच्चतम स्तर तक अपने साथ भाषाओं के उत्थान के लिए प्रयास किया। कृष्ण पिल्लै ने आजीवन इन दो पहलुओं पर कार्य किया और अपनी साहित्यिक रचना के द्वारा मलयाळम् साहित्य को समृद्ध किया। पूर्व सांसद श्री पन्यम रवींद्रन ने संगोष्ठी के आयोजन के लिए एन. कृष्ण पिल्लै फ़ाउंडेशन का सहयोग करने के लिए अकादेमी की सराहना की।

अपने उद्घाटन वक्तव्य में न्यायमूर्ति पी. सदाशिवम ने कहा कि नई पीढ़ी के शिक्षकों के लिए प्रो. एन. कृष्णपिल्लै रोल मॉडल हैं। उन्होंने आगे कहा कि प्रो. पिल्लै ने मलयाळम् नाटकों को साहित्य के शिखर तक पहुँचाने में अहम भूमिका निभाई है। हालाँकि कृष्ण पिल्लै द्वारा निर्धारित मॉडल का मानना था कि छात्र और शिक्षक के बीच शिक्षा के माध्यम से विचारों का मुक्त प्रवाह होना चाहिए।

प्रो. एन. कृष्णपिल्लै फ़ाउंडेशन के सचिव डॉ. ई. राजराज वर्मा ने धन्यवाद ज्ञापन किया विशेषतः साहित्य अकादेमी और केरल के राज्यपाल तथा प्रतिष्ठित साहित्यकारों का।

उद्घाटन सत्र के बाद पहले सत्र का संचालन प्रख्यात लेखक डॉ. जार्ज ओनक्कूर ने किया। उन्होंने अपनी टिप्पणी में प्रो. पिल्लै के अपने परिचय को संदर्भित करते हुए इसे अगली पीढ़ी के लिए प्रेरणादायक बताया। केरल यूनिवर्सिटी के मलयाळम् विभाग की डॉ. सीमा जेरोम ने 'एन. कृष्ण पिल्लै एवं भारतीय रंगमंच' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया जिसमें उन्होंने हिंदी, बंगाली, कन्नड रंगमंच के हस्तियों की तुलना की थी और कहा कि इस उद्यम ने आधुनिक समय में पूरे भारत में स्थान बना लिया है। केरल यूनिवर्सिटी के सेंटर फ़ॉर परफ़ॉर्मिंग एंड विज़ुअल आर्ट्स के निदेशक डॉ. राजा वारियर ने नाटक को अच्छा बनाने के बारे में विस्तार से बताया और कहा कि एन. कृष्ण पिल्लै के नाटक प्रदर्शन कला के रूप में आज सबसे अधिक प्रासंगिक हैं।

डॉ. ई. राजाराज वर्मा ने अपने आलेख 'एन. कृष्ण पिल्लै के नाटक का शैलीगत दृष्टिकोण' में अपने विचार रखे साथ ही डॉ. पी. पद्माराव ने भी प्रो. कृष्ण पिल्लै के मलयाळम् ड्रामे में समग्र योगदान के बारे में बात की। श्री एस. राधाकृष्णन ने समस्त विद्वानों का परिचय प्रस्तुत किया तथा धन्यवाद ज्ञापन किया।

भोजनावकाश के बाद के सत्र की अध्यक्षता डॉ. एन. मुकुंदन ने की। कालिकट के प्रसिद्ध आलोचक डॉ. एम.एम. बशीर जो प्रो. कृष्ण पिल्लै के शिष्य थे, ने कृष्ण पिल्लै के साथ बिताए दिनों को साझा किया और शिक्षक के रूप में उनके उल्लेखनीय गुणों को याद किया। मलयाळम् भाषा के डॉ. डी. बेंजमिन ने कृष्ण पिल्लै की साहित्यिक आलोचना के गुणों के बारे में बात की। डॉ. सी. आर. प्रसाद ने अपने आलेख में कृष्ण पिल्लै के 'कैरालीयूत कढा' पर बात करते हुए कहा कि पुस्तक का कथन उपन्यास और केरल के सांस्कृतिक इतिहास दोनों रूप में पाठक को अभिभूत करते हैं।

डॉ. ज्योतिष कुमार के आलेख में कृष्ण पिल्लै के नाटककार के रूप में प्रभाव तथा डॉ. बी. वी. शशिकुमार ने मलयाळम् के बाल साहित्य में कृष्ण पिल्लै के योगदान पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। डॉ. राजाराज वर्मा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

तमिलनाडु आदिवासी वाचिक साहित्य

23-24 सितंबर 2016, पुदुचेरी

साहित्य अकादेमी के उपक्षेत्रीय कार्यालय चेन्नै द्वारा पांडिचेरी इंस्टीट्यूट ऑफ़ लिंग्विस्टिक एंड कल्चर' (पी आई एल सी) के सहयोग से दो-दिवसीय 'तमिलनाडु आदिवासी वाचिक साहित्य' विषयक संगोष्ठी का आयोजन 23-24 सितंबर 2016 को किया गया।

अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि आदिवासी संस्कृति शीघ्र ही उभरकर आया था और इसने समाज और साहित्य में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने वाचिक परंपराओं के विकास एवं उनके संरक्षण के लिए अकादेमी द्वारा किए जा रहे प्रयासों के बारे में बताया और संगोष्ठी के सफल होने की शुभकामनाएँ दीं। साहित्य अकादेमी के तमिळ परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. के. नचिमुथु ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने 'मुँह के शब्द' के साहित्य को बढ़ावा देने में साहित्य अकादेमी की सक्रिय भूमिका पर टिप्पणी की। साहित्य अकादेमी के सामान्य परिषद् के सदस्य डॉ. आर. संबथ ने आरंभिक वक्तव्य दिया। उन्होंने साहित्य अकादेमी के सचिव एवं तमिळ परामर्श मंडल के सदस्यों की प्रशंसा की और इस आयोजन के लिए धन्यवाद व्यक्त किया। पाण्डिचेरी इंस्टीट्यूट ऑफ़ लिंग्विस्टिक एंड कल्चर के निदेशक डॉ. भक्तवत्सल भारती ने बीज-वक्तव्य दिया। उन्होंने अपने विचारोत्तजक वक्तव्य में आदिवासी मौखिक परंपराओं को मान्यता देने और उनके संरक्षण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली संस्थाओं के बारे में बात की। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि आदिवासी समाज के मौखिक साहित्य को बनाए रखने की ज़रूरत है, उन्होंने उन समुदायों की जीवन शैली पर भी प्रकाश डाला। अकादेमी के प्रभारी श्री. ए. एस. इलंगोवन ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री बी. नाज़िमदीन ने की। सुश्री जी. मुथुलक्ष्मी, डॉ. टी. विजयलक्ष्मी एवं श्री जन भारती ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री नाज़िमदीन ने पश्चिमी घाटों, कन्यामुकारी से पलक्कड तक फैले 'मन्नान आदिवासी' के मौखिक साहित्य के बारे में बात की। सुश्री मुथुलक्ष्मी ने अन्नामलाई क्षेत्र के 'मुथुवर आदिवासी' के बारे में आलेख प्रस्तुत किया। डॉ. टी. विजयलक्ष्मी का आलेख पश्चिमी घाट के जंगलों में रहने वाले 'इरुळर आदिवासी' पर आधारित था।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्री सुंदर मुरुगन ने की। इस सत्र में तीन विद्वानों डॉ. ओ. मुथैया, प्रो. के. श्रीनिवास वर्मा एवं श्री दुरई मुरुगन ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री मुथैया ने 'पलियार आदिवासी', श्रीनिवास वर्मा ने 'नरिक्कुरवर आदिवासी' और श्री मुरुगन ने 'कट्टूनैकन आदिवासी' पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। शाम को विभिन्न आदिवासी संस्कृति को दर्शाते हुए एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

संगोष्ठी के दूसरे दिन के पहले सत्र की अध्यक्षता डॉ. ए. धनंजयन ने किया। उन्होंने आदिवासियों के वाचिक साहित्य और मिथक के बारे में बात की। इस सत्र में श्री मनिक्को पनीरसेलवम ने 'मलइक्कुरवर आदिवासी' तथा श्री का. इला. महेन्द्रन ने 'कोट्ठार आदिवासी' पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्री जी. स्टेफेन ने की तथा 'कानिक्करार आदिवासी' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। इस सत्र में श्री धर्मराज ने 'कानिक्कररगेलिन सातुप्पदलगल' श्री जय कृष्णन ने 'मुतुक्कुरुम्बर आदिवासी' एवं सुश्री दीपारानी ने 'थोंडइमंडल इरुलर आदिवासी' पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

अंतिम सत्र की अध्यक्षता प्रो. आर. कामरासु ने किया। इस सत्र में श्री गोविंद राज ने जवाडी पहाड़ों में रहने वाले 'मलयाली आदिवासी' पर आलेख प्रस्तुत किया। सुश्री वसमल्ली ने 'तोदा आदिवासी' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। प्रो. कोथंदरमन ने अपने समापन वक्तव्य में द्रविड़ समुदाय की भाषाओं के बारे में बात की।

संगोष्ठी में भारी संख्या में छात्र, विद्वान, लेखक, कवि आदि उपस्थित थे।

प्यारी चाँद मित्र द्विजन्मशतवार्षिकी

23-24 सितंबर 2016, कोलकाता

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा प्यारी चाँद मित्र के द्विजन्मशतवार्षिकी के उपलक्ष में क्षेत्रीय कार्यालय के सभागार में 23-24 सितंबर 2016 को संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

क्षेत्रीय सचिव गोपाल च. बर्मन ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए प्यारी चाँद के साहित्यिक जीवन तथा बाङ्ला उपन्यास में उनके योगदान के बारे में संक्षेप में बताया। प्रसिद्ध विद्वान श्री आलोक रे ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में कहा कि प्यारी चाँद के साहित्य के बारे में अध्ययन करने के लिए पर्याप्त साहित्य उपलब्ध नहीं है। प्यारी चाँद द्वारा अन्य बहुमूल्य लेखन का अभी पता लगाया जाना है।

प्रसिद्ध विद्वान श्री स्वप्न बसु ने एक लेखक, एक समाजसुधारक, एक गायक, एक शिक्षाविद् और सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह कि एक कृषक के रूप में पीयरीचंद द्वारा प्रमुख भूमिका निभाने पर विमर्श किया।

साहित्य अकादेमी के बाङ्ला परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. रामकुमार मुखोपाध्याय ने सत्र की अध्यक्षता करते हुए वक्ताओं का परिचय प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र में श्री शक्ति सदन एवं शुभेंदु दासमुंशी ने 'प्यारी चाँद के शिक्षा' पर विचार विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए जबकि अम्रा घोष ने सत्र की अध्यक्षता की। श्री शक्ति सदन मुखोपाध्याय ने शिक्षा के ब्रिटिश मॉडल और शिक्षा के संस्कृतिकरण : स्थानीय भाषा का स्वदेशी मॉडल पर जिनमें समकालीन शिक्षा का

उल्लेख था, पर अपने विचार व्यक्त किए। शुभेंदु दास मुंशी ने प्यारी चाँद के प्रारंभिक शिक्षा के मॉडल पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

दूसरे सत्र में श्री अमित हाजरा और श्री पीयूषकांति पाणिग्रही ने प्यारी चाँद के कृषि एवं पुस्तकालय पर विचार व्यक्त किए जबकि श्री किशोर कृष्ण बंद्योपाध्याय ने सत्र की अध्यक्षता की। तीसरे सत्र की अध्यक्षता श्री अमिताव खस्तगीर ने की तथा श्री देबाशीष राय और देवेंद्रनाथ ठाकुर ने प्यारी चाँद का ब्रह्म समाज से जुड़ाव के बारे में बात की।

चौथे सत्र की अध्यक्षता श्री चिन्मय गुहा ने की तथा सुमन मुखोपाध्याय और सुमन गुन ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। पाँचवें सत्र में अमिया देव तथा स्वप्नमय चक्रवर्ती ने आलेख प्रस्तुत किए जबकि भारती राय ने अध्यक्षता की। समापन सत्र की अध्यक्षता देवेश राय ने की। उन्होंने समापन वक्तव्य में उन्नीसवीं शताब्दी के बाङ्ला लेखकों और उनके समकालीनों के बारे में बात करते हुए अकादेमी के आयोजन के बारे में आभार व्यक्त किया।

पूर्वोत्तर क्षेत्रीय भाषाओं में समकालीन महिला लेखन

26-27 सितंबर 2016, डानटन

साहित्य अकादेमी और महार कॉलेज के संयुक्त तत्त्वावधान में दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन 26-27 सितंबर 2016 को डानटन, पश्चिमी मेदिनीपुर, पश्चिम बंगाल में किया गया।

महार कॉलेज के डॉ. पवित्र कुमार मिश्रा ने साहित्य अकादेमी के प्रतिनिधियों का स्वागत किया और अपने कार्यालयी-स्टाफ़ की प्रशंसा की। उद्घाटन गायन के बाद डॉ. गोपालचंद्र बर्मन, क्षेत्रीय सचिव, कोलकाता ने स्वागत भाषण दिया। प्रो. दामोदर मिश्र ने ईश्वरचंद्र विद्यासागर के जन्मदिन पर एक संगोष्ठी आयोजित करने पर ज़ोर दिया। कॉलेज के गवर्निंग बॉडी के अध्यक्ष श्री विक्रम चंद्र प्रधान ने ग्रामीण और दूर अंचल

बाएँ से : नीलांजना भट्टाचार्य, यशोधरा रॉय चौधुरी, कविता लामा, पुष्पा शर्मा

से आए प्रतिभागियों का स्वागत किया और आभार प्रकट किया।

अंग्रेज़ी विभाग, विश्वभारती विश्वविद्यालय प्रो. सोमदत्त मंडल ने बीज-भाषण दिया। महिलाओं का सार्वभौमिक रूप से शोषण हो रहा है, इस समस्या से मुक्ति के लिए विशाल राजनैतिक आंदोलन की आवश्यकता है। उन्होंने आशापूर्णा देवी (बाङ्ला) और इंदिरा गोस्वामी (असम) के संघर्षों का उल्लेख भारत में भाषाओं के राजनीतिकरण विषय पर भी अपने विचार व्यक्त किए।

डॉ. गौरहरि दास, संयोजक ओडिया परामर्श मंडल, साहित्य अकादेमी ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि कैसे लेखिकाओं को अपने घर में ही उसके बाद समाज का भी विपरीत परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। महिलाएँ केवल महिलाओं के बारे में ही नहीं बल्कि समाज के हर वर्ग के बारे में लिखती हैं। पुरुष लेखकों का दृष्टिकोण उनसे भिन्न होता है।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र में डॉ. देवजन शर्मा, अंग्रेज़ी विभाग के अध्यक्ष, नॉर्थ ईस्टर्न हिल विश्वविद्यालय, तूरा कैंपस, मेघालय ने असमिया लेखिकाओं के बारे में बात की। उन्होंने कहा कि कार्यकर्त्ताओं के रूप में अपेक्षाकृत लेखिकाओं के रूप में महिलाओं ने ज़्यादा ध्यान आकर्षित किया है।

डॉ. हीरण्मयी मिश्र ने समकालीन ओडिया लेखिकाओं के बारे में विचार-विमर्श किया। उन्होंने कहा कि आरंभिक तौर पर महिलाओं के लेखन का केंद्रीय विषय पारिवारिक एवं धार्मिक था। किंतु 20वीं सदी के अंत तक महिलाओं का लेखन विषय का क्षेत्र काफ़ी विस्तृत एवं गहरा हुआ है। डॉ. सुचेता मिश्रा ने बताया कि समकालीन महिला ओड़िया लेखिकाएँ खुले शारीरिक एवं मानसिक स्थितियों का चित्रण करती हैं। डॉ. तारी डेका ने इस सत्र की अध्यक्षता की और असमिया महिला लेखिकाओं द्वारा उठाए गए विभिन्न मुद्दों पर प्रकाश डाला।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध कवयित्री यशोधरा राय चौधुरी ने की। कविता लामा ने नेपाली भाषा की कवयित्रियों के बारे में बात की। उन्होंने कहा कि लेखक बहुत दिनों से यौन-समस्याओं पर नहीं बोल रहे थे। एक परिवर्तन उल्लेखनीय है कि उन्होंने पुरुषों के लेखन को नकारा भी है। विश्वभारती विश्वविद्यालय की प्राध्यापक नीलांजना भट्टाचार्य ने बंगाली लेखकों का प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने मल्लिका सेनगुप्ता, मीनाक्षी सेन और सुचित्रा भट्टाचार्य के लेखन के बारे में अपने विचार व्यक्त

किए। 1990 के बाद महिला लेखकों द्वारा प्रयोग होते इंटरनेट से उनके लेखन में परिवर्तन आया है। सिक्किम विश्वविद्यालय की प्राध्यापक डॉ. पुष्पा लामा ने पुष्पा राय के लेखन के बारे में बताते हुए कहा कि आपके लेखन में परिवार के अंदर और बाहर दोनों में उनकी स्थितियों को बताया गया है। यशोधरा रॉय चौधुरी ने समापन भाषण में महिला एवं महिला लेखन की विभिन्न समस्याओं को बताया।

संगोष्ठी के दूसरे दिन तीसरे सत्र में डॉ. ज्योति घोष ने अपने आरंभिक भाषण में कहा कि लेखन एक प्रकार की कला है जो महिलाओं की स्वाधीन चेतना से संबंधित है। टैगोर की कहानी 'स्त्री पत्र' का उदाहरण देकर अपनी बात को स्पष्ट किया। मणिपुर विश्वविद्यालय के प्राध्यापक प्रो. के.एच. कुंजो सिंह ने मणिपुरी प्राचीन कथाओं में स्त्रियों की स्थिति के बारे में बात की। रतन कुमार सिंह ने मणिपुरी स्त्रियों की विभिन्न धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों के बारे में बात की। सत्र की अध्यक्षता करते हुए डॉ. इंदिरा झा ने मैथिली भाषा की स्त्री लेखिकाओं के विभिन्न मुद्दों पर विचार व्यक्त किए।

तीसरे सत्र में जाबा मुर्मू ने संताली जनजातीय विरासत के बारे में विस्तार से बात की। यह दिलचस्प होगा कि लेखक लेखन में महिलाओं के दुख को दर्शाते हैं, लेकिन कभी भी सामाजिक ताने-बाने में बिगड़ते एकीकरण पर नहीं लिखते। लेखक परंपरागत मूल्यों की स्थापना में लगे हैं। दूसरे वक्ता मिकोज बसुमतारी ने कहा कि बोडो महिला लेखिकाएँ भी राजनीतिक आंदोलन और आतंकवाद के बारे में लिखती हैं। बोडोलैंड विश्वविद्यालय की प्राध्यापक फुकन बसुमतारी ने बोडो महिला लेखिकाओं द्वारा उठाए गए विभिन्न विषयों को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि कहानीकारों ने बहुत से सामाजिक मुद्दों और अनेक राजनीतिक आंदोलनों को चलाया है। ताला टुडु ने सत्र की अध्यक्षता की, समस्त वक्ताओं के भाषण पर महत्त्वपूर्ण टिप्पणी की।

प्रो. शंकर प्रसाद सिन्हा ने समापन वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि साहित्यिक गतिविधियों के उन्नयन में साहित्य अकादेमी का महत्त्वपूर्ण योगदान है। डॉ. पवित्रा मुखर्जी, सहायक प्रोफ़ेसर, अंग्रेज़ी विभाग ने कहा कि लेखन का कार्य अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

श्री तरुण तापस मुखर्जी, सहायक प्रोफ़ेसर, अंग्रेज़ी विभाग ने साहित्य अकादेमी को धन्यवाद दिया साथ ही आए हुए सभी प्रतिभागियों को उनकी सक्रिय भूमिका के लिए हृदय से धन्यवाद दिया।

टी. जोगेंद्रजीत जन्मशतवार्षिकी

27 सितंबर 2016, इंफ़ाल, मणिपुर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता और प्रोग्रेसिव वॉलेंटरी ऑर्गनाइज़ेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में मणिपुर में टी. जोगेंद्रजीत सिंह के जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर 27 सितंबर 2016 को इंफ़ाल में एक संगोष्ठी का आयोजन हुआ। अकादेमी के सहायक संपादक ने प्रतिभागियों का स्वागत किया। श्री एच. बिहारी सिंह, संयोजक, मणिपुरी परामर्श मंडल ने उद्घाटन भाषण दिया। इबातोमली सिंह, सलाहकार, प्रोग्रेसिव वॉलेंटरी ऑर्गनाइज़ेशन, मणिपुर ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि जोगेंद्र ने 14 विभिन्न पुस्तिकाएँ लिखीं, जो प्राकृतिक दवाइयों के बारे में थीं।

प्रथम सत्र में एस. फलचन्द्र सिंह, एम. अग्नि सिंह, एम. निनगेतमेजोने जोगेंद्रजीत सिंह के व्यक्तित्व एवं कृतित्त्व के बारे में आलेख पढ़ा।

दूसरे सत्र में एल. गोलेंद्र, एन. खोटो सिंह और के. ब्रजमनि ने विभिन्न विषयों पर बातचीत की और मणिपुरी साहित्य और समाज में जोगेंद्रजीत सिंह के योगदान पर भाषण दिया। आर. के. जितेंद्रजीत सिंह की अध्यक्षता में यह कार्यक्रम संपन्न हुआ।

पश्चिमी असम के राजवंशियों के पुराण एवं कहानियाँ

27-28 सितंबर 2016, गोलागंज, असम

साहित्य अकादेमी और कोच राजवंशी साहित्य सभा के संयुक्त तत्त्वावधान में चालरी कॉलेज, गोलागंज में 'पश्चिमी असम के राजवंशियों के पुराण एवं कहानियाँ' विषय पर 27-28 सितंबर 2016 को एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

उद्घाटन सत्र की शुरुआत के पूर्व डॉ. द्विजेंद्रनाथ भक्त, अध्यक्ष, कोच राजवंशी साहित्य सभा ने दीप प्रज्जवलित किया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता भारत भूषण महांति, प्राचार्य, चिल्लारी कॉलेज ने किया। क्षेत्रीय सचिव गोपाल च. बर्मन ने स्वागत भाषण में कहा कि इस अत्यंत महत्त्वपूर्ण संगोष्ठी का उद्देश्य नई पीढ़ी को कोच राजवंशी समुदायों की भाषा, संस्कृति और इतिहास को समझने और संरक्षित करने का है। उद्घाटन भाषण द्विजेंद्रनाथ भक्त ने दिया।

ज्योतिर्मयी प्रोधोनी, प्रोफ़ेसर, अंग्रेज़ी विभाग, नेहू, शिलांग ने बीज-वक्तव्य दिया। उन्होंने पुराणों की अवधारणा के बारे में बात करते हुए पुराणों एवं कहानियों के अंतर्संबंधों का सूक्ष्म विश्लेषण किया। उन्होंने नागा, खासी, मिजो और कोह जनजातियों के संदर्भ में पुराण की उत्पत्ति के बारे में बात की। उद्घाटन सत्र की समाप्ति भारत भूषण मोहंती के उद्बोधन के साथ हुआ। श्री मोहंती ने पुराणों के अध्ययन की सामान्य सिद्धांत के बारे में बताया। उन्होंने भारत में पुराणों के अध्ययन की समस्याओं के बारे में भी बात की।

पहले सत्र की अध्यक्षता तेजपुर केन्द्रीय विश्वविद्यालय के देवर्षि नाथ ने की। उन्होंने 'मिथ : यूज़ेज एंड अब्यूज़ेज' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने आलेख में पुराणों और संस्कृतियों के गहरे संबंधों को रेखांकित किया। दूसरा आलेख प्रतिष्ठित विद्वान

प्रोफ़ेसर दीपक कुमार राय, रायगंज विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल ने प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि अनेक पौराणिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और ऐतिहासिक महत्त्व के अवधारणा से 'हाइड्रो-सांस्कृतिक' तत्त्व बने हैं और इन तत्त्वों से कोच राजवंशी का गहरा संबंध है। अगले सत्र में कुलेंदुनाथ ने अपने आलेख में तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन पर ज़ोर दिया।

दूसरे सत्र में स्वर्णप्रभा चेनारी ने सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने हुडम और कट्टी के पौराणिक रीति-रिवाजों के बारे में बताया। डॉ. सुजाता भंद्रा ने 'पुराण, स्त्री और लोकप्रिय संस्कृति : राजबंशी समाज में स्त्री-अस्मिता पर पुनर्विचार' विषय पर आलेख पढ़ा। बीमलाब शाह ने भी अपने आलेख प्रस्तुत किए। आपके आलेख में पश्चिमी असोम और उसके सीमावर्ती क्षेत्र में शिव पुराण विषय केंद्र में रहा। बहुत से विश्वासों और रीति-रिवाजों के बारे में (शिव पुराण से संबंधित) आपने आलेख में शामिल किया था।

तीसरे सत्र की अध्यक्षता इंद्रामादाहाब दास, अध्यक्ष, बाङ्ला विभाग, अलीपुरदुर वीमेन कॉलेज ने किया। उन्होंने अलीपुरदुर में राजवंशी के मिथकीय परंपराओं के संबंध में आलेख प्रस्तुत किया। अगले आलेख की प्रस्तुति श्री प्रह्लाद शर्मा ने अपने आलेख में राजवंशियों से संबंधित पशु-पक्षियों के बारे में जानकारी दी, विशेष रूप से असम के पिछले क्षेत्र से संबंधित जलपाईगुड़ी ज़िले के संदर्भ से।

सत्र की समाप्ति के बाद 'गोलिनी नृत्य' की प्रस्तुति चिल्लारी कॉलेज के विद्यार्थियों द्वारा किया गया। चौथे सत्र की अध्यक्षता डॉ. तनुज कुमार दे, अध्यक्ष, अंग्रेज़ी विभाग, सिलचर, असम ने की। उन्होंने राजवंशियों के समाज में (बराक घाटी) श्याम-पूजा पद्धति के बारे में बात की। विश्वजीत रे, असिस्टेंट प्रोफ़ेसर सप्तग्राम कॉलेज ने अपने आलेख में पश्चिमी असम के सत्यपीर के मिथकीय परंपराओं पर प्रकाश डाला। सुश्री मितुषश्री राय, सहायक प्रोफ़ेसर चिल्लारी कॉलेज ने अपने आलेख में आलोकझारी महामाया धम और कोच राजवंशी समाज के मिथकीय परंपराओं के बारे में बताया। आपके आलेख में लोक-परंपराओं और रीति-रिवाजों को प्रतिबिंबित किया गया था।

संगोष्ठी के पाँचवें सत्र की अध्यक्षता गीता सरकार, अध्यक्ष, असमिया विभाग, पी.बी. कॉलेज, गौरीपुर ने की। उन्होंने अपने आलेख में मशाह और मशहान के ऐतिहासिक तत्त्वों के विभिन्न दृष्टिकोणों के बारे में बताया। सुश्री पिंकी राय, अध्यक्ष, प्रबंधन अध्ययन केंद्र, चिल्लारी ने अपने आलेख में हीरा जीरा के मिथकीय परंपराओं और उनके उत्पत्ति के विभिन्न उपादानों पर प्रकाश डाला, शिशु और बिशु के जन्म के बारे में भी बताया। शिवत्व का इससे गहरा संबंध है। पापोरी राय, असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, चिल्लारी कॉलेज ने अपने आलेख में मनसा के मिथकीय परंपरा के बारे में बताया। सुजाता राय, असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, अंग्रेज़ी विभाग, मयंक आंचलिक कॉलेज ने अपने आलेख में बताया कि आलोकझरी महामाया देवी का कोच राजवंशी का संबंध है। अंतिम आलेख अनुपमा राय, असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, चिल्लारी कॉलेज ने कोच राजवंशी और सोनारी के मिथकीय परंपरा के सम्बंधों के विषय में प्रस्तुत किया।

समापन सत्र की अध्यक्षता हेसल कामकेंथग, निदेशक, निकोल, साहित्य अकादेमी ने किया। आपने अपने वक्तव्य में मिथकों और कथाओं के सैद्धांतिक पक्ष को उजागर किया। उन्होंने कोच राजवंशियों के मिथकीय साक्ष्यों, कहानियों को संरक्षित करने और इन्हें जनजाति का दर्जा दिए जाने की माँग की। समापन-सत्र के मुख्य अतिथि अश्विनी राय सरकार थे। उन्होंने अकादेमी द्वारा किए जाने वाले कार्यक्रमों और विभन्न आयोजनों की प्रशंसा की। कोच राजवंशी साहित्य सभा और चिल्लारी कॉलेज को इस कार्यक्रम के आयोजन के लिए धन्यवाद दिया।

सुश्री पिंकी राय, सचिव, कोच राजवंशी साहित्य सभा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

ओड़िया नाटक

30 सितंबर 2016, संबलपुर, ओड़िशा

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा ओडिया नाटकों पर 30 सितंबर 2016 को संबलपुर में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के साधारण सभा के सदस्य श्री कृष्णचंद्र प्रधान ने किया। क्षेत्रीय सचिव श्री गोपाल चंद्र बर्मन ने प्रतिभागियों और अतिथियों का स्वागत किया। ओड़िशा साहित्य अकादमी के सचिव श्री अश्विन कुमार मिश्र ने आरंभिक वक्तव्य दिया तथा प्रतिभागियों का परिचय प्रस्तुत किया।

साहित्य अकादेमी के ओड़िया परामर्श मंडल के सदस्य श्री द्वारकानाथ नायक ने बीज-वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि नाटक कविता नहीं है, किंतु सभी संवाद काव्य होते हैं। उन्होंने आगे कहा कि नाटक कहानी नहीं है, किंतु स्टोरी लाइन पिघलती कहानी है, नाटक उपन्यास नहीं है परंतु उपन्यास के विषयवस्तु से अधिक महत्त्वपूर्ण होता है। नाटक लोक संस्कृति का एक ठोस उपक्रम है।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री श्याम सुंदर धर ने की, उन्होंने कहा कि नाटक के इतिहास के पुनरुद्धार के लिए वैश्वीकरण को ज़िम्मेदार ठहराया लेकिन समकालीन नाटक केवल पारंपरिक नाटक को हटाने के लिए नहीं है। श्री राजीव पाणि ने 'आधुनिक ओडिया नाटकों की आंतरिक आवाज़' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया और वे माओवाद तथा आदर्शवाद से प्रभावित थे।

श्री सुबोध पटनायक ने 'ओडिशा के अपारंपरिक ओड़िया नाटक' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि संवाद महत्त्वपूर्ण नहीं होता बल्कि पारंपरिक नाटक में एक्शन ज़्यादा महत्त्वपूर्ण होता है।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्री केशरंजन प्रधान ने की। श्री सिद्धार्थ पंडा ने 'ओड़िया

नाटकों में पश्चिमी आड़िशा का योगदान' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने पश्चिमी ओड़िया नाटकों का समग्र योगदान और वर्तमान परिदृश्य का मूल्यांकन किया। शोध छात्र श्री मोहन साहू ने 'ओडिया नाटकों में प्रयोग : पश्चिमी ओड़िशा का परिप्रेक्ष्य' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री प्रधान ने मंच, नाटक, संवाद और लोक संगीत के उदाहरण के साथ समग्र अनुभवों की बात की। श्री अभिन्न राउतराय ने 'ओड़िशा के क्षेत्रीय नाटकों के नए रुझान' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश तथा कर्नाटक में भक्ति आंदोलन : एक आधुनिक दृष्टिकोण

3-4 अक्टूबर 2016, शोलापुर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा हीराचंद नेमचंद कॉलेज ऑफ़ कॉमर्स के सहयोग से 3-4 अक्टूबर 2016 को कॉलेज परिसर में 'महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश तथा कर्नाटक में भक्ति आंदोलन : एक आधुनिक दृष्टिकोण' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। प्रसिद्ध विद्वान श्री मुहम्मद आज़म ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया।

अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि तीन राज्यों में भक्ति आंदोलन पर संगोष्ठी का आयोजन करते हुए अपार प्रसन्नता हो रही है कि आंदोलन ने हमारी संस्कृति और भाषा को समृद्ध किया है। संतों का संबंध विभिन्न जातियों और अलग पृष्ठभूमि से था लेकिन उनका उद्देश्य एक था और इस एकता ने चली आ रही परंपरा को मंत्रमुग्ध किया।

हीराचंद नेमचंद कॉलेज के प्राचार्य डॉ. संतोष कोटी ने आरंभिक वक्तव्य में अकादेमी के प्रति इस आयोजन के लिए आभार व्यक्त किया। श्री मोहम्मद आज़म ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में इंगित किया कि गुलबर्गा जनपद जहाँ से कर्नाटक आरंभ होता है, दक्षिण भारत का आरंभ था जिसमें आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, तमिलनाडु, कर्नाटक और केरल शामिल थे। उन्होंने कहा कि इस स्थान को द्रविड़ देश के नाम से भी जाना जाता था और यह भक्ति का जन्म स्थान था। उन्होंने कहा कि ज़ाहिर है कि संतों की यह भक्ति द्विपक्षीय थी और इसका एक रुख़ परम तत्त्व तथा दूसरा रुख़ जीव तत्त्व को उन्मुख करने वाला था। अकादेमी के मराठी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. भालचंद्र नेमाड़े ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने कहा कि भारत में भक्ति आंदोलन संसार के सभी आंदोलनों से बड़ा था और यह विशेष रूप से अहिंसा, शांति, एकता और सांस्कृतिक पुनर्जागरण पर ज़ोर देता था। क्षेत्रीय सचिव श्री कृष्णा किंबहुने ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ. कृष्ण इंगोले ने की तथा इस सत्र का विषय था 'महाराष्ट्र में भक्ति आंदोलन का मूल्यांकन'। डॉ. अशोक बाबर और डॉ. विद्यासागर पाटंगकर ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। डॉ. बाबर ने कहा कि भारत में भक्ति आंदोलन से रचनात्मक विद्रोह आरंभ हुआ और आंदोलन के मूल्यांकन के लिए हम हमारी लोक परंपराओं, भाषाओं और बोलियों, देशी आधुनिकता, नई नैतिकता, कला, सत्य, देसीवाद और देसी वैश्वीकरण से मदद ले सकते हैं। डॉ. पाटंगकर ने कहा कि नारद भक्ति सूत्र और शांडिल्य भक्ति सूत्र मौलिक साहित्यिक कृतियाँ और महाराष्ट्र में भक्ति शास्त्र का स्रोत हैं।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता डॉ. इरेश स्वामी ने की तथा सत्र का विषय था 'कन्नड में वाचन साहित्य और आधुनिक सामाजिक व्यवस्था'। श्री विट्ठल राव गायकवाड तथा श्री बी.बी. पुजारी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। दोनों आलेखों में इस बात की ओर संकेत किया गया था कि नैतिकता के मज़बूत सामाजिक मूल्य बसावा के वाचन साहित्य का अभिन्न अंग थे।

तीसरे सत्र की अध्यक्षता श्री लक्ष्मी नारायण बोल्ली ने की तथा सत्र का विषय था— 'तेलुगु भक्ति संप्रदाय और बहुजन परंपरा'। इस सत्र में श्री व्यंकटेश देवन पल्ली और डॉ. कंचन जटकार ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। दोनों आलेखों में अत्यंत महत्त्वपूर्ण तथ्य ये था कि आंध्र प्रदेश में सारे संतों ने रचनात्मकता, कृपा, एकता, अहिंसा, ज्ञान और निःसंदेह भक्ति पर ज़ोर दिया था। यह भी महत्त्वपूर्ण है कि उन्होंने प्रचुर मात्रा में धार्मिक और आध्यात्मिक साहित्य आम बोलचाल की भाषा में जनसाधारण के लिए उपलब्ध कराए और यह महत्त्वपूर्ण सामाजिक

बायें से : संतोष कोटी, मुहम्मद आज़म, भालचंद्र नेमाड़े, के. श्रीनिवासराव एवं कृष्णा किंबहुने

योगदान था।

चौथा सत्र 'कर्नाटक में भक्ति आंदोलन और पिछड़ों की भागीदारी' पर आधारित था और सत्र की अध्यक्षता डॉ. अशोक बाबर ने की। डॉ. शोभा नायक ने अपने आलेख में कर्नाटक के दो भक्ति आंदोलनों की चर्चा की, पहला शरण भक्ति आंदोलन जो 12वीं शताब्दी में हुआ था तथा दूसरा दास भक्ति आंदोलन जो पंद्रहवीं शताब्दी में उभरा था। उन्होंने कहा कि शरण भक्ति में पिछड़ों की सहभागिता असाधारण थी। डॉ. आनंद जुनजरवाद के आलेख में भक्ति अनुभवों को दो सतहों पर जाँच करने की कोशिश की गई। पहला आंतरिक हलचल के दिग्गज, और दूसरा समय के अलग अंतराल पर विभिन्न समुदायों के बीच सामाजिक संपर्क की गाथा। उनका निष्कर्ष था कि कन्नड में भक्ति साहित्य ने अनुभव के इन दोनों क्षेत्रों को गले लगाया।

पाँचवाँ सत्र 'थंजागुर में कीर्तन परंपरा एवं मराठी में संत साहित्य' विषय पर आधारित था तथा सत्र की अध्यक्षता श्री राजशेखर शिंदे ने की। इस सत्र में श्री विवेकानंद गोपाल और श्री बी. रामचंद्र ने अपने आलेख प्रस्तुत किए जिनमें उन्होंने बताया कि संत कवियों और कीर्तन प्रस्तुतकर्ताओं ने संत साहित्य का गहन अध्ययन किया था जैसे दयानेश्वर और रामदेव का साहित्य और वे उनसे प्रभावित थे।

छठे सत्र का विषय था 'मराठी में संतों की कविता और आधुनिक मराठी कविता : अंतर्संबंध' और सत्र की अध्यक्षता डॉ. शोभा नायक ने की। डॉ. सतीश बरवे और डॉ. रणधीर शिंदे ने भी अपने आलेख प्रस्तुत किए।

प्रो. जी. एम. पवार और श्री निशिकांत ठकार ने समापन वक्तव्य दिए।

प्रकृति और साहित्य

22-23 अक्टूबर 2016, कटक, ओडिशा

साहित्य अकादेमी ने सरला साहित्य संसद, कटक के संयुक्त तत्त्वावधान में कटक, ओड़िशा में 'प्रकृति और साहित्य' विषय पर 22-23 अक्टूबर 2016 को एक संगोष्ठी का आयोजन किया। सचिव, साहित्य अकादेमी डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि मनुष्य जीवन पर्यंत प्रकृति के साथ रहता है, अतः उसकी साहित्यिक सृजन प्रकृति से ही प्रेरित होती है। साहित्य अकादेमी के ओडिया परामर्श मंडल के संयोजक श्री गौरहरि दास ने अपने प्रारंभिक वक्तव्य में स्पष्ट किया कि मनोज दास और कटक के बीच एक गहरा संबंध है। उन्होंने ओड़िया साहित्य में मनोज दास के योगदान के बारे में भी बताया। उन्होंने यह भी बताया कि प्रकृति और प्राकृतिक दृश्य के चित्रण से साहित्य को रंगों से भरपूर और संपन्न कैसे बनाना चाहिए।

बायें से : के. श्रीनिवासराव, गोपाल च. बर्मन, गौरहरि दास, मनोज दास एवं प्रभाकर स्वाईन

अपने बीज-भाषण में सुप्रसिद्ध आलोचक श्री बाबाजी चरण पटनायक ने कहा कि 'महाभारत' और 'रामायण' में नदियों के वर्णन के बिना उसका अस्तित्व संभव नहीं था। मनुष्य प्रकृति के साथ रहता है अतः वह अपने लेखन में प्रकृति को नज़रअंदाज़ कर ही नहीं सकता। सुप्रसिद्ध कथाकार मनोज दास ने इस कार्यक्रम का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि धीरे-धीरे मानवीय गतिविधियाँ और चेतना कृत्रिम और अप्राकृतिक वस्तुओं से गहराई से प्रभावित हो रही हैं, जो हमारे गद्य और पद्य सभी लेखन को प्रभावित कर रही हैं।

अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री प्रभाकर स्वाईन ने कहा कि प्रकृति के चित्रण के बिना लिखना संभव नहीं है। जो अवतरण प्रकृति से प्रेरित होते हैं वे कालजयी के तौर पर ज़्यादा स्पष्ट होते हैं। क्षेत्रीय सचिव, साहित्य अकादेमी, कोलकाता ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

दक्षिण भारतीय राज्यों में राजभाषा का कार्यान्वयन

26 अक्टूबर 2016, चेन्नै

साहित्य अकादेमी द्वारा 'दक्षिण भारतीय राज्यों में राजभाषा का कार्यान्वयन' विषयक संगोष्ठी का आयोजन भारतीय विद्या भवन, चेन्नै में 26 अक्टूबर 2016 को किया गया। विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए उपस्थित गणमान्यों का परिचय कराया। उन्होंने अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव से अनुरोध किया कि वे अतिथियों का पुष्पगुच्छ से स्वागत करें। डॉ. राव ने सम्मानित अतिथियों एवं हिंदी प्रेमियों को बधाई देते हुए स्वागत किया। उन्होंने कहा कि

साहित्य अकादेमी लोगों के बीच मौजूद भाषायी मतभेद को पाटने का काम कर रही है। उन्होंने अकादेमी द्वारा प्रकाशित तीन पत्रिकाओं, *इंडियन लिटरेचर, समकालीन भारतीय साहित्य* एवं *संस्कृत प्रतिभा* का उल्लेख किया, जिसमें समकालीन भारतीय साहित्य में मूल हिंदी में लिखित तथा अन्य भारतीय भाषाओं की कहानियाँ, कविताएँ, नाटक, साक्षात्कार एवं साहित्यिक विमर्श प्रकाशित होते हैं। दक्षिण रेलवे के मुख्य प्रबंधक एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष श्री वशिष्ठ जौहरी ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया। श्री वेद प्रकाश गौड़, निदेशक (राजभाषा) संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार ने आरंभिक वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि महात्मा गाँधी के पुत्र श्री देवदास गाँधी दक्षिण भारत में हिंदी के प्रचार-प्रसार के अग्रदूत थे। हर भाषा की अपनी एक पहचान होती है। उन्होंने स्वतः संज्ञान लेते हुए आदिवासी और अलिखित बोलियों सहित सभी भाषाओं को एक सूत्र में बाँधने के प्रयास हेतु अकादेमी की प्रशंसा की।

वरिष्ठ हिंदी विद्वान श्री पी.के. बालसुब्रह्मण्यम ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने कहा कि हिंदी की शिक्षा का सहज अभिरुचि उत्पन्न करती है। डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने धन्यवाद ज्ञापन से उद्घाटन सत्र समाप्त हुआ।

पहले सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध हिंदी विद्वान आर. शौरि राजन ने किया तथा सत्र का विषय था 'हिंदी अध्यापन और प्रशिक्षण की वर्तमान स्थिति'। इस सत्र में तीन विद्वान श्री नवनाथ कांबले, श्री एस. पार्थसारथी एवं श्री एस. बशीर सम्मिलित हुए और अपने विचार प्रस्तुत किए। श्री नवनाथ कांबले ने कहा कि हिंदी भारत में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है और देश के लोगों को एकजुट करने में गर्व होता है। दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा के अकादमिक काउंसिल के अध्यक्ष श्री पार्थसारथी ने दक्षिण भारत में हिंदी के प्रचार के लिए 1918 में प्रचार सभा की स्थापना के लिए महात्मा गाँधी की दृष्टि की बात की।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता टी.एस.के. कन्नन ने की तथा तीन विद्वानों श्री दीनानाथ सिंह, श्री नरेंद्र सिंह मेहरा और श्री शशांक दूबे ने भाग लिया। यह सत्र दक्षिण भारत में राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति पर आधारित था। प्रसिद्ध हिंदी अनुवादक श्री कन्नन ने बनारस यूनिवर्सिटी में हिंदी सीखने के अपने अनुभवों को साझा किया। उन्होंने यह भी कहा कि उन्हें इस बात पर गर्व है कि उनके हिंदी अनुवाद को तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी और तमिलनाडु के तत्कालीन मुख्यमंत्री एम. करुणानिधि द्वारा सराहा गया था। दक्षिण रेलवे के उपमुख्य प्रबंधक (राजभाषा) श्री दीनानाथ सिंह हिंदी में पत्राचार, टिप्पण लेखन आदि के बारे में बात की। श्री नरेंद्र सिंह, सहायक निदेशक राजभाषा, राजभाषा विभाग ने अकादेमी द्वारा हिंदी के विकास के लिए इस प्रकार के कार्यक्रम के आयोजन की सराहना की। श्री शशांक दुबे ने अपने सह वक्ताओं को सम्मानित किया और राजभाषा विभाग द्वारा राजभाषा के प्रचार के लिए किए जा रहे प्रयासों की सराहना की। अकादेमी के कार्याधिकारी देवेंद्र कुमार देवेश के धन्यवाद ज्ञापन से कार्यक्रम समाप्त हुआ।

बोडो लेखकों के साथ मुलाक़ात और अस्मिता

26 सितंबर 2016, गुवाहाटी, असम

साहित्य अकादेमी और सीरजी के संयुक्त तत्त्वावधान में अस्मिता और मुलाक़ात कार्यक्रम का आयोजन पांडु कॉलेज, गुवाहाटी, असम में 26 सितंबर 2016 को हुआ। कार्यक्रम के प्रारंभ में श्री मिहिर साहू, कार्यक्रम अधिकारी, साहित्य अकादेमी ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया।

पांडु कॉलेज के प्राचार्य श्री जोगेश काकती ने कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए कहा कि अकादेमी द्वारा कॉलेज में इस आयोजन के लिए हम अकादेमी के प्रति बहुत आभारी हैं। प्रसिद्ध अंग्रेज़ी लेखिका डॉ. रश्मि नर्ज़री मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुईं। उन्होंने अपने लेखकीय अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि बोडो के लेखकों एवं कवियों में अपने समाज की अभिव्यक्ति की प्रचूर संभावनाएँ हैं तथा वे अपनी रचनाओं द्वारा इस समाज को प्रतिबिंबित भी कर रहे हैं।

'मुलाक़ात' कार्यक्रम में श्री दिपन मुसाहरी ने पाँच कविताओं का पाठ किया। आपकी कविताओं में आधुनिक बोध था। युवा बोडो कवि मिलन बसुमतारी ने भी अपनी कविताओं का पाठ किया। धानूराम बसुमतारी ने अपनी कहानियों का पाठ किया। इस कार्यक्रम के माध्यम से लेखकों एवं प्रतिभागियों के बीच एक अच्छा सौहार्दपूर्ण संवाद स्थापित हुआ।

'अस्मिता' कार्यक्रम की अध्यक्षता तोरेन बोरो ने की। युवा बोडो महिला कवयित्री वर्णाली बग्लारी ने अपनी कविताओं का पाठ किया। नीला हेरी ने भी अपनी कविताओं का पाठ किया। उनका एक कविता-संग्रह और कहानियों का एक संग्रह प्रकाशित हुआ है। महिलाओं का सशक्तिकरण उनकी कहानियों का मूल विषय है। उपन्यासकार एवं कहानीकार सुनीती नर्ज़री ने भी अपनी कहानी का पाठ किया। कहानी का केंद्रीय तत्त्व बोडो समाज की महिलाओं का दुख-दर्द था।

पाठ के सत्र समाप्ति पर प्रतिभागियों ने प्रश्न पूछे और अपने विचार व्यक्त किए। विद्यासागर नर्ज़री ने अंत में धन्यवाद ज्ञापन किया।

राजभाषा सप्ताह

राजभाषा सप्ताह

14-21 सितंबर 2016, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी ने अपने प्रधान कार्यालय में 14-21 सितंबर 2014 तक "राजभाषा सप्ताह" का सफल आयोजन किया। 14 सितंबर 2016 को पूर्वाह्न में उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया। उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि नेशनल बुक ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री बल्देव भाई शर्मा थे। डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने श्री बल्देव भाई शर्मा का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करते हुए औपचारिक स्वागत के लिए सचिव को आमंत्रित किया। अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि हिंदी भाषा ने हमें आपस में जोड़कर रखा है। हिंदी आज दक्षिण और पूर्वोत्तर में भी अपनी जगह बना रही है। साहित्य अकादेमी में अनुवाद के लिए आज सबसे ज़्यादा पुरस्कार पाने वाले अहिंदी क्षेत्र के लोग हैं। उन्होंने कहा कि अकादेमी में अब हिंदी में पहले से ज़्यादा काम हो रहा है, जो सकारात्मक और उत्साहजनक है। उन्होंने आह्वान किया कि हमें हिंदी में अधिक से अधिक कार्य करना चाहिए और 100 प्रतिशत लक्ष्य को पूरा करने का प्रयास करना चाहिए। मुख्य अतिथि श्री बल्देव भाई शर्मा ने हिंदी भाषा के प्रयोग को लेकर ग्लानि मुक्त होने की अपील की। उन्होंने कहा कि अब हिंदी के बहुत से शब्दों का प्रयोग हम नहीं करते, जबकि उनका प्रयोग अहिंदी क्षेत्रों और हमारी क्षेत्रीय भाषाओं में होता रहा है। उन्होंने हिंदी को मुक्त आकाश बताया तथा कहा कि हिंदी सभी भाषाओं और तकनीक के मेल से आगे बढ़ रही है। अब हमें हिंदी के प्रति पूर्वाग्रह से मुक्त होने की ज़रूरत है। तकनीक के माध्यम से युवाओं का हिंदी में रुझान बढ़ा है।

सप्ताह भर के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएँ, कार्यशाला का आयोजन किया गया। हिंदी निबंध लेखन, वाक्, अनुवाद तथा श्रुतलेखन प्रतियोगिताओं में कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। प्रतियोगिताएँ हिंदी और हिंदीतर भाषी दो वर्गों में आयोजित की गई थीं। श्रुतलेखन प्रतियोगिता विविध कार्य कर्मचारियों के लिए थी, जबकि अन्य प्रतियोगिताएँ सभी के लिए। अकादेमी की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के द्वारा लिए गए निर्णय के अनुसार अन्य प्रतियोगिताओं में संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत दिल्ली स्थित कार्यालय के कर्मचारियों एवं अधिकारियों को भी आमंत्रित किया गया था। इनमें संगीत नाटक अकादेमी, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय तथा इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र के कर्मचारियों/अधिकारियों ने अपनी सहभागिता की। प्रतियोगिताओं के निर्णायक के रूप में श्री ब्रजेंद्र त्रिपाठी, श्री नारायण कुमार, डॉ. रविप्रकाश टेकचंदाणी तथा श्रीमती गीता जोशी को आमंत्रित किया गया था।

20 सितंबर 2016 को 'हिंदी टिप्पण एवं मसौदा लेखन' विषयक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें श्री वेदप्रकाश गौड़, राजभाषा निदेशक, संस्कृति मंत्रालय को व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया गया था। उन्होंने अकादेमीकर्मियों से हिंदी में कार्य संबंधी दिक़्क़तों के बारे में जानकारी प्राप्त की तथा उनका व्यावहारिक समाधान करते हुए सबको हिंदी टिप्पण एवं पत्राचार के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कार्यशाला के सहभागी अकादेमीकर्मियों को इसके लिए संकल्पित भी कराया कि वे अब अपना अधिकाधिक कार्य हिंदी में करेंगे।

सप्ताह का समापन समारोह 21 सितंबर 2016 को आयोजित हुआ, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में प्रतिष्ठित पत्रकार श्री राहुल देव उपस्थित थे। अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने श्री राहुल देव का संक्षिप्त परिचय देते हुए स्वागत वक्तव्य के लिए अकादेमी के सचिव डॉ. के श्रीनिवासराव को आमंत्रित किया। उन्होंने अकादेमी में राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति और राजभाषा सप्ताह के दौरान की गतिविधियों के बारे में बताया। श्री राहुल देव ने कहा कि मेरी चिंता भाषा को लेकर है, मैं भाषा के लिए सोचता हूँ। उन्होंने सभी से

बायें से : साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव एवं श्री बल्देव भाई शर्मा

अपने बच्चों और आने वाली पीढ़ी को उसकी मातृभाषा में शिक्षा देने और संवाद स्थापित करने की अपील की। उन्होंने कहा कि हमेशा सचेत होकर भाषा का प्रयोग करें तो भाषा का मान और सौंदर्य दोनों ही स्वतः बढ़ जाएगा। इस समारोह में राजभाषा सप्ताह के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेताओं को मुख्य अतिथि श्री राहुल देव तथा अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव के हाथों नक़द पुरस्कार और प्रमाण-पत्र भी प्रदान किए गए। कार्यक्रम के अंत में अकादेमी की द्वैमासिक हिंदी पत्रिका 'समकालीन भारतीय साहित्य' के अतिथि संपादक डॉ. रणजीत साहा ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन करते हुए राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति पर संक्षेप में अपने विचार रखे तथा कहा कि लोगों को अधिक से अधिक साहित्य पढ़ना चाहिए, पुस्तकों से दोस्ती ही उन्हें भाषा के प्रति सजग बना सकती है।

परिचर्चा : हिंदी की वर्तमान स्थिति - चुनौतियाँ एवं समाधान

14 सितंबर 2016, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा जी इंटरटेनमेंट इंटरप्राइज़ेज़ लि. के संयुक्त तत्त्वावधान में अकादेमी में आयोजित राजभाषा सप्ताह के अंग के रूप में 'हिंदी की वर्तमान स्थिति : चुनौतियाँ एवं समाधान' विषयक विशेष परिचर्चा का आयोजन 14 सितंबर 2016 शाम को हिंदी दिवस के अवसर पर किया गया। इसमें डॉ. सुभाष चंद्रा और प्रो. अशोक चक्रधर के बीच विमर्श हुआ। इस विशेष परिचर्चा में अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अतिथियों का औपचारिक स्वागत करते हुए कहा कि भाषा, विचार, साहित्य, संस्कृति आदि की सकारात्मकता को यदि मीडिया द्वारा प्रश्रय प्रदान किया जाए तो इससे अच्छी कोई बात नहीं हो सकती। डॉ. चंद्रा और डॉ. अशोक चक्रधर के विमर्श से यह बात सामने आई कि सबसे ज़्यादा ज़रूरत इस बात की

बायें से : डॉ. अशोक चक्रधर एवं डॉ. सुभाष चंद्रा

है कि शिक्षा का माध्यम, विशेषकर तकनीकी शिक्षा का माध्यम हिंदी को बनाया जाना चाहिए। देश को एकसूत्र में बाँधने में हिंदी की भूमिका, तकनीकी स्तर पर हिंदी की सक्षमता तथा संयुक्त राष्ट्र की भाषा के रूप में इसकी मान्यता जैसे मुद्दे भी विमर्श में उठाए गए। डॉ. चंद्रा ने कहा कि अंग्रेज़ी कभी भी इस देश की संपर्क भाषा नहीं हो सकती। देश के जन-जन की भाषा हिंदी है और यही रहेगी। डॉ. चक्रधर ने कहा कि हिंदी को अति शुद्धता की बजाय सभी भाषाओं के आम बोलचाल के शब्दों को अपनाकर ज़्यादा लोकप्रिय बनाया जा सकता है।

इस अवसर पर नोबल शांति पुरस्कार विजेता श्री कैलाश सत्यार्थी ने भी सभा को संबोधित किया। उन्होंने हिंदी भाषा के व्यवहार संबंधी अपने अनुभवों को साझा किया तथा ऐसे महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम के लिए अकादेमी को बधाई दी। कार्यक्रम का संचालन अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश द्वारा किया गया।

राजभाषा मंच

19 सितंबर 2016, नई दिल्ली

राजभाषा सप्ताह के दौरान 19 सितंबर 2016 को 'राजभाषा मंच' कार्यक्रम के अंतर्गत 'कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन की दिशाएँ' विषयक व्याख्यान का आयोजन किया गया। व्याख्यान के लिए केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान के निदेशक डॉ. जयप्रकाश कर्दम को आमंत्रित किया गया था। अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने डॉ. कर्दम का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करते हुए अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव को स्वागत भाषण के लिए आमंत्रित किया। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि भारत में हिंदी में कहीं भी संपर्क में कोई कठिनाई नहीं आती। पूर्वोत्तर में केवल हिंदी के वजह से मज़दूरों को रोज़गार मिल रहा है। उन्होंने कार्यान्वयन की समस्याओं और समाधानों के पक्ष पर डॉ. कर्दम से सुझाव देने का आग्रह किया।

डॉ. जयप्रकाश कर्दम ने कहा कि राजभाषा के आयामों पर चर्चा बहुत सी संगोष्ठियों में हुई है। 'राजभाषा कार्यान्वयन की दिशाएँ' विषय बहुत व्यापक है। यह कार्यान्वयन है संघ की राजभाषा नीति का और संघ की नीति है, हम कैसे ज़्यादा से ज़्यादा काम हिंदी में कर सकते हैं। इसके लिए तीन आधार हैं: प्रशिक्षण, अनुवाद तथा फ़ाइलों पर कार्य।

उन्होंने हिंदी प्रशिक्षण के लिए उपलब्ध विभिन्न सॉफ़्टवेयरों की जानकारी दी तथा

बायें से : डॉ. के. श्रीनिवासराव, डॉ. जय प्रकाश कर्दम एवं डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश

राजभाषा के कार्यान्वयन में अनुवाद के महत्त्व को समझाते हुए कहा कि एक अच्छा अनुवाद हो इसके लिए अनुवादकों को स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा पर आधिकारिक ज्ञान होना आवश्यक है, तथापि अनुवादक की एक सीमा होती है। फाइलों पर काम हिंदी में हो इसके लिए उन्होंने संकोच का त्याग करने और अधिक से अधिक टिप्पणियों को हिंदी में लिखने की अपील की। राजभाषा के बारे में बोलते हुए उन्होंने आगे कहा कि राजभाषा हिंदी, साहित्य मुक्त भाषा है। राजभाषा संपर्क भाषा भी नहीं है। यह दोनों के बीच की भाषा है। राजभाषा पढ़े-लिखे वर्ग की काम करने की भाषा है। उन्होंने कहा कि प्रेरणा और प्रोत्साहन की नीति राजभाषा की नीति है। राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन के लिए टूल बनाए गए है, टेक्स टू स्पीच हिंदी लिखने के लिए है। राजभाषा विभाग के प्रयासों से हिंदी में कार्यालय में काम बढ़ रहे हैं और अब बैंकों में पासबुक की प्रविष्टयाँ हिंदी में भी हो रही हैं।

हिंदी दिवस समारोह

19 सितंबर 2016, मुंबई

क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा हिंदी दिवस के अवसर पर अपने कर्मचारियों के बीच कई प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इस अवसर पर इलेक्ट्रॉनिक्स कॉर्पोरेशन ऑफ़ इंडिया के सहायक निदेशक श्री विनोद कुमार शर्मा को आमंत्रित किया गया। श्री शर्मा ने हिंदी में कार्य करने की प्रेरणा दी और कहा कि हिंदी ही पूरे भारत को एक सूत्र में बाँधने में सक्षम है। उन्होंने विजयी प्रतिभागियों में पारितोषिक वितरित किए।

हिंदी दिवस समारोह

19 सितंबर 2016, कोलकाता

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकात द्वारा हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया जिसमें कार्यालय के सभी सहकर्मियों ने बहुत उत्साह के साथ भाग लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता क्षेत्रीय सचिव डॉ. गोपाल च. बर्मन ने की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राजभाषा कार्यान्वयन कार्यालय के अधिकारी श्री शिवनारायण सरोज थे।

हिंदी दिवस समारोह

20 सितंबर 2016, बेंगलूरु

दिनांक 20 सितंबर 2016 को साहित्य अकादेमी दक्षिण क्षेत्र बेंगलूरु के परिसर में हिंदी दिवस समारोह का आयोजन हुआ जो काफी उत्साहवर्द्धक एवं प्रभावकारी रहा। इस हिंदी दिवस के अवसर पर अकादेमी के कर्मचारियों के लिए अनेक प्रतियोगिओं का अयोजन किया गया जिसमें कर्मचारियों ने बहुत ही निष्ठा एवं उत्साह से बढ़-चढ़कर प्रतियोगिता में भाग लिया। निबंध लेखन, हिंदी अनुवाद एवं सुलेख प्रतियोगिताओं में प्रथम एवं द्वितीय स्थान पाने वाले प्रतिभागियों को मुख्य अतिथि द्वारा नगद पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। इस पावन अवसर पर हिंदी के विद्वान एवं अनुवाद विशेषज्ञ डॉ. रंजीत कुमार को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था। उनका राजभाषा हिंदी एवं कार्यालयीन हिंदी पर व्याख्यान काफी प्रेरणादायी एवं ज्ञानवर्द्धक था। इस समारोह की अध्यक्षता क्षेत्रीय सचिव एस.पी महालिंगेश्वर एवं हिंदी प्रतियोगिताओं का संचालन कार्यक्रम अधिकारी के.पी. राधाकृष्णन ने किया।

हिंदी दिवस समारोह

20 सितंबर 2016, चेन्नै

अकादेमी के उपक्षेत्रीय कार्यालय चेन्नै द्वारा कार्यालय परिसर में 20 सितंबर 2016 को हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रसिद्ध हिंदी विद्वान शौरिराजन को आमंत्रित किया गया। कार्यालय प्रभारी श्री ए. एस. इलंगोवन ने अतिथि एवं कार्यालय के सहयोगियों का स्वागत किया।

श्री शौरिराजन ने 'हिंदी राजभाषा के रूप में' पर अपना व्याख्यान देते हुए रोज़मर्रा के कामकाज में हिंदी के प्रयोग पर बल दिया। इस अवसर पर कार्यालय के कर्मचारियों के बीच विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया तथा विजेताओं को आमंत्रित अतिथि द्वारा पुरस्कृत किया गया। श्री इलंगोवन ने श्री शौरिराजन का आभार व्यक्त किया और विजेताओं को बधाई दी।

परिसंवाद

स्वातंत्र्योत्तर भारतीय नेपाली उपन्यासों की प्रवृत्तियाँ

10 सितंबर 2016, दार्जीलिङ

साहित्य अकादेमी द्वारा नेपाली साहित्य सम्मेलन के सहयोग से 'स्वातंत्र्योत्तर भारतीय नेपाली उपन्यासों की प्रवृत्तियाँ' विषय पर परिसंवाद का आयोजन 10 सितंबर 2016 को सम्मेलन भवन, दार्जीलिङ में किया गया। साहित्य अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने अतिथियों का स्वागत किया और अकादेमी की गतिविधियों के बारे में संक्षेप में बताया। साहित्य अकादेमी के नेपाली परामर्श मंडल के संयोजक श्री प्रेम प्रधान ने परिसंवाद के विषय के बारे में बात की। एक उपन्यासकार के रूप में उन्होंने नेपाली उपन्यासों पर वैश्वीकरण के प्रभाव पर प्रकाश डाला। नेपाली साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष श्री कर्ण थामी ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की तथा नेपाली साहित्य सम्मेलन के सचिव श्री भक्तराज सुनुवार ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री हस्त नैचाली ने की जबकि डॉ. ममता लामा एवं श्री उदय क्षेत्री ने 'स्वातंत्र्योत्तर भारतीय नेपाली उपन्यास का रुझान' तथा 'नेपाली उपन्यासों में सामाजिक चित्रण, आज रमिता छ' उपन्यास के विशेष संदर्भ में' विषय पर क्रमशः अपने आलेख प्रस्तुत किए। दूसरे सत्र की अध्यक्षता नेपाली के प्रसिद्ध आलोचक डॉ. जीवन नामदुंग ने की। प्रो. तेजमान बरायली, प्रो. मेहरमान सुब्बा एवं प्रो. वीनेश प्रधान ने क्रमशः साहित्य के प्रगतिशील, मनोवैज्ञानिक और महिला विमर्श के विशेष संदर्भ में अपने आलेख प्रस्तुत किए।

पूर्वोत्तर लघु पत्रिका उत्सव 2016

11 सितंबर 2016, अगरतला, त्रिपुरा

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय एवं सार्क और संस्कृति मंत्रालय के संयुक्त तत्त्वावधान में एक दिवसीय परिसंवाद में कवियों एवं संपादकों का सम्मिलन का आयोजन पूर्वोत्तर लघु पत्रिका 2016 के अंतर्गत 11 सितंबर 2016 को अगरतला प्रेस क्लब के नृपन चक्रवर्ती हॉल में किया गया। मानिक सरकार, माननीय मुख्यमंत्री, त्रिपुरा ने उत्सव का उद्घाटन किया। भानूलाल साहा, सूचना और सांस्कृतिक मामलों के मंत्री, त्रिपुरा सरकार कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। श्री गोपाल च. बर्मन, क्षेत्रीय सचिव, कोलकाता और संदीप दत्ता प्रसिद्ध संग्रहक, लघु पत्रिका विशेष अतिथि थे। देवब्रत देवराय, प्रतिष्ठित लेखक और संपादक 'मुखोयाब' श्री डेबराय विशिष्ट अतिथि थे। त्रिपुरा के प्रतिष्ठित कवि चंद्रकांता मोरलिंग ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

उत्सव के आरंभ में देवब्रत देवराय ने उद्घाटन भाषण दिया। सांस्कृतिक मामलों के राज्यमंत्री श्री भानूलाल शाह ने कहा कि लघु पत्रिका एक ऐसा मंच हैं जो ख़राब परिस्थितियों में भी एक प्रकार का साहित्यिक दृष्टिकोण पैदा करती हैं। मानिक सरकार, माननीय मुख्यमंत्री त्रिपुरा, ने त्रिपुरा में पहली बार आयोजित होने वाले कार्यक्रम के लिए आयोजकों के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि लघु पत्रिका के प्रकाशन में वित्तीय सहायता एक आवश्यक कारक है। पत्रिका का आकार महत्त्वपूर्ण नहीं है बल्कि उसमें चयनित विषय और गुणवत्तापूर्ण लेखन ही उसका आधार होता है।

कार्यक्रम तीन भागों में विभक्त था। प्रथम, 'संपादकों से मिलन' नामक एक दिवसीय परिसंवाद आयोजित किया गया। मधुमंगल विश्वास, संपादक 'डोर', पश्चिम बंगाल, लेखक श्यामलाल भट्टाचार्य, 'रसमलय्या' के संपादक अमलकांति चंदा और 'किरात भूमि' के संपादक मंटु दास ने इस संवाद कार्यक्रम में भाग लिया। उन्होंने लघु पत्रिकाओं की समस्याओं के बारे में बात की और कहा कि इस पत्रिका के प्रकाशन में आने वाली बाधाओं को पहचाना जाए और उसे दूर किया जाए। इस सत्र में संदीप दत्ता, प्रतिष्ठित संग्रहक लिटिल मैग्ज़ीन, कोलकाता ने श्रोताओं को संबोधित किया। दूसरे सत्र में साहित्य

बायें से : प्रेम प्रधान, डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश, भक्त सुनुवार एवं कर्ण थामी

अकादेमी ने 'लेखक से मिलिए' नामक एक दिवसीय परिसंवाद का आयोजन किया। तन्मय बीर, कोलकाता और हराधान बैरागी, अप्पन घसू देवनाथ, रतन आचार्यजी और शेफाली देववर्मा ने स्वरचित कविताओं का पाठ किया और कविता के संदर्भ में चर्चा हुई। अशोक नंद रायवर्द्धन ने इस सत्र में श्रोताओं को संबोधित किया।

उत्सव में लिटिल मैग्ज़ीन के वरिष्ठ संपादक ने सबको बधाई दी। जोनकी के पीयूष राउत, नंदीमुख के स्वप्न दासगुप्त, मीनकू के बिमलेंद्र चक्रवर्ती, मानबी के कल्याणी भट्टाचार्यजी, जलजा के संतोष राय, कीर्ति भूमि के मंटू दास, जारा के सुनील देबवर्मा कार्यक्रम में उपस्थित थे।

कार्यक्रम की समाप्ति पर रवींद्र संगीत की प्रतिष्ठित गायिका सुश्री राबिया अख़्तर और पीनाकपानी देव ने रवींद्र संगीत की प्रस्तुति दी और सम्मान के साथ टैगोर की कविताओं का पाठ किया। कार्यक्रम की समाप्ति पर राज्य की प्रतिष्ठित गायिका श्रीमती स्वर्णिमा रॉय ने गायन की प्रस्तुति की।

गुजरात में सिंधी नाट्य लेखन

11 सितंबर 2016, बडोदरा

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई ने वडोदरा युनाइटेड सिंधी यूथ के सहयोग से 'गुजरात में नाट्यलेखन' विषयक परिसंवाद का आयोजन हरिसेवा स्कूल के सेमिनार ऑडिटोरियम, वडोदरा में 11 सितंबर 2016 को किया।

क्षेत्रीय सचिव श्री कृष्णा किंबहुने ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि वर्ष 1980 में सिंधी नाट्य लेखन की जन्मशतवार्षिकी मनाई गई, सिंधी नाट्य लेखन का इतिहास अब 136 वर्षों का हो गया। सिंधी ड्रामा का विकास स्वतंत्र नाटक, एकांकी तथा यूरोपी नाटकों के अनुवाद के रूप में विकसित हो गया है।

उद्घाटन वक्तव्य में श्री नामदेव ताराचंदानी ने कहा कि अच्छे नाटक की पहचान यह है कि उसे मंचित करते समय ड्रामा न लगे बल्कि वास्तविक लगे। इसमें गंभीरता कुछ अंश तक ही होनी चाहिए।

अकादेमी के सिंधी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. प्रेम प्रकाश ने बीज वक्तव्य देते हुए कहा कि जहाँ तक थियेटर का सवाल है सामान्यतः गुजरात और विशेष रूप से वडोदरा बहुत सक्रिय रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि नाट्य लेखन व्यक्तिगत क्रिया है जबकि नाट्य मंचन टीम वर्क है। वडोदरा सिंधी यूथ के श्री मुरली भोजवानी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र में श्री महेश खिलवाणी ने अपना आलेख प्रस्तुत किया। उनके आलेख का विषय था– 'सिंधी नाटकों का 21वीं सदी में गुजरात में प्रकाशन'। सुश्री चंपा चेतनाणी ने अपना एकांकी प्रस्तुत किया। श्री वासुदेव बुदनाणी ने नाटक 'हैप्पी' तथा श्री हार्दिक तेलवानी ने 'हे मुंझा भगवान' नाटक का पाठ किया। सत्र की अध्यक्षता श्री हूंदराज बलवाणी ने की।

दूसरे सत्र में श्री जगदीश शहदादपुरी ने 21वीं सदी में गुजरात में सिंधी नाटकों का मंचन विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री गुरुदास आहुजा ने 'घर का सफ़र', श्री महेश खिलवाणी ने 'संगत' और श्री मुरली भोजवानी ने 'अंधविश्वास' नाटक का पाठ किया तथा सत्र की अध्यक्षता श्री नामदेव ताराचंदाणी ने की।

अंतिम सत्र की अध्यक्षता सुश्री चंपा चेतनाणी ने की तथा श्री जगदीश शहदादपुरी, श्री हूंदराज बलवाणी और श्री नामदेव ताराचंदाणी ने अपने नाटकों का पाठ किया।

ए. एस. ज्ञानसंबंधन जन्मशतवार्षिकी

16 सितंबर 2016, पोल्लाची

साहित्य अकादेमी के उपक्षेत्रीय कार्यालय चेन्नै द्वारा एन.जी.एम. कॉलेज, पोल्लाची के सहयोग से प्रसिद्ध तमिळ आलोचक, विद्वान ए. एस. ज्ञानसंबंधन जन्मशतवार्षिकी परिसंवाद का आयोजन कॉलेज परिसर में 16 सितंबर 2016 को किया गया। साहित्य अकादेमी के प्रभारी श्री ए. एस. इलंगोवन ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। प्रसिद्ध तमिळ कवि एवं विद्वान श्री सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में 'पेरिया पुराणम्', 'कंब रामायणम्', 'तिरुवसगम्' एवं साहित्यिक आलोचना पर अपने कार्यों से उदाहरण के साथ विद्वानों के बौद्धिक कौशल को रेखांकित किया। अकादेमी के तमिळ परामर्श मंडल के संयोजक के. नाच्चिमुथु ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि ज्ञानसंबंधन ख्यातिप्राप्त आलोचक थे और वे मूल पाठ के विभिन्न संस्करणों को विद्वतापूर्ण ढंग से परिभाषित करते थे। कॉलेज के अध्यक्ष श्री बी. के. कृष्णराज वनावरयार, उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि थे। उन्होंने कॉलेज परिसर में इस महत्त्वपूर्ण आयोजन के लिए अकादेमी के प्रति आभार व्यक्त किया। कॉलेज के प्राचार्य श्री पी.एम. पलानिसामी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री अमुधन ने की। उन्होंने ज्ञानसंबंधन की तुलना वल्लार, मनिक्कवसागर एवं कंबन से की। श्री सी. सेतुपति ने 'कंब रामायण' के विभिन्न टिप्पणियों पर एक तीक्ष्ण विश्लेषण प्रस्तुत किया। उन्होंने 'कंब रामायण' की साहित्यिक श्रेष्ठता को बढ़ावा देने में कराईकुड़ी कंबन कष्डम की भूमिका का उल्लेख किया। श्री आई. के. सुब्रह्मण्यम ने रावण की महिमा और पतन के बारे में बात की। श्री पी. आनंद कुमार ने कहा कि ज्ञानसंबंधन द्वारा आधुनिक साहित्यिक आलोचना के आलोक में 'कंब रामायण' के पात्रों का विश्लेषण किया गया।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्री सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम ने की। उन्होंने कहा कि ज्ञानसंबंधन का 'पेरिया पुराणम् : एक अध्ययन' पेरिया पुराणम् के द्वारा तमिळ समाज को कष्टों से राहत देने के लिए था और उसके बाद एक

पुनर्जीवित भव्य जीवन पैदा होता है। श्री आर. कामारासु ने ज्ञनसंबंधन के साहित्यिक कला और उनके द्वारा प्रस्तुत महत्त्वपूर्ण सिद्धांत पर एक सुंदर वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि ज्ञनसंबंधन पाश्चात्य सिद्धांतों को आगे लाए जिसे भारतीय और तमिळ संदर्भ के लिए तमिळ आलोचना को पुनर्परिभाषित किया। श्री एम.एम. मुथैया का वक्तव्य 'ज्ञनसंबंधन के साहित्यिक भाषण की शैली' पर केंद्रित था। उनका भाषण तेज, अच्छे उच्चारण के साथ मिलकर विचारों के मुक्त प्रवाह के साथ स्पष्ट था।

समापन सत्र की अध्यक्षता श्री पी.एम. पलनिसामी ने किया। तमिळ यूनिवर्सिटी के पूर्व कुलपति ई. सुंदरमूर्ति ने ज्ञनसंबंधन के आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि की बात की। कॉलेज के तमिळ विभाग के अध्यक्ष श्री एस. मुथुवेल ने साहित्य अकादेमी के प्रति इस आयोजन के लिए आभार व्यक्त किया।

आज का पूर्वोत्तर साहित्य एवं उत्तर-पूर्वी कवि सम्मिलन

23 सितंबर 2016, अजमेर

साहित्य अकादेमी द्वारा ऑक्टेव 2016 के दौरान पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, उदयपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर में 'आज का पूर्वोत्तर साहित्य' विषयक परिसंवाद एवं 'उत्तर-पूर्वी कवि सम्मिलन' का आयोजन किया गया।

समारोह का उद्घाटन प्रख्यात असमिया साहित्यकार डॉ. लक्ष्मीनंदन बोरा ने किया। उन्होंने अपने भाषण में पूर्वोत्तर के साहित्य और साहित्यकारों के साथ अन्य भाषा क्षेत्रों के साहित्यकारों को जोड़ने के लिए किए जा रहे अकादेमी के प्रयासों की सराहना की तथा भाषाओं के समक्ष आ रही चुनौतियों के बारे में बात की। आरंभ में अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने स्वागत

परिसंवाद एवं कवि सम्मिलन के प्रतिभागियों का ग्रुप फ़ोटो

भाषण में पूर्वोत्तर की भाषा समृद्धि को रेखांकित करते हुए अकादेमी द्वारा उन भाषाओं के साहित्य को सामने लाने के लिए किए जाने वाले प्रयासों की संक्षिप्त चर्चा की। उद्घाटन सह उत्तर-पूर्वी कवि सम्मिलन सत्र की अध्यक्षता करते हुए राजस्थानी एवं हिंदी के प्रतिष्ठित कवि डॉ. चंद्रप्रकाश देवल ने कहा कि दर्द और संवेदना से परिचय के लिए भाषा कभी आड़े नहीं आती। उन्होंने 'तितली का न आना' एवं 'जगह' शीर्षक अपनी कविताओं का पाठ भी किया।

इस अवसर पर पूर्वोत्तर से आए श्री विपुल ज्योति सैकिया (असमिया), श्री गोपीनाथ ब्रह्म (बोडो), श्री तारो सिंदिक (हिंदी), श्री क्षेत्री राजेन (मणिपुरी), श्री दीपक दोले (मिसिंग), श्रीमती क्रैरी मोग चौधरी (मोग) तथा श्री वीरभद्र कार्कीढोली (नेपाली) ने अपनी कविताओं का पाठ किया। कवियों ने मूल भाषा में अपनी कविता के साथ-साथ उनके हिंदी/अंग्रेज़ी अनुवादों की प्रस्तुति भी की। सत्रांत में प्रो. आशीष भटनागर ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

भोजनोपरांत कॉकबरोक भाषा के प्रतिष्ठित विद्वान तथा अकादेमी के भाषा सम्मान से विभूषित श्री चंद्रकांत मुरासिंह की अध्यक्षता में 'आज का पूर्वोत्तर साहित्य' विषयक परिसंवाद का आयोजन हुआ। इसमें आमंत्रित विद्वानों श्री अरिंदम शर्मा, श्री फुकन बसुमतारी, प्रो. अनंत कुमार नाथ, श्री इरोम रवींद्र सिंह तथा श्री रुद्र बराल ने क्रमशः असमिया, बोडो, हिंदी, मणिपुरी एवं नेपाली भाषाओं में रचे जा रहे पूर्वोत्तर के साहित्य के बारे में बताया। वक्ताओं ने वाचिक और लोक साहित्य की परंपराओं से संवलित पूर्वोत्तर के साहित्य पर वर्तमान भूमंडलीकरण के प्रभावों से आनेवाले बदलावों को रेखांकित किया।

थुंचथ एळुथाचन

26 सितंबर 2016, तिरुर

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु द्वारा थुंचथ एळुथाचन मलयाळम् यूनिवर्सिटी के सहयोग से यूनिवर्सिटी सभागार में 26 सितंबर 2016 को एक परिसंवाद का आयोजन किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु के श्री राधाकृष्णन ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। साहित्य अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के संयोजक श्री सी. राधाकृष्णन ने कहा कि सोशल मीडिया थुंचथ एळुथाचन के

जन्म, जीवन एवं लेखन के बारे में ग़लत जानकारी फैला रहे हैं। इसे सुधारा जाना चाहिए। स्कूल और कॉलेज के पाठ्यपुस्तकों में परिवर्तन बहुत आवश्यक है। यह ग़लत धारणा है कि मलयाळम् अक्षरों को मिशनरियों द्वारा लोकप्रिय किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि मलयाळम् भाषा के पिता एझुथाचन की क़ीमत पर अनुचित क्रेडिट देने की ज़रूरत नहीं है।

मलयाळम् यूनिवर्सिटी के कुलपति श्री के. जयकुमार ने परिसंवाद का उद्घाटन करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय एझुथाचन पर काम करने की दिशा में एक नई सोच दे सकता है। उन्होंने कहा कि एझुथाचन पर एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी की योजना बनाई जानी चाहिए। इस दिशा में पहले से कार्य किया जा रहा है।

श्री अलंकोडे लीलाकृष्णन ने अपने बीज वक्तव्य में कहा कि यह एझुथाचन थे जिन्होंने निम्न जाति के लोगों के लिए भाषा के द्वार खोले। एझुथाचन दरबारी गायक नहीं थे। वे 'सांस्कृतिक पिता' थे जिन्होंने दूसरे स्थानों पर केरल संस्कृति का परिचय कराया। श्रीमती टी. अनिता कुमारी जो विशिष्ठ अतिथि के रूप में शामिल हुई थीं, ने कहा कि एझुथाचन 'शब्दों के सागर' थे।

भोजनावकाश के बाद के सत्र की अध्यक्षता डॉ. एम. आर. राघव ने की। उन्होंने कहा कि यदि हम एझुथाचन के लेखन का सावधानी से अध्ययन करें तो हमें पता चलेगा कि वे अपने समय के समाज की रीतियों और कर्तव्यों से अच्छी तरह वाक़िफ़ थे। डॉ. के.पी. मोहनन का विषय था 'एझुथाचन के लेखन में मानवीय संबंध'। उन्होंने कहा कि लेखक का पहला कर्तव्य मानव जीवन की समझ रखना है। यहाँ तक कि अनुवाद में एझुथाचन ने अपने व्यक्तित्व को बनाए रखा। डॉ. गीता का विषय था 'अध्यात्म रामायण'। उन्होंने अहल्या, सुर्पणखा, सीता और तारा के व्यवहार को विस्तार से बताया।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध कवि देशमंगलम रामकृष्णन ने की। उन्होंने एझुथाचन के हरिनाम कीर्तनम् के बारे में बात की। श्री एम. श्रीनाथ का विषय था 'एझुथाचन के लेखन का प्रभाव'। उन्होंने बताया कि एझुथाचन की जीवनियाँ किस प्रकार दूसरों से भिन्न हैं। श्री विजु नारायणगडी का विषय था 'अध्यात्म रामायण की समकालीनता'। उन्होंने कहा कि अध्यात्म रामायण की यात्रा व्यक्ति से समाज की तरफ़ है। श्री आनंद कवलम का विषय था 'एझुथाचन का समय और दृष्टि'। परिसंवाद में भारी संख्या में छात्र, शोध छात्र, लेखक एवं कवि उपस्थित थे।

सी. राधाकृष्णन (माइक पर), मलयाळम् यूनिवर्सिटी के कुलपति श्री के. जयकुमार एवं अन्य

मोती प्रकाश : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1 अक्टूबर 2016, मुंबई

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय ने 'मोती प्रकाश : व्यक्तित्व एवं कृतित्व' विषय पर 1 अक्टूबर 2016 को अकादेमी के सभागार में परिसंवाद का आयोजन किया।

क्षेत्रीय सचिव श्री कृष्ण किंबहुने ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया तथा अकादेमी की गतिविधियों से अवगत कराया। श्री वासदेव मोही ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में कहा कि मोती प्रकाश एक सर्वप्रिय, उदार हृदय कवि थे। उन्होंने दुबई में अध्यापक के रूप में मोती प्रकाश के साथ बिताए दिनों को याद करते हुए उनके कुशल प्रशासकीय क्षमता की सराहना की। उन्होंने आगे कहा कि उनके लेखन में सिंध के मिट्टी की ख़ुश्बू झलकती है। श्री मोही ने मोती प्रकाश की पत्नी कला प्रकाश का स्वागत करते हुए कहा कि कला प्रकाश भी एक प्रसिद्ध सिंधी लेखिका हैं तथा पति-पत्नि दोनों को अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित होने पर गर्व है। अकादेमी के सिंधी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. प्रेम प्रकाश ने इस बात का खेद व्यक्त किया कि उन्हें मोती प्रकाश का ज़्यादा सान्निध्य नहीं मिला। उन्होंने आगे कहा कि मोती प्रकाश कम लिखने लेकिन उत्कृष्ट लेखन पर विश्वास करते थे। प्रेम प्रकाश ने मोती प्रकाश की कुछ नज़्मों, ग़ज़लों का पाठ भी किया। उन्होंने मोती प्रकाश के लिखे कुछ नाटकों पर भी प्रकाश डाला।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता मशहूर सिंधी ग़ज़लकार श्री लक्ष्मण दुबे ने की तथा श्री मोहन गेहानी ने मोती प्रकाश के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर अपना लेख प्रस्तुत करते हुए कहा कि किस प्रकार मोती प्रकाश के लेखन ने सिंधी अदब व साहित्य को प्रभावित किया। श्री वासदेव मोही ने प्रेम प्रकाश की पुस्तक 'आओ ता चोरयूँ चुँग'

श्री प्रेम प्रकाश बीज-वक्तव्य देते हुए, साथ में श्री वासुदेव मोही

(कविता संग्रह) पर समीक्षात्मक लेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि संग्रह में सम्मिलित कविताएँ सुकून और ताज़गी का अहसास देती हैं। श्री खीमण मूलाणी ने मोती प्रकाश की पुस्तक 'तुंझे गलिह्यू जूँ गलिह्यू' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। सुश्री आशा रंगवाणी ने 'से सभ सध्यूम साह सीन' (यात्रा-वृत्तांत) पर अपने विचार व्यक्त किए। प्रस्तुत पुस्तक पर मोती प्रकाश को अकादेमी पुरस्कार दिया गया था। सुश्री मीना रूपचंदानी ने 'वक़्त एवं विचार, सिंधी शेर में स्त्रियाँ जो चिन्तून' विषय पर अपने विचार व्यक्त किए।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्री मोहन गेहाणी ने की और इस बात पर ज़ोर दिया कि मोती प्रकाश के लेखन पर और शोध की आवश्यकता है। श्री लक्ष्मण दुबे ने मोती प्रकाश के काव्य-संग्रह 'चिनिंगा विच चोले' जिसमें नज़्में, ग़ज़लें, बैत शामिल हैं, पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि किस प्रकार मोती प्रकाश ने सिंधी नज़्मों और ग़ज़लों को आधुनिक कविता में परिवर्तित किया। सुश्री संध्या कुंदनाणी ने मोती प्रकाश के दो नाटकों 'रात हिक तूफ़ान जी' और 'पर्दे अज्ञान, पर्दे पुयियान' की समीक्षा की और कहा कि उनके नाटकों में नकारात्मक पात्र हैं जो हमेशा झूठ बोलते हैं। सुश्री शोभा लाक्षाणी ने मोती प्रकाश की आत्मकथा के बारे में बात की। मोती प्रकाश के पुत्र श्रीकांत सदफ़ ने और मोती प्रकाश के क़रीबी सुश्री आशा चाँद ने अपनी यादों को साझा किया।

इस अवसर पर मोती प्रकाश पर अकादेमी द्वारा निर्मित एवं कमल नाथाणी द्वारा निर्देशित वृत्तचित्र का प्रदर्शन भी किया गया। श्री प्रेम प्रकाश ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

उर्दू साहित्य में पंजाब के लेखकों का योगदान

4 अक्टूबर 2016, मालेरकोटला

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली एवं पंजाब उर्दू अकादमी के संयुक्त तत्त्वावधान में 4 अक्तूबर 2016 को पंजाब उर्दू अकादेमी सभागार, मालेरकोटला में 'उर्दू साहित्य में पंजाब के लेखकों का योगदान' शीर्षक परिसंवाद का आयोजन किया गया।

बीज-वक्तव्य देते हुए उर्दू के वरिष्ठ लेखक प्रो. डॉक्टर नरेश ने पंजाब के विभाजन को उर्दू भाषा व साहित्य के लिए एक बड़ा नुक़सान बताते हुए कहा कि उर्दू अदब की परंपरा और इतिहास में पंजाब के लेखकों ने जो मुख्य भूमिका निभाई उसे कभी फ़रामोश नहीं किया जा सकता। उन्होंने कहा कि पंजाब ही था जिसने अल्लामा इक़बाल, मंटो और कृष्ण चंदर जैसे विश्वविख्यात लेखक पैदा किए। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पद्मश्री मोहम्मद इज़हार आलम ने इस अवसर पर कहा कि उर्दू की प्रोन्नति और विकास के लिए ख़ुद उर्दू वालों को आगे आना

बायें से : पद्मश्री मोहम्मद इज़हार आलम (माइक पर), डॉ. नदीम अहमद, पंजाब उर्दू अकादमी के सचिव प्रो. मंज़ूर हसन एवं डॉ. नरेश

चाहिए। कार्यक्रम के आरंभ में पंजाब उर्दू अकादमी के सचिव प्रो. मंज़ूर हसन ने सभी मेहमानों का स्वागत किया और साहित्य अकादेमी के सहयोग से पंजाब में पहली बार उर्दू के कार्यक्रम आयोजित किए जाने पर अपनी प्रसन्नता जताई। उन्होंने साहित्य अकादेमी से आगे भी ऐसे कार्यक्रम आयोजित करने की अपील की। सत्र का संचालन डॉ. नदीम अहमद ने की।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता प्रो. महमूद आलम ने की जबकि डॉ. अली अब्बास और डॉ. रुबीना शबनम ने आलेख क्रमशः 'उर्दू शायरी में पंजाब के सिख कवियों का योगदान' एवं 'प्रेमवार बर्टनी रूमान व हक़ीक़त का संगम' पढ़े। संचालन एम. अनवार अंजुम ने की। तीसरे सत्र की अध्यक्षता प्रिंसिपल मोहम्मद इसरार निज़ामी ने की। इस सत्र में डॉ. निगार अज़ीम ने 'मंटो के अफ़सानों का विश्लेषण' एवं डॉ. शमा अफ़रोज़ ज़ैदी ने 'फ़िक्र तौंसवी और तंज़ व मिज़ाह' शीर्षक से अपने आलेख प्रस्तुत किए। संचालन मोहम्मद दिलशाद ने की।

परिसंवाद के अंतिम सत्र की अध्यक्षता श्री मोहम्मद असरार ने की जिसमें डॉ. नदीम अहमद ने 'उर्दू गीत का सफ़र : पंजाब के हवाले से' एवं प्रो. मंज़ूर हसन ने 'पंजाब में तंज़ व मिज़ाह' शीर्षक आलेख पढ़े। संचालन डॉ. सलीम ज़ुबैरी ने की। परिसंवाद के अंत में साहित्य अकादेमी के प्रकाशन सहायक श्री मोहम्मद मूसा रज़ा ने अकादेमी की ओर से पंजाब उर्दू अकादमी समेत सभी अतिथियों का धन्यवाद किया।

समकालीन मणिपुरी साहित्य में लोक कथा वाचन

5 अक्टूबर 2016, सिलचर, असम

साहित्य अकादेमी ने मणिपुरी विभाग, असम विश्वविद्यालय, सिलचर के संयुक्त तत्त्वावधान में 'समकालीन मणिपुरी साहित्य में लोक कथा वाचन' विषय पर एकदिवसीय परिसंवाद का आयोजन 5 अक्टूबर 2016 को विपिन चंद्र पॉल सेमिनार हॉल, असम विश्वविद्यालय, सिलचर में किया।

'समकालीन मणिपुरी साहित्य में लोक कथा वाचन' परिसंवाद के प्रतिभागी

साहित्य अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. एच. बिहारी सिंह ने इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। असम विश्वविद्यालय, सिलचर के कुलपति (प्रभारी) प्रो. एन. एन. पांडेय उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि थे। साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता के सहायक संपादक श्री गौतम पॉल ने अतिथियों का स्वागत किया।

अपने वक्तव्य में श्री पॉल ने लोक कथाओं और उसके समकालीन जीवन शैली की विशेषताओं के बारे में बताया।

असम विश्वविद्यालय, सिलचर के कुलपति (प्रभारी) प्रो. एन.एन. पांडेय ने लोक कथाओं की महत्ता बताई। उन्होंने यह भी कहा कि इस तरह के परिसंवाद विद्यार्थियों को सीखने में सहायता करते हैं, विशेषकर मणिपुरी विभाग के विद्यार्थियों को।

डॉ. एच. बिहारी सिंह, संयोजक, मणिपुरी परामर्श मंडल ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में लोक साहित्य और लोक कथाओं के बहुत अच्छी शैली के बारे में बताया।

उन्होंने लोक कथाओं और लोक कथा वाचन के अनौपचारिक शिक्षा की ओर इंगित किया। उन्होंने यह भी कहा कि लोक कथा वाचन का बहुत ही दार्शनिक दृष्टिकोण है।

मणिपुरी विभाग, असम विश्वविद्यालय, सिलचर के प्रोफ़ेसर एम. राजेन्द्र सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन किया। असम विश्वविद्यालय के अनेक महाविद्यालयों के विद्वानों/ साहित्यकारों ने इस कार्यक्रम में सहभागिता की।

कोंकणी पटलेखन में साहित्यिक सार

7 अक्टूबर 2016, गोवा

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा गोवा यूनिवर्सिटी और अखिल भारतीय कोंकणी परिषद् के सहयोग से कोंकणी पटलेखन में साहित्यिक सार विषय पर 7 अक्टूबर 2016 को गोवा में एक परिसंवाद का आयोजन किया गया। प्रो. प्रकाश पर्णिकर ने अतिथियों का स्वागत किया। गोवा यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. वरुण साहनी ने परिसंवाद का उद्घाटन किया। अकादेमी के कोंकणी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. तानाजी हर्लंकर ने आरंभिक वक्तव्य दिए। अखिल भारतीय कोंकणी परिषद् के अध्यक्ष श्री

बायें से : श्री दामोदर मावजो एवं श्री राजदीप नायक

गोकुल दास मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। श्री दौलत राव हवलदार, श्री दामोदर मावजो और श्री शेष पसंदीकर ने विभिन्न सत्रों की अध्यक्षता की। श्री जीतेंद्र सीकेरकर, श्री राजेश भोंसले, श्री दिनेश भोंसले, श्री राजदीप नाइक, श्री राजे पवार और श्री मुकेश घटवाल ने विभिन्न सत्रों में अपने आलेख प्रस्तुत किए।

तमिळ में बाल साहित्य : वर्तमान एवं भविष्य

15 अक्टूबर 2016, औरोविल्ले

साहित्य अकादेमी के उपक्षेत्रीय कार्यालय चेन्नै द्वारा तमिळ हेरिटेज सेंटर औरोविल्ले के सहयोग से 'तमिळ में बाल साहित्य : वर्तमान एवं भविष्य' विषय पर एकियम स्कूल, औरोविल्ले में 15 अक्टूबर 2016 को एक परिसंवाद का आयोजन किया गया। कार्यालय प्रभारी श्री ए.एस. इलंगोवन ने प्रतिभागियों अतिथियों का स्वागत किया। अकादेमी के तमिळ परामर्श मंडल के संयोजक श्री के. नचिमुथु ने अतीत में प्रस्तुत किए गए बच्चों की विभिन्न साहित्यिक विधाओं के बारे में एक विद्वत्तापूर्ण आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने तमिळ छंद में जो श्रेष्ठ तकनीक के साथ नया छंद प्रयोग किया गया था, उसके प्रस्तुत करने के बारे में बात की। तमिळ हेरिटेज सेंटर की प्रभारी इरा. मीनाक्षी ने बच्चों द्वारा रचित कविताओं के तमिळ अनुवाद प्रस्तुत किए। इलैगरकल एजुकेशन सेंटर के सलाहकार एन. अर्धनारी ने कहा कि जैसे युद्ध के बीज पुरुषों के मन में लगाया जाता है, उसी तरह हमें बच्चों के मन में शांति के बीज डालना चाहिए। तमिळ परामर्श मंडल के सदस्य सी. सेतुपथी ने उद्घाटन सत्र के अंत में धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता बाल साहित्य पुरस्कार से सम्मानित एम.एल. थंगप्पा ने किया। उन्होंने कहा कि बच्चों के जीवन के भविष्य के युवा कवियों ने समाज को बेहतर प्रदर्शन के लिए एक छिपे सामाजिक संदेश के साथ बच्चों के लिए तीव्र, प्रत्यक्ष और मधुर गान गाया जाता है। सुश्री के. मंजुला ने बाल पत्रिका और साहित्य पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने पोकेमान, डोरा, स्पाइडर मैन के पश्चिमी प्रभाव से पीछा छुड़ाने के लिए बच्चों की मातृभाषा में अधिक पत्रिकाएँ प्रकाशित करने पर ज़ोर दिया।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्री सी. सेतुपथी ने की। उन्होंने कथा छंद की एक व्यापक तस्वीर प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि गीत शुद्ध उल्लास होते हैं और कहानियाँ शुद्ध जादू। श्री वेलुसर्वानन ने बच्चों के नाटक के बारे में बात की और 20वीं व 21वीं सदी के नाटकों में कार्यरत विभिन्न रूपों की चर्चा की। अंतिम आलेख श्री जी. राजा राम ने बाल साहित्य में परिस्थिति विज्ञान पर प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि प्रकृति युवा लड़के लड़कियों के मन एवं जीवन में प्रमुख भूमिका निभाता है।

समापन सत्र की अध्यक्षता सुश्री इरा. मीनाक्षी ने की। साहित्य अकादेमी की बाल साहित्य पुरस्कार से सम्मानित आयशा इरा. नटराजन ने बच्चों के लिए विज्ञान कथा में नवाचार और कल्पना पर दिलचस्प बातें की। ऐचकम स्कूल के अध्यापक श्री एस. संकर ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

निर्मला देवी

22 अक्टूबर 2016, भुवनेश्वर, ओड़िशा

साहित्य अकादेमी ने सुप्रसिद्ध ओड़िया कवयित्री निर्मला देवी (1907-1997) पर एकदिवसीय 'परिसंवाद' का आयोजन 22 अक्टूबर 2016 को इडकोल सभागार, भुवनेश्वर में किया। इस कार्यक्रम में अनेक गणमान्य उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में ओड़िशा के सभी जगहों से लगभग 300 साहित्य प्रेमी उपस्थित थे। ओड़िशा की सुनहरी आवाज़ प्रणब पटनायक की मधुर स्तुति से कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ जिसमें उन्होंने निर्मला देवी की कालजयी कविता 'तुमेबरनाबिहिना पारा' प्रस्तुत की और उनकी आध्यात्मिक शैली की अद्वितीय कविताओं को स्वर दिया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने स्वागत भाषण दिया। सुप्रसिद्ध कवि श्री रमाकांत रथ ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया और ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त श्री सीताकांत महापात्र ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। सुप्रसिद्ध चिंतक और कवि श्री हरप्रसाद दास ने बीज-भाषण दिया। उन्होंने कहा कि उनकी कविता में भावात्मक तथा छंद और धुन में उनकी भूमिका उत्कृष्ट थी। ओड़िया छायावादी कवियों में उनका एक विशिष्ट स्थान

बायें से : रमाकांत रथ, प्रणब पटनायक, गौरहरि दास, के. श्रीनिवासराव, हरप्रसाद दास, सीताकांत महापात्र, पंजामणि मनु उकिल, गोपाल च. बर्मन

था। डॉ. गौरहरि दास ने निर्मला देवी के बारे में कहा कि उनका बड़े पाठक वर्ग के लिए आगामी लेखन का ढाँचा स्पष्ट होता था। निर्मला देवी की कविताओं का संग्रह 'निर्मला देवी कविता समग्र' का विमोचन इस कार्यक्रम में किया गया, जिसका संपादन रत्नामाला स्वाईन ने किया है। प्रकाशक पंचमी मनु पिछले 30 वर्षों से निर्मला देवी की कविताओं को पुनः संग्रहीत करने में जुटे हैं। भोजन के पश्चात् के सत्र की अध्यक्षता श्री फनी मोहंती ने की। इस सत्र में निर्मला देवी की रचनाओं पर श्री बसंत पंडा, श्रीमती जयंति रथ, सुश्री लावण्या नायक और 'निर्मला देवी कविता समग्र' की संपादिका रत्नमाला स्वाईन ने विभिन्न विषयों पर अपने विद्वत्तापूर्ण लेख प्रस्तुत किए। सचिव, साहित्य अकादेमी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

तमिळ में बाल पत्रिका

22 अक्टूबर 2016, कुंडरकुडी

अकादेमी के उपक्षेत्रीय कार्यालय चेन्नै द्वारा 'थोदरम' पत्रिका के सहयोग से 'तमिळ में बाल पत्रिका' विषयक परिसंवाद का आयोजन 22 अक्टूबर 216 को कुंडरकुडी में एक आदर्श गाँव में किया गया। कार्यालय प्रभारी श्री ए.एस. इलंगोवन ने अतिथियों का स्वागत किया। कुंडरकुडी थिरुवन्नामलाई आधीनम के बिशप टी. पी. अडिगलार ने अकादेमी को आशीर्वाद दिया और कहा कि भविष्य के शिक्षकों, जो बाद के युवा मन में साकार होंगे, के क्षेत्र में इस प्रकार के प्रतिष्ठित समारोह के आयोजन के लिए साहित्य अकादेमी की प्रशंसा की। उन्होंने अकादेमी के प्रकाशनों की प्रशंसा की, प्रस्तुति एवं सामग्री दोनों की तथा उन्होंने तुरंत सौ से अधिक पुस्तकें ख़रीदीं और युवा छात्रों में वितरित कीं। अकादेमी के तमिळ परामर्श मंडल के सदस्य श्री सी. सेतुपथी ने परिसंवाद का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि बच्चों के लिए कहानियाँ बहुत महत्त्वपूर्ण हैं और वे एक जादुई दुनिया खोलती हैं और इन छोटों को ज़्यादा ख़ुशी देती हैं। अकादेमी के तमिळ परामर्श मंडल के संयोजक श्री के. नाचिमुथु ने बाल पत्रिकाओं का एक व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत किया। कुंडरकुडी कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन फ़ॉर वुमन के प्राचार्य श्री मोहन राज ने इस आयोजन के लिए बधाई दी। 'थोदरम' साहित्यिक पत्रिका के संपादक श्री ए. कानन ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री सेल्ला गणपति ने की और उनके आलेख 'बाल पत्रिकाओं की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और कल्पना की समृद्धि' को सुरुचिपूर्ण ढंग से पढ़ा गया। श्रीमती देव नचियप्पन ने 'बाल पत्रिकाओं की भाषा शैली और रचनात्मक तकनीक' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के बाल साहित्य पुरस्कार से सम्मानित मा. कमळावेलन ने की। उन्होंने पारंपरिक कहानियाँ और उनके बाल पत्रिकाओं पर प्रभाव पर बोलते हुए एक विद्वतापूर्ण व्याख्यान दिया। श्री मू. मुरुगेश ने 'बाल पत्रिकाओं द्वारा पोषित पेंटिंग की कला' पर आलेख प्रस्तुत किया। समापन समारोह की अध्यक्षता श्री चंद्रकंदन ने की। कार्यक्रम में स्थानीय लेखक, विद्वान, कवि, संपादक भारी संख्या में मौजूद थे।

ला. सा. रमामिरथम जन्मशतवार्षिकी

26 अक्टूबर 2016, चेन्नै

अकादेमी के उपक्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै द्वारा यूनिवर्सिटी के तमिळ विभाग के सहयोग से तमिळ लेखक ला. सा. रमामिरथम जन्मशतवार्षिकी पर यूनिवर्सिटी परिसर में एक परिसंवाद का आयोजन किया गया। अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अतिथियों का स्वागत करते हुए एक ईमानदार व्यक्ति और प्रतिभाशाली कलाकार ला. सा. रमामिरथम का शब्द चित्र प्रस्तुत किया। उन्होंने उनकी तुलना विजयदान देथा की साहित्यिक प्रतिभा और रप्पुनीर भारद्वाज तेलुगु साहित्यकार से की जिन्होंने तेलुगु लेखन को प्रभावशाली शैली दी।

प्रो. के. नाचिमुथु ने अध्यक्षीय वक्तव्य दिया। उन्होंने ला. सा. रमामिरथम द्वारा उनके लेखन में नियोजित आकर्षक शैली के पाँच-छह उदाहरण उद्धृत किए। तमिळ परामर्श मंडल के सदस्य श्री मालन ने बीज वक्तव्य में कहा कि ला. सा. रमामिरथम एक ऐसे कलाकार थे जिन्होंने दिल और दिमाग़ के अंदरूनी प्रिज़्म को ढाला।

उन्होंने कहा कि ला.सा. रामिरेथम ने पारंपरिक मुहावरों और वाक्यांशों को संशोधित कर अपनी प्रतिभा के अनुसार उनका उपयोग किया। मद्रास यूनिवर्सिटी के तमिळ विभाग के प्रो. वाय मणिकनंदन ला.सा. रामिरेथम के जीवन का ब्योरा दिया। उनके लेखन-मित्रों से बातचीत से और उनके सहज प्रयासों से अपने लेखन को बार-बार पुनर्लेखन द्वारा सुधार किया। ला. सा. रामिरेथम की पत्नी श्रीमती हेमवती रामिरेथम ने संक्षेप में कहा कि परिवारिक जीवन के अनुकूल झगड़ों को प्रेम से सुलझा देते थे। ला.सा.रा. के पुत्र ला.सा.रा. सतपथी ने कहा कि ला.सा.रा. के लेखन को विकास के शिखर पर पहुँचाने में परिवारिक जीवन की मुख्य पृष्ठभूमि थी। कार्यालय प्रभारी श्री ए.एस. इलंगोवन ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता सा. कंदासामी ने की। उन्होंने 'ला.सा.रा. की कहानियों के कहे अनकहे तत्त्व' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्हें किसी विशेष घटना या विचार को प्रस्तुत करने के लिए कम शब्दों की ज़रूरत होती थी किंतु उनके शब्द सुंदर और उल्लेखनीय होते थे। श्री आर. वेंकटेश ने ला.सा.रा. के व्यक्तित्व परिवार प्रेम और धर्म के प्रति समर्पण द्वारा डाला गया था।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता वरिष्ठ तमिळ लेखक श्री के. ए. सच्चिदानंदम ने की। उन्होंने 'ला.सा.रा. का सौंदर्यबोध' विषय पर संस्कृत और पश्चिमी साहित्य में सौंदर्य की उचित पृष्ठभूमि के साथ व्याख्यान दिया। उन्होंने रीति, ध्वनि, वक्रोक्ति और रस को परिभाषित किया और उनके बारे में बताया। श्री थिरुप्पूर कृष्णन ने ला.सा.रा. की भाषा एवं शैली के बारे में बात की। उन्होंने कहा कि ला.सा.रा. की लेखन शैली कुछ स्थानों पर सरल थी किंतु उन्होंने पाठकों की इस बात की शैली, वाक्यांशों एवं समृद्ध कल्पना शक्ति को समझने और आनंद उठाने की अनुमति दी। प्रो. मणिकानंदन ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

मलयाळम् साहित्यिक पत्रकारिता

26 अक्टूबर 2016, त्रिचूर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु द्वारा भाषा पोशिनी, मलयाला मनोरमा के सहयोग से केरल साहित्य अकादमी ऑडिटोरियम, त्रिचूर में 26 अक्टूबर 2016 को 'मलयाळम् साहित्यिक पत्रकारिता' विषयक एक परिसंवाद का आयोजन किया गया।

साहित्य अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी श्री के.पी.राधाकृष्णन ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया।

नब्बे वर्षीय कलाकार श्री नंबूदरी ने परिसंवाद का उद्घाटन किया। अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के संयोजक श्री सी. राधाकृष्णन ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में उन्होंने साहित्य अकादेमी की गतिविधियों से अवगत कराया। उन्होंने विस्तार से यह भी कहा कि मलयाळम् भाषा को वर्तमान स्थिति तक पहुँचाने में पोशिनी भाषा ने किस प्रकार सहायता की है।

श्री एम.टी.वासुदेवन नायर ने अपने एक वीडियो साक्षात्कार में कहा कि वे कॉलेज के प्राध्यापक बनना चाहते थे किंतु मात्र स्नातक होना उस पेशे के लिए पर्याप्त नहीं था। अतः मैंने पत्रकार का पेशा अपनाया। हमारे काम के एक हिस्से के रूप में आई हुई पांडुलिपियों को पढ़ना पड़ता है। उनमें से अधिकतर एवं मात्र 20 प्रतिशत पठनीय होता था। पढ़ी गई सामग्री में यदि कुछ अच्छा मिल जाता था तो हम उसे उस दिन की उपलब्धि मानते थे। मैं शाम को अपने दोस्तों के साथ होने वाली बैठकों में इसकी चर्चा होती थी। श्री नायर ने एक संपादक के रूप में इस प्रकार की यादों को श्रोताओं के साथ साझा किया। प्रसिद्ध लेखिका श्रीमती सारा जोसेफ़ ने अपने अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि एक लेखक को सँवारने में एक संपादक की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। एक संपादक के पास संपादन की शक्ति होती है किंतु दुर्भाग्य से कुछ लेखक संपादक के विवेकाधिकार को अपने आत्मसम्मान के विरुद्ध समझते हैं। लेखक, कवि श्री वी.जी. थम्पी ने साहित्यिक पत्रकारिता के विषय में अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि कुछ पत्रिकाएँ नयन लुभावन आवरण को प्राथमिकता देती हैं, उनमें पाठन सामग्री नहीं के बराबर होती है। उनका यह भी कहना था कि कुछ संपादक कुछ चुने हुए लेखकों को ही प्रेत्साहित करते हैं तथा लेखन के साथ न्याय नहीं करते। श्री सी.

कार्यक्रम का एक दृश्य

सुंदर दास ने कहा कि मैं यह कहते हुए विचलित हो रहा हूँ कि हमारे पास साहित्यिक पत्रकारिता पर कोई अच्छा काम नहीं है जो विश्व स्तर से मुक़ाबला कर सके। प्रो. सी. आर. ओमनकुट्टन ने कहा कि महत्त्वपूर्ण यह है कि वर्तमान परिदृश्य में जहाँ जाने माने लेखकों और पूर्व संपादकों को उनके योगदान के लिए उनके समय में मान्यता नहीं दी गई। श्री कलातील वर्गीज़, श्री के. पद्मनाभन नायर, आर्टिस्ट श्री गोपालन, आर्टिस्ट श्री सम्स कुट्टी तथा श्री पझविला रमेशन जैसे कुछ नाम हैं जिन्हें सदैव याद किया जाना चाहिए।

भाषा पोशिनी के प्रभारी संपादक श्री के. सी. नारायणन ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

दक्षिण भारतीय कहानी में समकालीन रुझान

27 अक्टूबर 2016, कुप्पम

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु द्वारा द्रविडियन यूनिवर्सिटी के तेलुगु एवं अनुवाद विभाग के सहयोग से एक परिसंवाद का आयोजन यूनिवर्सिटी के सभागार में 27 अक्टूबर 2016 को किया गया।

क्षेत्रीय सचिव श्री एस.पी.महालिंगेश्वर ने अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी की गतिविधियों से अवगत कराया। अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. एन. गोपी ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री गोपी ने महिलाओं द्वारा साहित्य के क्षेत्र में किए जा रहे प्रयास की सराहना की। उन्होंने यह भी कहा कि कविता तेलंगाना से आई, कथा आंध्र प्रदेश से तथा आलोचना रायलसीमा क्षेत्र से आया। उन्होंने छात्र जीवन के अपने उन अनुभवों को याद किया जब वे वामन की कविताओं को संकलित करने के लिए गाँव-गाँव घूमे थे।

तेलुगु एवं ट्रांसलेशन स्टडीज़ के विभागाध्यक्ष डॉ. के.श्रीदेवी ने भाषाओं के बीच तुलनात्मक अध्ययन की आवश्यकता पर बल दिया, विशेष रूप से दक्षिण भारतीय भाषाओं के मध्य तुलनात्मक अध्ययन। उन्होंने दक्षिण भारतीय कहानी के अध्ययन की ज़रूरत पर भी बल दिया। मनुचरित्र, वासुचरित्र, कन्यासुल्कम के तुलनात्मक अध्ययन के लिए तुलनात्मक अध्ययन करके उदाहरण प्रस्तुत किया। इससे हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि मानव एक है और मानव इतिहास एक है। प्रो. के. चंद्रशेखर रेड्डी ने बीज-वक्तव्य दिया। उन्होंने दक्षिण भारतीय कहानियों में विभिन्न प्रकृतियों के मुद्दों के बारे में बात की। किसी भाषा में कोई भाषा सर्वोच्च या हीन नहीं होती। हमें परिवर्तन को स्वीकार करना होगा। उन्होंने आगे कहा कि देश के इतिहास या संस्कृति या साहित्य की किसी अन्य विधा के विकास के लिए कहानी मुख्य फ्रेम है।

कार्यक्रम का एक दृश्य

मुख्य अतिथि द्रविडियन यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. ई. सत्यनारायण ने अपने वक्तव्य में कहा कि वामन की कविताओं का अध्ययन समकालीन समाज के आलोक में करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने यूनिवर्सिटी परिसर में इस आयोजन के लिए साहित्य अकादेमी के प्रति आभार व्यक्त किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री वेंकटेश्वर यूनिवर्सिटी, तिरुपति के कुलपति प्रो. एम. नरेंद्र ने की। भारतीय यूनिवर्सिटी के डॉ. एस. चित्रा ने 'तेलुगु और तमिळ की 21वीं सदी की कहानियाँ' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने तमिळ और तेलुगु प्रत्येक भाषा से 12 लेखकों की 40 कहानियों का चयन किया था। उन्होंने आगे कहा कि महिलाओं द्वारा नारीवाद पर स्वयं गर्व किया जाना चाहिए। सुब्रमण्यम भारती के अनुसार यदि महिलाएँ शिक्षित होती हैं तो समाज शिक्षित है। वे आधुनिक परिधान पहन रही हैं, किंतु उनके विचार आधुनिक नहीं हैं। तेलुगु की लेखिकाएँ समर्पण की रेखा में अपने विचार व्यक्त कर रही हैं। तमिळ की लेखिकाएँ पुरुष प्रधान समाज पर अपने विचार व्यक्त कर रही हैं।

द्रविडियन यूनिवर्सिटी के डॉ. ई. दिलीप ने 'समाप्ति : समकालीन तेलुगु और कन्नड कहानियों में क्रांतिकारी विषयों का तुलनात्मक अध्ययन' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता डॉ. आर. विवेकानंद गोपाल ने की। इस सत्र में डॉ. बी. एस. शिवकुमार ने 'तेलुगु और कन्नड की दक्षिण भारतीय कहानियों में समकालीन प्रवृत्तियाँ' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने 13वीं सदी में तुलु साहित्य में लिखित साक्ष्य प्रस्तुत किए। सत्र में दूसरा आलेख डॉ. कविता

राय का था। उनकी अनुपस्थिति में 'तुलु और कन्नड में नारीवादी कहानियों पर लिखा आलेख डॉ. वी.एस. शिवकुमार ने प्रस्तुत किया। इस सत्र में 'तेलुगु और मलयाळम् में समकालीन अल्पसंख्यक लघुकथाएँ' विषय पर डॉ. टी. विष्णु कुमारन ने आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि केरल में मलयाळम् साहित्य में अल्पसंख्यक मुस्लिम समुदाय को संदर्भित करता है क्योंकि वहाँ ईसाई धर्म प्रमुख है। डॉ. मुहिलाई राजा पंडियन की अनुपस्थिति में उनका आलेख 'तमिळ और मलयाळम् में चित्रित समकालीन प्रवृत्तियाँ' विषय पर डॉ. विवेकानंद गोपाल ने प्रस्तुत किया।

इस सत्र के अंतिम प्रतिभागी प्रो. मधुकरांतकम थे। उन्होंने 'तेलुगु और तमिळ कहानियों के संरचनात्मक स्वरूप मोरासूंद एवं तोंडानाडू कथालू के विशेष संदर्भ में' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने प्रसिद्ध तमिळ कथाकार श्री जयकांतन की कहानियों की प्रबोधक संरचना की व्याख्या की।

समापन सत्र की अध्यक्षता श्री एन. गोपी ने की तथा समापन वक्तव्य प्रसिद्ध कन्नड लेखक वीरभद्रप्पा ने दी। क्षेत्रीय सचिव के धन्यवाद ज्ञापन से परिसंवाद समाप्त हुआ।

शोक सभा : प्रभाकर श्रोत्रिय

24 सितंबर 2016, नई दिल्ली

"प्रभाकर श्रोत्रिय की छवि एक कुशल संपादक और आलोचक की है लेकिन शायद यह बात कम लोगों को ज्ञात होगी कि वे काव्य शास्त्र के प्रकांड विद्वान थे।" यह विचार प्रख्यात आलोचक विश्वनाथ त्रिपाठी ने साहित्य अकादेमी द्वारा प्रभाकर श्रोत्रिय की स्मृति में 24 सितंबर 2016 को अकादेमी के मुख्य कार्यालय नई दिल्ली में आयोजित शोक सभा में व्यक्त किए।

ज्ञात हो कि प्रख्यात आलोचक संपादक एवं नाटककार तथा साहित्य अकादेमी की पत्रिका 'समकालीन भारतीय साहित्य' के पूर्व संपादक प्रभाकर श्रोत्रिय का 15 सितंबर 2016 को निधन हो गया था। प्रख्यात पत्रकार वेदप्रताप वैदिक ने इसे एक बड़ी व्यक्तिगत क्षति मानते हुए उन्हें एक ऐसे निष्पक्ष इंसान के रूप में याद किया, जिन्होंने कभी अपने पद का कोई भी दुरुपयोग नहीं किया। प्रसिद्ध नाट्य आलोचक जयदेव तनेजा ने उन्हें एक कर्मठ लेखक के रूप में याद

किया और उनके नाटक 'इला' का विशेष तौर पर उल्लेख करते हुए बताया कि यह नाटक पौराणिक आख्यान पर आधारित होते हुए भी आज की स्थितियों में बेहद प्रासंगिक था ऐसा अन्य पौराणिक नाटकों में सामान्यतः नहीं होता है।

प्रख्यात कथाकार मृदुला गर्ग ने उन्हें एक मित्र और सहयोगी संपादक के रूप में याद करते हुए कहा कि वे संपादक के रूप में अपने लेखकों को हमेशा प्रोत्साहित करते थे।

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने प्रभाकर जी द्वारा पत्रिकाओं के संपादन के अलावा उनके विपुल लेखन कार्य की चर्चा करते हुए कहा कि यह सब लेखन के प्रति उनकी निष्ठा को दर्शाता है। वह किसी भी पक्ष या वाद के प्रभाव में नहीं रहे। 'महाभारत' को लेकर किया गया उनका कार्य अतुलनीय है।

शोक सभा में विष्णु नागर, माधव कौशिक, शीन काफ़ निज़ाम, रीतारानी पालीवाल, कमल कुमार, सत्यव्रत, यशोधरा मिश्र, बलराम, रामचंद्र गौतम, देवेंद्र कुमार बहल ने भी प्रभाकर श्रोत्रिय को एक दृष्टि संपन्न आलोचक, निबंधकार तथा नाटककार और संपादक के रूप में याद किया।

शोक सभा के प्रारंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने शोक संदेश पढ़ा। कार्यक्रम के अंत में सभी ने 2 मिनट का मौन रखकर दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की।

साहित्य अकादेमी की पत्रिका के ग्राहक बनें

समकालीन भारतीय साहित्य (हिंदी द्वैमासिक)

(अतिथि संपादक : रणजीत साहा)

एक प्रति : 25 रु.

वार्षिक सदस्यता शुल्क : 125 रु., त्रिवार्षिक सदस्यता शुल्क : 350 रु.

विविध कार्यक्रम

साहित्य मंच - नेपाली रचना पाठ

11 सितंबर 2016, सितांग, प. बंगाल

साहित्य अकादेमी द्वारा सितांग सार्वजनिक भवन, शेलफू में 11 सितंबर 2016 को गीतांजलि साहित्यिक संस्थान के सहयोग से 'नेपाली रचना पाठ' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता धर्मबीर रुंबा ने की तथा श्री यूराज काफले कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश, विशेष कार्याधिकारी साहित्य अकादेमी ने अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी की गतिविधियों से अवगत कराया। साहित्य अकादेमी के नेपाली परामर्श मंडल के संयोजक प्रेम प्रधान ने ग्रामीण क्षेत्र में इस प्रकार के आयोजन के लिए अकादेमी का आभार व्यक्त किया। उद्घाटन सत्र में श्री लादुप रोङ्कोप और श्री सेवन सुब्बा ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

कविता पाठ सत्र की अध्यक्षता श्री दलसिंह अकेला ने की जबकि कहानी पाठ सत्र की अध्यक्षता श्री मैतराज राणा ने की। सुश्री परवीना श्वास, श्री सत्यम राय, श्री बिसाथ बंतवा और श्री राजेश तमंग ने कविताओं का पाठ किया तथा श्री प्रकाश हाङ्खिम, श्री जीतेंद्र श्ववास और श्री देवेंद्र चेतरी ने अपनी कहानियों का पाठ किया।

साहित्य मंच

14 सितंबर 2016, कलोल

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई तथा एम. एम. गाँधी आर्ट्स एवं कॉमर्स कॉलेज के सहयोग से 14 सितंबर 2016 को कलोल में साहित्य मंच का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का उद्घाटन एम.एम. गाँधी आर्ट्स कॉलेज के प्राचार्य डॉ. के. एच. व्यास द्वारा किया गया, उन्होंने कहा कि साहित्यिक रचनाकारों और उनकी रचनाएँ प्राचीन काल से ही साहित्यिक वातावरण उत्पन्न करती रही हैं।

अकादेमी के गुजराती परामर्श मंडल के सदस्य श्री मनसुख सल्ला ने अकादेमी की गतिविधियों के बारे में बात करते हुए कहा कि 'असम पठन उतस शक्ति' प्रदान करती है। उन्होंने कॉलेज के छात्रों को श्री वसंत जोशी की कविताओं को रंगों के माध्यम से कैनवास पर बिखेरने की सराहना की।

बायें से : धर्मबीर रुँबा, प्रेम प्रधान, देवेंद्र कुमार देवेश, दलसिंह अकेला एवं युवराज काफ़ले

कविता पाठ सत्र में श्री वसंत जोशी ने अपने कविता-संग्रह 'क्षितिज' से कुछ कविताओं का पाठ किया तथा उपस्थित छात्रों को पढ़ी गई कविता को विस्तार से बताया। कहानी पाठ सत्र में सुश्री नीता जोशी ने केतन मुंशी की कहानी प्रस्तुत की तथा कहानी लेखन के बारे में भी बात की। छात्रों ने भी कहानी से संबंधित अपनी जिज्ञासाओं को व्यक्त किया और कहानी के बारे में चर्चा की तथा अकादेमी के प्रति आभार व्यक्त किया कि उन्हें इस 'साहित्य मंच' में शरीक होने का अवसर मिला।

ट्रस्ट के सचिव श्री जे.एस.पटेल ने इस सुंदर साहित्यिक आयोजन की सराहना की। अंत में कॉलेज की ओर से श्री एम.के.शाह ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

साहित्य मंच - महाश्वेता देवी

16 सितंबर 2016, कोलकाता

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता ने 16 सितंबर 2016 को कोलकाता कार्यालय के सभागार में 'साहित्य मंच' कार्यक्रम के अंतर्गत महाश्वेता देवी पर विचार विमर्श कार्यक्रम का आयोजन किया गया। धीमन भट्टाचार्य, मानवेंद्र वंद्योपाध्याय, पी. सच्चिदानंदन, प्रशांता रक्षित, राघब वंद्योपाध्याय और रामकुमार मुखोपाध्याय ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम के आरंभ में गोपाल च. बर्मन, क्षेत्रीय सचिव, साहित्य अकादेमी, कोलकाता ने समस्त प्रतिभागियों का स्वागत किया और कहा कि महाश्वेता देवी जी जीवन भर समाज के पिछड़े वर्ग के अधिकारों के लिए संघर्ष करती रहीं।

प्रतिष्ठित आलोचक राघब वंद्योपाध्याय ने कहा कि महाश्वेता देवी ने बहुत से सामाजिक मुद्दों पर लेखनी चलाई है। उन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से समाज के हाशिए पर रहने वाले

महाश्वेता देवी पर आयोजित साहित्य मंच कार्यक्रम के प्रतिभागी

लोगों के जीवन के विकास के लिए संघर्ष किया। वे एक साथ लेखक और सामाजिक कार्यकर्त्ता भी थीं। पेशे से इंजीनियर और प्रतिष्ठित लेखक पी. सच्चिदानंद ने महाश्वेता देवी के साथ ट्रेन-यात्रा का संस्मरण सुनाया। इस अवसर पर महाश्वेता जी ने कैसे आदिवासियों को समाज के मुख्यधारा में लाया जाए, के बारे में विस्तार से बताया। महाश्वेता जी ने कहा था कि आदिवासी हमारे हृदय के क़रीब हैं। विश्व भारती के तुलनात्मक साहित्य के प्रो. धीमन भट्टाचार्य ने अपने अनुभव साझा किए जब वे कनाडा में महाश्वेता जी के साथ आदिवासियों के जीवन पर शोध कर रहे थे। प्रशांत रक्षित जी अपने महाश्वेता जी के साथ पुरुलिया के सवर जनता के उत्थान के लिए कार्य किया है। आपने महाश्वेता जी कार्यपद्धति एवं संकल्प शक्ति के बारे में बताया। जाधवपुर विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर मानवेंद्र बंद्योपाध्याय ने बताया कि महाश्वेता जी के आरंभिक लेखन का प्रकाशन लघु पत्रिका में हुआ। उन्होंने महाश्वेता जी की तुलना क़ुर्रतुल-ऐन हैदर और इस्मत चुग़ताई से की क्योंकि ये सभी कम्युनिस्ट विचारधारा से प्रेरित थीं और समाज के पिछड़े वर्ग के लिए काम करती थीं। रामकुमार मुखोपाध्याय ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि हम प्रायः संघर्ष करने वालों को उपेक्षित करते हैं और तथाकथित उच्च वर्ग की छाया में रहते हैं। महाश्वेता देवी के दिल में उपेक्षितों के प्रति प्रेमभाव को हमेशा मुखरित थीं।

साहित्य मंच : हाली फ़हमी

20 सितंबर 2016, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा 'हाली फ़हमी : मुख़्तलिफ़ जेहात' शीर्षक साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन अकादेमी के तृतीय तल सभाकक्ष, रवींद्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह रोड, नई दिल्ली में दिनांक 20 सितंबर 2016 को किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए साहित्य अकादेमी के पूर्व अध्यक्ष एवं फ़ेलो, उर्दू के विद्वान एवं लब्धप्रतिष्ठ समालोचक पद्मभूषण प्रो. गोपीचंद नारंग ने कहा कि मौलाना अल्ताफ़ हुसैन हाली और मोहम्मद हुसैन आज़ाद से उर्दू भाषा एवं साहित्य में एक ख़ामोश क्रांति का आरंभ हुआ। उन्होंने अपनी अपनी हद तक सामाजिक और राजनीतिक मूल्यों का एहसास भी दिलाया। हाली उर्दू के पहले कवि हैं जिनका दिल हिंदुस्तान की ग़ुलामी पर रोया। उनकी मस्नवी 'हुब्बे वतन' या छोटी नज़्में 'बेवा की फ़रियाद', 'चुप की दाद' से उनकी सामाजिक दर्दमंदी और वतनपरस्ती के इस दृष्टिकोण पर रोशनी पड़ती है जो ख़िदमत और तरक़्क़ी के एहसास से बनता है। प्रो. नारंग ने कहा कि हाली अमन और भाईचारे को पसंद करते थे।

मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलाधिपति और मौलाना अल्ताफ़ हुसैन हाली के परिवार की सदस्य श्रीमती सैयदा सैयदैन हमीद ने हाली के जीवन की विभिन्न पहलूओं की तरफ़ इशारा करते हुए कहा कि हाली ने विपरीत परिस्थितियों में भी वतनपरस्ती और अदब दोस्ती का भरपूर प्रदर्शन किया। वह अपने मुल्क से न सिर्फ़ मुहब्बत करते थे बल्कि मुल्क के अवाम की तकलीफ़ों को दूर करने की

बायें से : डॉ. के. श्रीनिवासराव, डॉ. सैयद तक़ी आबिदी एवं प्रो. गोपी चंद नारंग

फ़िक्र में हमेशा लगे रहते थे। वह आधुनिक उर्दू शायरी के जन्मदाता थे। उन्होंने ये भी कहा कि मौलाना हाली न सिर्फ़ लड़कियों की शिक्षा-दीक्षा को अहमियत देते थे बल्कि औरतों की आज़ादी और उनके अधिकार के प्रति भी हमेशा फ़िक्रमंद रहते थे।

उर्दू के लब्धप्रतिष्ठ विद्वान डॉ. सैयद तक़ी आबिदी ने अपने विशेष व्याख्यान में 'मुसद्दस-ए हाली' के हवाले से मुल्क में मुसलमानों की दयनीय स्थिति का उल्लेख किया और बताया कि हाली ने अपनी मुसद्दस में किस क़दर बेबाकी से अपनी बात कही है। उन्होंने विभिन्न हवालों से हाली की शायराना अज़मत को साबित करने की कोशिश की। इस अवसर पर हाली पर उनकी तीन किताबों का विमोचन भी हुआ।

कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने सभी मेहमानों का स्वागत किया। साहित्य अकादेमी के उर्दू परामर्श मंडल के संयोजक श्री चंद्रभान ख़याल ने कार्यक्रम का संचालन किया और अंत में उपस्थित सभी मेहमानों का धन्यवाद किया। इस अवसर पर काफ़ी संख्या में उर्दू प्रेमी उपस्थित थे।

साहित्य मंच

23 सितंबर 2016, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा 23 सितंबर 2016 को नई दिल्ली में 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें जापान के हिंदी विद्वान फ़ुज़िई ताकेशी ने 'जापान में हिंदी पुस्तकों की अनमोल विरासतें' विषय पर अपनी पावर प्वाइंट प्रस्तुति दी। उन्होंने जापान में 108 वर्ष पहले शुरु किए गए-भारतीय भाषाओं के अध्ययन के बारे में बताया। जापान में हिंदी अध्यापन के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने तोक्यो विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध हिंदी की महत्त्वपूर्ण पत्र-पत्रिकाओं व अन्य उपलब्ध पुस्तकों की जानकारी दी। माधुरी, सरस्वती, जागरण, प्रभा, वीणा आदि पत्रिकाओं के साथ-साथ उन्होंने

बायें से : प्रो. फ़ुज़िई ताकेशी एवं प्रो. मामिया कोमाकी केंसाकू

लल्लू लाल और प्रेमचंद की प्रारंभिक दुर्लभ पुस्तकों के संग्रह के बारे में भी बताया।

इस अवसर पर शेखर सेन, सुरेश ऋतुपर्ण, बुद्धिनाथ मिश्र, नारायण कुमार, डॉ. विजय, डॉ. अरुणा, राकेश पांडेय आदि ने भी तोक्यो विश्वविद्यालय में अपनी यात्रा के संस्मरण साझा किए और तोक्यो विश्वविद्यालय द्वारा हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के अध्ययन के लिए किए जा रहे उल्लेखनीय कार्य की सराहना की।

साहित्य मंच

25 सितंबर 2016, इंफ़ाल, मणिपुर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा मणिपुरी साहित्य सोसायटी, इंफ़ाल के संयुक्त तत्त्वावधान में 'साहित्य मंच' का आयोजन हिंदी टीचर ट्रेनिंग कॉलेज, डीएम कॉलेज कैम्पस, इंफ़ाल, मणिपुर में 25 सितंबर 2016 को किया गया।

उद्घाटन सत्र में प्रो. एच. बेहारी सिंह, संयोजक, मणिपुरी परामर्श मंडल, साहित्य अकादेमी और डॉ. अनन्पोकम खोलाचंद्र सिंह, अध्यक्ष, मणिपुरी साहित्य समाज मुख्य अतिथि और अध्यक्ष भी थे। स्वागत भाषण श्री गौतम पॉल ने दिया जो साहित्य अकादेमी के सहायक संपादक हैं। उन्होंने अपने वक्तव्य में समकालीन मणिपुरी समाज में कहानियों के महत्त्व को रेखांकित किया।

मुख्य अतिथि द्वारा मणिपुरी साहित्य समाज, इंफ़ाल की 'साहित्य लीचहल' के भाग 24, अंक 55, अगस्त 2016 में साहित्यिक पत्रिका को लोकार्पित किया गया। उन्होंने अपने भाषण में इस तरह के मंच के महत्त्व को रेखांकित किया। मणिपुरी साहित्य समाज के सदस्य डॉ. इरुङबम देवन ने धन्यवाद दिया। प्रतिभागियों और प्रतिष्ठित विद्वानों ने अपने विचार और सूक्ष्म अवलोकन से अपने अनुभवों को साझा किया।

डॉ. अथपोकम कोलचंद्रा सिंह की अध्यक्षता में माया नेपराम ने 'मणिपुरी कहानियों की रुपरेखा' (आलोचनात्मक लेख) विषय पर आलेख पढ़ा। मेजर खुटिंग ने 'उमा वा तनवा' शीर्षक अपनी कहानी का पाठ किया।

मेनसनम चंचल चानू ने 'मणिपुरी कहानियों में महिलाओं का चित्रण' (1970 से पहले) विषय पर आलेख का वाचन किया। उन्होंने अपनी कहानियों में स्त्रियों के विभिन्न रूपों, विभिन्न दृष्टिकोणों से रुपायित किया। आर. जे. नितई ने भी 'मणिपुरी कहानियों में महिलाओं का चित्रण' (1970 के बाद) विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। पत्नी, माँ और पुत्री

के रूप में स्त्रियों का आकलन संबंधी आलेख में स्त्रियों के जीवन की विभिन्न झलकियों का वर्णन था।

साहित्य अकादेमी से पुरस्कृत के. एस. प्रकाश सिंह ने दूसरे सत्र की अध्यक्षता की और अपने आलेख का वाचन किया। थॉमस इबोहानबी सिंह ने 'मणिपुरी कहानी में एक विषय के रूप में उग्रवाद की समस्या' विषय पर अपना आलेख पढ़ा। मणिपुरी कहानियाँ मणिपुरी की विभिन्न समस्याओं जैसे आतंकवाद, सैनिक-कानून, जनता के बीच बढ़ता असंतोष, स्त्रियों की दीन-हीन दशा जैसे गंभीर विषय को अपने आलेख में उठाया। सोङ्वम प्रमिला देवी ने 'मणिपुरी साहित्य में मणिपुरी कहानियों का आलोचनात्मक मूल्यांकन' विषय पर आलेख पढ़ा। उन्होंने मणिपुरी कहानी के विभिन्न पड़ावों की व्याख्या की। सुश्री देवी ने मणिपुरी में सन् 1980 के बाद आई नई परिस्थितियों - हिंसा, सांप्रदायिक संघर्ष, ग़रीबी, भूखमरी, बलात्कार, ड्रग्स, नशा, एड्स और हिजड़ों की समस्याओं को अपने आलेख में स्पष्ट किया। खलेंद्र सिंह ने 'मणिपुरी साहित्य के विकास में मणिपुरी कहानियाँ' विषय पर वाचन किया। अपने आलेख में मणिपुरी की समस्याओं का समाधान प्रेम है – इस बात को स्थापित किया। अपने आलेख में उन्होंने मणिपुर की समस्याओं को दूर करने के लिए नए तकनीक के इस्तेमाल पर बल दिया।

अंत में के.एस. प्रकाश सिंह ने प्रस्तुत किए गए आलेखों पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

साहित्य मंच - तेलुगु उपन्यास - रायलसीमा का योगदान

26 सितंबर 2016, कुरनूल

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगलूरु द्वारा सिल्वर जुबली कॉलेज (ए), कुरनूल के सहयोग से 'तेलुगु उपन्यास : रायलसीमा का योगदान' विषय पर साहित्य मंच का आयोजन कॉलेज के सभागार में 26 सितंबर 2016 को किया गया।

व्याख्यान देते हुए प्राचार्य डॉ. एस. अब्दुल क़ादिर

उद्घाटन सत्र में कॉलेज के प्राचार्य डॉ. एस. अब्दुल क़ादिर ने तेलुगु कथा साहित्य में रायलसीमा के लेखकों के महत्त्व को रेखांकित किया। साहित्य अकादेमी से पुरस्कृत प्रो. आर. सी. रेड्डी जो कि मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए थे, ने कहा कि साहित्य अकादेमी साहित्य की जो सेवाएँ कर रही है उनमें तेलुगु साहित्य के प्रति प्रतिपादन है। विशिष्ट अतिथि सेंट्रल यूनिवर्सिटी हैदराबाद के प्रो. टी. रामकृष्णा ने कहा कि रायलसीमा ने तेलुगु कथा के लिए पर्दा उठाया और तेलुगु उपन्यास का बीज एक मणि के रूप में इस रतनाला सीमा में अंकुरित है। जुबिलेंट कॉलेज के विभागाध्यक्ष एवं आयोजन के निदेशक पी. विजय कुमार ने कहा कि अपर्याप्त बारिश के कारण अकाल हो सकता है लेकिन तेलुगु की धारा कृष्णा, पन्ना और तुंगभद्र नदी के बारहमासी संगम की तरह अविरल बहती है।

प्रो. टी. रामकृष्णन ने अपने आलेख में रायलसीमा के विभिन्न उपन्यासकारों जैसे केतु विश्वनाथ रेड्डी, डॉ. बी. केशव रेड्डी, बी. आर. रसानी, शांति नारायण के उपन्यासों के बारे में बात की। प्रो. आर. चंद्रशेखर ने 'अनंतपुर जनपद का उपन्यास साहित्य' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। डॉ. वी. आर. रसानी ने 'चित्तूर ज़िले का उपन्यास साहित्य', डॉ. पी. नागराजू ने 'कडप्पा ज़िले का उपन्यास साहित्य' तथा श्री जे. रघुबाबू ने 'कुरनूल ज़िले का उपन्यास साहित्य' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम में स्थानीय कॉलेजों के छात्र, अध्यापक तथा गणमान्य उपस्थित थे।

साहित्य मंच

2 अक्टूबर 2016, चपलगाँव, शोलापुर

साहित्य अकादेमी ने साहित्य मंच कार्यक्रम के अंतर्गत ग्रामलोक कार्यक्रम का आयोजन 2 अक्टूबर 2016 को विद्या विकास ग्रामीण विद्यालय चपलगाँव के सहयोग से किया। अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं श्रोताओं का स्वागत किया। प्रसिद्ध मराठी लेखक, आलोचक डॉ. जी.एम. पवार ने ग्रामलोक कार्यक्रम की अध्यक्षता की। यह इस शृंखला का पहला कार्यक्रम था।

ग्रामलोक कार्यक्रम का उद्देश्य प्रसिद्ध रचनाकारों का ग्रामीण क्षेत्रों के साहित्य प्रेमियों से रू-ब-रू कराना है, श्री राव ने कहा कि इस प्रकार

प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए अकादेमी के सचिव

के आयोजन का उद्देश्य गाँव के लोगों तक पहुँचना है।

डॉ. अर्जुन वाटकर ने अपनी कहानी का पाठ किया। श्री हेमकिरण पतकी एवं श्री इंद्रजीत धुले ने कविताओं का पाठ किया। विद्यालय के पूर्व छात्र डॉ. राजशेखर शिंदे ने आज के मराठी साहित्य पर अपने विचार व्यक्त किए और इस बात पर ज़ोर दिया कि साहित्य संस्कृति की उपज है। डॉ. जी.एम.पवार ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि साहित्य, संगीत एवं दूसरी कलाएँ मानव संवेदना को पैना करती हैं। क्षेत्रीय सचिव कृष्ण किंबहुने ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

साहित्य मंच

24 अक्टूबर 2016, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी के लोकप्रिय कार्यक्रम 'साहित्य मंच' के अंतर्गत कमल कुमार, बलराम एवं पूजा खिल्लन के रचना-पाठ का आयोजन 24 अक्टूबर 2016 को नई दिल्ली में किया गया। सर्वप्रथम युवा रचनाकार पूजा खिल्लन ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत की। उन्होंने 'पिता', 'बच्चों की दुनिया' और 'स्त्री' पर केंद्रित 14-15 कविताओं का पाठ किया। इसके बाद वरिष्ठ साहित्यकार बलराम ने अपनी कहानी 'शुभ दिन' का पाठ किया। कहानी महानगर के जीवन में एक दंपत्ति और उनके एक बच्चे पर केंद्रित थी। यह दंपती प्रतिदिन एक 'शुभ दिन' की तलाश में रोज़-रोज़ नई मुश्किलों से दो चार होता है और उसे आज तक उस 'शुभ दिन' का इंतज़ार है।

वरिष्ठ लेखिका कमल कुमार ने अपनी कहानी 'काफ़िर' के लिखे जाने की पृष्ठभूमि को श्रोताओं से साझा किया और उस कहानी के कुछ अंशों का पाठ भी किया।

रचना पाठ के बाद अशोक गुप्ता, विवेक मिश्र, राजकुमार गौतम ने तीनों लेखकों के रचना-पाठ पर अपनी संक्षिप्त टिप्पणियाँ प्रस्तुत की। कहानीकार अशोक गुप्ता ने बलराम की कहानी में गहरे महानगरीय अनुभवों को उतारने के लिए लेखक को बधाई दी। कमल कुमार की कहानी 'काफ़िर' की रचना प्रक्रिया पर उन्होंने कहा कि यह कहानी एक गहरी संवेदना के साथ पाठकों के सामने आती है और दोनों कहानियों में एक बच्चा इन संवेदनाओं के केंद्र में हैं।

विवेक मिश्र ने बलराम की कहानी 'शुभ दिन' में निजी अनुभवों को श्रेष्ठता और सच्चाई के साथ प्रस्तुत करने की सराहना करते हुए कहा कि यह इस पीढ़ी की पहचान थी।

राजकुमार गौतम ने तीनों रचनाकारों के बीच में एक बच्चे की संवेदना के धागों और प्रेम संवेदना का ज़िक्र करते हुए तीनों रचनाकारों को बधाई दी। कार्यक्रम का संचालन संपादक (हिंदी) कुमार अनुपम ने किया।

नारी चेतना

23 सितंबर 2016, आदिपुर

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा तोलानी कॉलेज ऑफ़ आर्ट्स एंड साइंस आदिपुर के सहयोग से नारी चेतना कार्यक्रम का आयोजन

बायें से : रेणु हिंगुरानी, सुनीता बजाज, पूनम धनवानी, कोमल दयालानी एवं जिया शहानी

23 सितंबर 2016 को आदिपुर में किया गया। तोलानी कॉलेज के प्राचार्य श्री सुशील धर्मानी ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम में सुश्री जिया कमल शाहानी, कोमल दयालानी, सुनीता बजाज, पूनम धनवानी, रीनू हिंगोरानी ने भाग लिया। सुश्री जिया कमल शाहानी ने 'नारी का विकास एवं विश्व शांति' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। सुश्री कोमल दयालानी ने अपना कहानी 'इंतज़ार', सुनीता बजाज ने 'आँखों के आँसू' कहानी का पाठ किया। सुश्री पूनम धनवानी एवं रेणु हिंगोरानी ने अपनी कुछ कविताओं का पाठ किया। कार्यक्रम में स्थानीय लेखक, कवि, छात्र, अध्यापक भारी संख्या में उपस्थित थे।

नारी चेतना

22 अक्टूबर 2016, कार्बी, आंगलोंग, असम

साहित्य अकादेमी एवं बोडो साहित्य सभा के संयुक्त तत्त्वावधान में बोडो महिला साहित्यकारों के साथ कार्बी, आंगलोंग, असम में 22 अक्टूबर 2016 को 'नारी चेतना' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उद्घाटन सत्र का प्रारंभ पूर्वाह्न 11.00 बजे रंगारंग बोडो पारंपरिक नृत्य के साथ हुआ, जिसमें रुकासेन कॉलेज के विद्यार्थियों ने बागुरुम्बा प्रदर्शित किया। सत्र की अध्यक्षता श्री कामेश्वर ब्रह्म, अध्यक्ष, बोडो साहित्य सभा ने की एवं उद्घाटन श्री शरत् ब्रह्म, मैक एवं पूर्व अधिशासी सदस्य, कार्बी आंगलोंग, स्वायत्त परिषद् ने की। साहित्य अकादेमी के बोडो परामर्श मंडल के संयोजक श्री परमानंद मुसाहारी ने उपस्थित श्रोताओं और विद्वानों का स्वागत किया। प्रारंभिक वक्तव्य बोडो साहित्य सभा के उपाध्यक्ष श्री बिश्वेश्वर बसुमतारी ने दिया और बीज-भाषण बोडो साहित्य सभा के उपाध्यक्ष श्री दीपक कुमार बसुमतारी ने दिया। हरेंद्रनाथ बोरा, संस्थापक और पूर्व प्राचार्य, रुकासेन कॉलेज, कमकांत मुसाहारी, महासचिव, बोडो साहित्य सभा ने अतिथियों और प्रतिभागियों का इस कार्यक्रम में साहित्य अकादेमी और बोडो साहित्य सभा की ओर से स्वागत किया।

अपने प्रारंभिक वक्तव्य में श्री बिश्वेश्वर बसुमतारी ने महिलाओं के आत्मसम्मान की सतर्कता पर ज़ोर दिया। प्रतिभागियों द्वारा नारी लोक के अधिकार एवं सक्रियता पर अपने विचारों को व्यक्त किया गया। बोडो साहित्य सभा के दूसरे अध्यक्ष श्री दीपक कुमार बसुमतारी ने अपने बीज-भाषण में कहा कि क्षेत्र और जाति पर विचार किए बिना नारी चेतना का संबंध नारी लोक से करना अपने आप में नारी की चेतना और ज़िम्मेदारियों पर अपना विचार केंद्रित करना चाहिए।

बोडो साहित्य सभा के अध्यक्ष श्री कामेश्वर ब्रह्म ने नारी चेतना और महिला साहित्यकारों पर साहित्य अकादेमी के संयुक्त तत्त्वावधान में कार्यक्रम आयोजित करने की प्रसन्नता ज़ाहिर की। सत्र की अध्यक्षता विभा रानी नार्ज़री, प्राचार्य, कुमारीकता जूनियर कॉलेज, बक्सा ने की और स्वर्णप्रभा चैनारी, रानी हेलेन वारी (कोकराझार), भवानी बग्लरी, रामेला इस्लरी, सुनीति नार्ज़री इस कार्यक्रम के प्रतिभागी थे।

अस्मिता

26 सितंबर 2016, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी की कार्यक्रम शृंखला 'अस्मिता' के अंतर्गत 26 सितंबर 2016 को तीन महिला रचनाकारों ने अपनी रचनाएँ प्रस्तुत की।

सर्वप्रथम चर्चित हिंदी कथाकार मनीषा कुलश्रेष्ठ ने अपनी कहानी 'किरदार' प्रस्तुत की। कहानी नायिका के आत्महत्या नोट से शुरु होती है। जो उसके पुलिस अधिकारी पति को मिला है और इसमें लिखा है। 'अब और नहीं' इस अब और नहीं की तलाश में दोनों पति-पत्नी के रिश्तों की परतें खुलती हैं। ऊपर से सब कुछ अच्छा और दूसरों के लिए उनके अनुकरणीय दांपत्य में कहीं कुछ ऐसा है जिसे पत्नी ने खोया है और उसकी मनक पति को नहीं लग पाई है। कहानी एक ढर्रे पर बिताए जाने वाले दांपत्य जीवन पर मार्मिक टिप्पणी थी।

इसके बाद असमिया कवयित्री तूलिका छेतिया एन ने अपनी सात कविताएँ प्रस्तुत की। हिंदी अनुवाद उन्होंने स्वयं ही प्रस्तुत किए। नए प्रतीकों के साथ प्रस्तुत उनकी कविताओं में पूर्वोत्तर नारी के मन के विविध चित्रण प्रभावित करने वाले थे।

हिंदी कवि-कथाकार हेमलता महिश्वर ने 'ठहरी हुई नदी' शीर्षक से अपनी कहानी का पाठ किया। कहानी में मेडिकल की पढ़ाई कर रहे छात्रों के साथ रैगिंग और जाति के आधार पर उनकी योग्यता निर्धारित करने की मानसिकता को दर्शाया गया था। कहानी की मुहावरेदार भाषा को श्रोताओं ने बेहद पसंद किया। कार्यक्रम का संचालन हिंदी संपादक कुमार अनुपम ने किया।

मेरे झरोखे से - के.एच.प्रकाश सिंह

28 सितंबर 2016, इंफ़ाल, मणिपुर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा 'मेरे झरोखे से' कार्यक्रम के अंतर्गत एच. बेहारी सिंह, संयोजक, मणिपुरी परामर्श मंडल ने बांसुरीवादक, आलोचक और साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त के.एच.प्रकाश सिंह के बारे में विचार व्यक्त किया। गौतम पॉल ने अतिथियों का स्वागत किया और लेखक के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला। प्रो. सिंह ने के.एच. प्रकाश सिंह के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला। उनकी पहली लघु कहानियों का संग्रह 'इचेगी शाम' 1960 में प्रकाशित हुआ था। उनकी दूसरे कहानी-संग्रह को साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त है।

मेरे झरोखे से

1 अक्टूबर 2016, मुंबई

क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई ने अपने सभागार में 1 अक्टूबर 2016 को 'मेरे झरोखे से' कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसके लिए प्रसिद्ध सिंधी विद्वान मोहन गेहानी पर व्याख्यान के लिए

प्रसिद्ध सिंधि कवि लेखक श्री खीमण मूलाणी को आमंत्रित किया गया। श्री मूलाणी ने श्री गेहानी को एक योगी एवं सिंधी साहित्य का पक्का अनुयायी बताया। उन्होंने श्री गेहानी की आरंभिक अवस्था के बारे में बात करते हुए बताया कि उन्होंने मुंबई के जय हिंद कॉलेज में अदबी कक्षाएँ पढ़ते हुए 15 वर्ष की आयु से ही लेखन प्रारंभ कर दिया था। वे मार्क्सवादी विचारधारा के थे परंतु कम्यूनिस्ट नहीं थे। उनका लेखन भावपूर्ण व स्नेहपूर्ण है। सिंधी साहित्य में उनके योगदान में भारतीय संविधान में सिंधी भाषा की मान्यता भी शामिल है। श्री मूलाणी के वक्तव्य के बाद श्रोताओं के प्रश्नोत्तर का भी सत्र हुआ। अकादेमी के परामर्श मंडल के संयोजक श्री प्रेम प्रकाश के धन्यवाद ज्ञापन से कार्यक्रम समाप्त हुआ।

कथासंधि

20 सितंबर 2016, अजमेर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई ने पृथ्वीराज चौहान गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ़ अजमेर के सिंधी विभाग के सहयोग से कथा संधि एवं कवि संधि कार्यक्रम का आयोजन 20 सितंबर 2016 को किया गया। कॉलेज के प्राचार्य डॉ. देव ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए कॉलेज के इतिहास के बारे में चर्चा की और सिंधी विभाग के सहयोग से इस आयोजन की सराहना की। डॉ. परमेश्वर पमनानी ने श्री कलाधर मुतवा की एवं डॉ. मीना अस्वानी ने डॉ. विम्मी सदारंगानी का परिचय कराया।

श्री कलाधर मुतवा ने अपनी दो कहानियों 'इम्तिहान' और 'पेटारी' का वाचन किया, जिसमें कच्छ के बन्नी लोगों का चित्रण था। डॉ. विम्मी सदारंगाणी ने कवि संधि में अपनी कविताओं का पाठ किया जिसे श्रोताओं द्वारा सराहा गया। कार्यक्रम में छात्र, अध्यापकगण तथा स्थानीय लेखक, कवि, पत्रकार भारी संख्या में मौजूद थे। कॉलेज के सिंधी विभागाध्यक्ष डॉ. हासो ददलानी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

कविसंधि

23 सितंबर 2016, आदिपुर

क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा तोलानी कॉलेज ऑफ़ आर्ट्स एवं साइंस आदिपुर के सहयोग से आदिपुर में 23 सितंबर 2016 को कविसंधि कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री हरीश करमचंदानी को आमंत्रित किया गया। तोलानी कॉलेज ऑफ़ आर्ट्स एवं साइंस आदिपुर के सिंधी विभागाध्यक्ष डॉ. विम्मी सदारंगाणी ने आमंत्रित कवि एवं श्रोताओं का स्वागत करते हुए आमंत्रित कवि का परिचय दिया। श्री करमचंदानी ने अपनी कविताओं का पाठ किया और बाद में पढ़ी गई कविताओं की चर्चा श्रोताओं के साथ भी की गई।

दायें से : विम्मी सदारंगाणी, एस.के. देव, अशोक खूबचंदानी, कलाधर मुत्वा एवं हासो ददलानी

कथासंधि - एल. प्रेमचंद्र सिंह

28 सितंबर 2016, इंफ़ाल, मणिपुर

साहित्य अकादेमी ने इंफ़ाल में 'कथासंधि' कार्यक्रम के अंतर्गत प्रख्यात मणिपुरी कथाकार और साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त एल. प्रेमचंद सिंह से भेंट हुई। 'इमेगी फंक माचेट' लघु कहानियों का संग्रह है। गौतम पॉल, सहायक संपादक, साहित्य अकादेमी ने स्वागत भाषण दिया जिसमें उन्होंने श्री सिंह का भी स्वागत किया। श्री प्रेमचंद सिंह ने कहा कि पिछले कुछ वर्षों में घटित हुई राजनीतिक एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य में लेखकों से कुछ आशा है।

कविसंधि

29 सितंबर 2016, इंफ़ाल, मणिपुर

साहित्य अकादेमी और मणिपुर राज्य कला अकादमी के संयुक्त तत्त्वावधान में एक दिवसीय 'कविसंधि' कार्यक्रम का आयोजन हुआ। श्री गौतम पॉल, सहायक संपादक, साहित्य अकादेमी ने स्वागत भाषण दिया। उन्होंने प्रतिष्ठित प्रतिभागियों का भी स्वागत किया गया।

कवि संधि कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में श्री गौतम पॉल, सहायक संपादक, साहित्य अकादेमी ने स्वागत भाषण दिया। स्वागत के अलावा कवि-संधि कार्यक्रम में आए समस्त गणमान्यों एवं प्रतिभागियों को हृदय से आभार व्यक्त किया। प्रो. एच. बेहारी सिंह, संयोजक, मणिपुरी

परामर्श मंडल, साहित्य अकादेमी ने आरंभिक वक्तव्य दिया। प्रो. सिंह ने साहित्य के सकारात्मक उपयोग के बारे में बताया। उद्घाटन सत्र में श्री के. राधाकुमार सिंह, आई.ए.एस. ने अपने विचार रखे। गणमान्यों ने कविसंधि कार्यक्रम में मणिपुर स्टेट कला अकादमी की अर्द्धवार्षिक पत्रिका का 33 वें अंक का लोकार्पण किया। इस पत्रिका के संपादक प्रो. जोधाचंद्र ने इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किए। डॉ. के. सुशीला, सचिव, मणिपुरी स्टेट कला अकादमी, इंफ़ाल ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र में कविसंधि कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रतिष्ठित कवि और साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त श्री टी. एच. इबोपिशक सिंह ने की। आर.के. भूषण, अरांबम ओंबी मेमचौबी, नाओरेम वीरेंद्रजित और क्षेत्री राजन जैसे समस्त साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त साहित्यकारों ने अपने विचार व्यक्त किए। आर.के. भूषओनसना ने कुछ मणिपुरी कविताओं का पाठ किया। नाओरेम वीरेंद्रजित ने भी कुछ कविताओं का पाठ किया। 'वाही' (शब्द) और 'लीजे ईदी' (कुछ शेष है) नाम से आपकी कविताएँ हैं। युवा कवि क्षेत्री राजन ने अपनी कुछ मणिपुरी कविताओं का पाठ किया, साथ में 'देश में देश के लिए' शीर्षक से हिंदी अनुवाद प्रस्तुत किया।

दोपहर के बाद के सत्र की अध्यक्षता के. राधाकुमार सिंह ने की। आरंभ में आपने कुछ कविताओं का पाठ किया। इस सत्र में प्रसिद्ध असमिया कवि उदयकुमार शर्मा, प्रसिद्ध बोडो कवि अरविंदो उज़ीर तथा बाङ्ला कवि श्री सुत्य सेनगुप्त ने अपनी कविताओं का पाठ किया। अध्यक्ष ने पढ़ी गई कविताओं पर अपनी टिप्पणी दी और धन्यवाद ज्ञापन किया।

कविसंधि - एन. विद्यासागर सिंह

25 अक्टूबर 2016, इंफ़ाल

साहित्य अकादेमी ने सुप्रसिद्ध मणिपुरी कवि एन. विद्यासागर के साथ इंफ़ाल, मणिपुर में 25 अक्टूबर 2016 को 'कविसंधि' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। श्री गौतम पॉल, सहायक संपादक, साहित्य अकादेमी ने कार्यक्रम का प्रारंभ करते हुए कवि एवं श्रोताओं का स्वागत किया और कहा कि इनका कविता-संग्रह 'खुङ्गोङ् अमासुंगरिफ़्यूज़ी' जिसे साहित्य अकादेमी का पुरस्कार 2014 में प्राप्त हुआ था, इसमें समाज में मानवता और देशभक्ति के लिए कवि के रुदन को बहुत ही विनम्रता से प्रतिबिंबित किया है और जहाँ मानवता और सामाजिक-राजनीतिक मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है। साहित्य अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक एवं सुप्रसिद्ध मणिपुरी विद्वान प्रो. एच. बेहारी सिंह ने कवि के सुपरिष्कृत रूप और उनके सृजनात्मक कार्य से श्रोताओं का परिचय कराया।

एन. विद्यासागर सिंह

एन. विद्यासागर सिंह ने हाल ही में प्रकाशित अपनी कुछ कविताओं का पाठ किया और कहा कि प्रकृति उन्हें कविता लिखने के लिए विभिन्न रूप से बल प्रदान करती है। मेघाच्छादित आकाश, खिले हुए फूल, फूलों के अलग-अलग रंग, हरे-भरे खेत, वसंत में कोयल की कूक, सफ़ेद सारसों का झुंड — ये सभी प्राकृतिक सुंदरता उन्हें प्रारंभ में सम्मोहित कर कविता लिखने के लिए प्रेरित करती थीं। बाद में उन्होंने आधुनिक मणिपुरी कवियों की कविताओं का पाठ किया। उन्होंने यह भी बताया कि वे बाङ्ला और अफ़्रीक़ी कवियों से प्रेरणा लेते हैं। निष्कर्षतः उन्होंने अपनी कविता में प्रकृति के प्रेम से आत्मबोध और अपनी मिट्टी से मानवता के विकास को कविता का वास्तविक उद्देश्य बताया।

कथासंधि - पी.के. परक्कदावु

26 अक्टूबर 2016, त्रिचूर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु द्वारा भाषा पोशिनी मलयालम् मनोरमा के सहयोग से 26 अक्टूबर 2016 को केरल साहित्य अकादमी ऑडिटोरियम त्रिचूर में कथासंधि कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

साहित्य अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी श्री के.पी.राधाकृष्णन ने आमंत्रित प्रसिद्ध मलयाळम् लेखक श्री परक्कदावु एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए कथासंधि कार्यक्रम के महत्त्व को रेखांकित किया। तत्पश्चात् आमंत्रित लेखक ने अपनी कहानियों का पाठ किया और अपने लेखकीय अनुभव को साझा किया। पढ़ी गई कहानियों पर श्रोताओं ने अपने विचार व्यक्त किए।

कविसंधि और कथासंधि

30 अक्टूबर 2016, मंगलोर

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा कोंकणी भाषा मंडल कर्नाटक के सहयोग से 30 अक्टूबर 2016 को वर्ल्ड कोंकणी सेंटर मंगलोर में कवि संधि और कथा संधि का आयोजन किया गया।

अकादेमी से पुरस्कृत कोंकणी कवि श्री शरतचंद्र शेनॉय ने कवि संधि कार्यक्रम में अपनी कविताओं का पाठ किया। तत्पश्चात् श्रोताओं द्वारा पढ़ी गई कविताओं पर चर्चा की गई और कवि से उनकी रचना प्रक्रिया के बारे में प्रश्न भी किए गए जिनके उत्तर कवि ने सहजता से दिए।

कवि संधि के तुरंत बाद कथा संधि कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रसिद्ध

कोंकणी कथाकार श्री एडविन डीसूज़ा को इस कार्यक्रम के लिए आमंत्रित किया गया था। इस अवसर पर श्री डीसूज़ा ने अपनी कहानी 'क्रेयन' का पाठ किया तथा अपनी रचना प्रक्रिया के बारे में भी बताया।

कार्यक्रम का उद्घाटन वर्ल्ड कोंकणी सेंटर के अध्यक्ष श्री बस्ती वामन शिनॉय ने किया। अकादेमी के सामान्य परिषद् के सदस्य श्री गोकुल दास प्रभु ने अतिथियों का स्वागत किया तथा कवि एवं कथाकार का परिचय प्रस्तुत किया। कोंकणी परामर्श मंडल की संयोजक श्रीमती गीता कीनी ने आभार व्यक्त किया।

बायें से : श्रीमती शशि ठाकुर, माधव कौशिक, के. सच्चिदानंदन, प्रेम शर्मा एवं अशोक हंस

अखिल भारतीय बहुभाषी काव्य गोष्ठी

3 सितंबर 2016, शिमला

साहित्य अकादेमी द्वारा हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी, शिमला के संयुक्त तत्त्वावधान में 3 सितंबर 2016 को गेयटी थिएटर, शिमला के सभाकक्ष में अखिल भारतीय बहुभाषी कवि सम्मिलन का आयोजन किया गया। प्रख्यात मलयाळम् कवि प्रो. के. सच्चिदानंदन ने सम्मिलन का उद्घाटन किया, जबकि चंडीगढ़ साहित्य अकादमी के उपाध्यक्ष श्री माधव कौशिक तथा भाषा एवं संस्कृति विभाग, हिमाचल प्रदेश की निदेशक श्रीमती शशि ठाकुर विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी के उपाध्यक्ष श्री प्रेम शर्मा ने की।

साहित्य अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने औपचारिक स्वागत करते हुए अकादेमी की गतिविधियों का संक्षिप्त परिचय दिया और कहा कि राज्य अकादमियों के साथ मिलकर कार्यक्रम आयोजित करने का इस तरह का प्रयास साहित्य अकादेमी निरंतर करती रही है। हिमाचल अकादेमी के सचिव श्री अशोक हंस ने भी उपस्थित विद्वानों का अभिनंदन एवं स्वागत किया।

समारोह के मुख्य अतिथि प्रो. के. सच्चिदानंदन ने भारतीय कविता के इतिहास के साथ-साथ समकालीन कविता की दशा और दिशा पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने 'रामायण' और 'महाभारत' का उदाहरण देते हुए कहा कि हर युग में कवि ने अपने समय के सामाजिक द्वंद्व, कुरीतियों, अनैतिकताओं को उजागर करते हुए शांति, सद्भाव और मानवता का संदेश दिया है। उन्होंने 'गाँधी और कविता' शीर्षक अपनी कविता का पाठ भी किया।

भारतीय कविता पर बोलते हुए श्री माधव कौशिक ने कहा कि कविता साहित्य की पहली विधा है, जिसने पूरी भारतीयता की रक्षा की है। कवि सांस्कृतिक दूत है, जो अपनी कविता के माध्यम से अपनी सांस्कृतिक विरासत को उजागर करता है। श्रीमती शशि शर्मा ने भी सभा को संबोधित किया। अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री प्रेम शर्मा ने कहा कि कविता का मूल आधार हृदय है, क्योंकि कविता भावों से, संवेदनशीलता से उत्पन्न होती है।

कवि सम्मिलन के प्रथम सत्र की अध्यक्षता उर्दू के प्रख्यात शायर श्री कृष्ण कुमार तूर ने की। इस सत्र में प्रो. के. सच्चिदानंदन (हिंदी अंग्रेज़ी अनुवाद में मलयाळम् कविताएँ), श्री माधव कौशिक (हिंदी), श्री के. आर. भारती (अंग्रेज़ी), श्री विजय वली (हिंदी अनुवाद में कश्मीरी कविताएँ), डॉ. पीयूष गुलेरी (पहाड़ी-हिमाचली) तथा श्री जाहिद अबरोल (पंजाबी एवं उर्दू) ने अपनी कविताओं का पाठ किया। द्वितीय सत्र डॉ. ओम प्रकाश सारस्वत की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें श्री जीवन नरह (हिंदी अंग्रेज़ी अनुवाद में असमिया कविताएँ), सुश्री प्रियंका वैद्य (अंग्रेज़ी), श्रीमती संदेश शर्मा (हिंदी एवं पहाड़ी), श्री टी. आर. शर्मा (हिंदी), श्री जयदेव किरण (हिंदी एवं पहाड़ी), श्री कुल राजीव पंत (हिंदी), श्री अरुणाभ सौरभ (हिंदी अनुवाद में मैथिली कविताएँ), श्री प्रशांत धांडे (हिंदी अनुवाद में मराठी कविताएँ) तथा श्री केशव शर्मा (संस्कृत) ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

डोगरी काव्य गोष्ठी

10 सितंबर 2016, जम्मू

साहित्य अकादेमी द्वारा कुँवर वियोगी ट्रस्ट, जम्मू के संयुक्त तत्त्वावधान में 10 सितंबर 2016 को अभिनव थिएटर, जम्मू में डोगरी कवि सम्मिलन का आयोजन किया गया। डोगरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. ललित मगोत्रा के संचालन में संपन्न इस कवि सम्मिलन में सुश्री उषाकिरण,

श्रीमती विजया ठाकुर, श्रीमती प्रोमिला मन्हास, श्री प्रकाश प्रेमी, श्री मोहन सिंह, श्री ज्ञानेश्वर, डॉ. निर्मल विनोद, श्री रणधीर रायपुरिया, श्री बिशन सिंह दर्दी, श्री सुशील बेगाना और श्री एन. डी. जम्वाल ने अपनी डोगरी ग़ज़लों, गीतों और कविताओं का पाठ किया। यह कवि सम्मिलन प्रतिष्ठित डोगरी कवि स्वर्गीय कुँवर वियोगी की स्मृति में आयोजित किया गया था। संचालन करते हुए प्रो. मगोत्रा ने उनकी कविताओं के कुछ विशेष पद बीच-बीच में श्रोताओं का सुनाए। प्रस्तुत रचनाएँ आधुनिक डोगरी कविता का प्रतिनिधित्व करती थीं। उपस्थित श्रोताओं ने पठित कविताओं की सराहना की।

दीप प्रज्ज्वलित करते कन्नड परामर्श मंडल के संयोजक एवं अन्य

कन्नड युवा लेखक सम्मिलन

17-18 सितंबर 2016, होनावरा

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु द्वारा कन्नड विभाग एस.डी.एम. डिग्री कॉलेज, होनावरा के सहयोग से कन्नड युवा लेखक सम्मिलन का आयोजन किया गया।

क्षेत्रीय सचिव श्री एस. पी. महालिंगेश्वर ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल के सदस्य श्री श्रीधर वलगार ने आरंभिक वक्तव्य दिया। अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. पी. चंद्रिका ने बीज-वक्तव्य दिया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता कन्नड परामर्श मंडल के संयोजक श्री नरहल्ली बालसुब्रह्मण्यम ने की तथा अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि हमें युवा पीढ़ी के साथ हमारे संबंधों के उन्नयन और अद्यतन की ज़रूरत है। उन्होंने लेखकों, कवियों और पटकथा लेखकों के बारे में भी भावनात्मक टिप्पणी की। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता एस.डी.एम. डिग्री कॉलेज के प्राचार्य प्रो. वी. एस. भट ने की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि वे वास्तव में इस तरह के कार्यक्रम की कॉलेज में मेज़बानी करके खुशी महसूस कर रहे हैं। अंत में एस.डी.एम. डिग्री कॉलेज के कन्नड विभाग के प्रशांत हेगड़े ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र कहानी पाठ का सत्र था। इस सत्र में हनुमंत हलिगेरी, श्रीदेवी केरेमाने और महंतेश नवळकाल ने अपनी कहानियों का पाठ किया तथा पढ़ी गई कहानियों पर चर्चा की गई। दूसरा सत्र नाटक पाठ का सत्र था तथा आनंद ऋग्वेदी, बेलुर रघुनंदना, प्रज्ञा मत्तीहल्ली ने अपने नाटकों का पाठ किया। तत्पश्चात् पढ़े गए नाटकों पर चर्चा हुई। तीसरा सत्र कविता पाठ का सत्र था। इस सत्र में अर्जुन गोलासांगी चांदनी, चनप्पा अंगदी, चेतना तीर्थहल्ली एवं नागराज हेगड़े ने अपनी कविताओं का पाठ किया। पढ़ी गई कविताओं पर चर्चा हुई।

दूसरे दिन के प्रथम सत्र में उपन्यास अंश का पाठ किया गया। इस सत्र में श्री चिमन हल्ली रमेश बाबू, आशा रघु एवं बी.एम. मंजुनाथ ने भाग लिया। इनके द्वारा लिखे गए उपन्यास के कुछ अंश पढ़ कर सुनाए गए, तत्पश्चात् प्रतिभागियों एवं श्रोताओं ने पढ़े गए अंश पर चर्चा में भाग लिया। पाँचवाँ सत्र कन्नड साहित्यिक आलोचना पर आधारित था जिसमें राम लिंगप्पा टी बेगुर, गीता वसंत तथा सुरेश नागलालामाडिक को आलेख पाठ के लिए आमंत्रित किया गया था। इन्होंने अपने आलेख प्रस्तुत किए। पढ़े गए आलेख पर चर्चा भी हुई।

भोजनावकाश के बाद का सत्र 'कन्नड साहित्य – एक विमर्श' का था, जिसमें पृथ्वीराज अवत्तार, वासुदेव नाडिग, एम. विजयकांत पाटिल ने भाग लिया। सत्र के अंत में पढ़े गए आलेखों पर चर्चा हुई।

समापन सत्र में प्रसिद्ध कन्नड समालोचक श्री एच. एस. राघवेंद्रराव ने समापन वक्तव्य दिया। उन्होंने अपने वक्तव्य में आज के कवियों को पेश आ रही चुनौतियों और प्रश्नों के बारे में बात की। उन्होंने कन्नड के प्रसिद्ध कवियों के उदाहरण प्रस्तुत करते हुए साहित्य में उनके योगदान के बारे में बात की। सत्र की अध्यक्षता वरिष्ठ कन्नड साहित्यकार श्री श्यामसुंदर बिदरकुंडी ने की। एस.डी.एम. डिग्री कॉलेज के प्रो. शारदा भट् ने धन्यवाद ज्ञापन किया। इस अवसर पर साहित्य अकादेमी के प्रकाशनों की एक पुस्तक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया।

नेपाली कवि सम्मिलन

22 अक्टूबर 2016, वाराणसी

साहित्य अकादेमी द्वारा श्री विद्याधर्म प्रचारिणी नेपाली समिति, वाराणसी के संयुक्त तत्त्वावधान में 22 अक्टूबर 2016 को 'नेपाली कवि सम्मिलन' का आयोजन किया गया था, जिसकी

नेपाली काव्य पाठ कार्यक्रम के प्रतिभागियों का एक दृश्य

अध्यक्षता अकादेमी में नेपाली परामर्श मंडल के संयोजक श्री प्रेम प्रधान ने की। इस अवसर पर सर्वश्री जीवन नामदुंग, भूपेंद्र अधिकारी, सी. के. राई, जीवन राणा, शिवप्रसाद पौड्याल और हरि अधिकारी तथा श्रीमती शांति छेत्री एवं सुश्री मोनिका राणा ने अपनी नेपाली कविताओं का पाठ किया। पठित कविताओं में देशभक्ति के आलोड़न के साथ-साथ समकालीन जीवन के विविध पक्षों का उद्घाटन किया गया था। स्त्री जीवन तथा नेपाली समाज की समस्याओं के साथ समकालीन समय की विडंबनाओं का भी सफल चित्रण कविताओं में था, जिसे उपस्थित श्रोताओं ने काफ़ी पसंद किया। कार्यक्रम का संचालन श्री सी. के. राई ने किया जबकि अंत में औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन समिति के सचिव श्री विजय कुमार श्रेष्ठ ने किया।

स्वच्छता पखवाड़ा

28 सितंबर 2016, चेन्नै

अकादेमी के उपक्षेत्रीय कार्यालय चेन्नै द्वारा 16 से 30 सितंबर 2016 तक 'स्वच्छता पखवाड़ा' का आयोजन किया गया। इस अवसर पर 28 सितंबर 2016 को प्रख्यात चिकित्सक एवं लेखक डॉ. अनैवरी आनंदन को विशेष व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया गया। कार्यालय प्रभारी श्री ए. एस. इलंगोवन ने आमंत्रित अतिथि एवं सहयोगियों का स्वागत किया। डॉ. आनंदन ने साफ़-सफ़ाई और गतिविधियों की सभी सतह पर स्वच्छता की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने खुले में शौच मुक्त भारत एवं पर्यावरण संरक्षण की दिशा में कार्य करने पर अपने विचारों को साझा किया।

कार्यशाला - आधिकारिक भाषा के रूप में हिंदी का उपयोग

27 अक्टूबर 2016, चेन्नै

साहित्य अकादेमी के उपक्षेत्रीय कार्यालय चेन्नै द्वारा 'आधिकारिक भाषा के रूप में हिंदी का उपयोग' विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के राजभाषा निदेशक श्री वेद प्रकाश गौड़ को आमंत्रित किया गया था। कार्यालय प्रभारी श्री ए.एस. इलंगोवन ने आमंत्रित अतिथियों एवं सहयोगियों का स्वागत किया। श्री वेद प्रकाश गौड़ ने सभी अंतर कार्यालय पत्राचार में धीरे-धीरे हिंदी को लागू करने के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने कर्मचारियों को यह भी सलाह दी कि हिंदी का अभ्यास करने के लिए सरकारी दस्तावेज़ों और काग़ज़ात पर हस्ताक्षर करें, लिफ़ाफ़े पर पते, तथा नाम पट्टिका में हिंदी का प्रयोग करें। उन्होंने कर्मचारियों को केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा संचालित प्रबोध, प्रवीण, प्रज्ञा जैसी हिंदी परीक्षाओं में बैठने तथा इन परीक्षाओं के उत्तीर्ण होने के बाद कर्मचारियों को मिलने वाले आर्थिक लाभ की भी जानकारी दी। कार्यालय प्रभारी के धन्यवाद ज्ञापन से कार्यशाला समाप्त हुआ।

तेलुगु में बाल लेखन कार्यशाला

3-4 सितंबर 2016, सिरसिला, तेलंगाना

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु द्वारा रंगिनेनी सुजाता मोहन राव एजुकेशन एवं चैरिटेबल ट्रस्ट सिरसिला के सहयोग से 3-4 सितंबर 2016 को 'तेलुगु में बाल लेखन' विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर करीम नगर जनपद के विभिन्न स्कूलों के लगभग 280 छात्र सम्मिलित हुए।

अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. एन. गोपी ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। नेशनल बुक ट्रस्ट के संपादक श्री पट्टिपका मोहन ने आरंभिक वक्तव्य दिए। रंगिनेनी संस्था की अध्यक्ष श्री रंगिनेनी मोहन राव विशिष्ट अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। क्षेत्रीय सचिव श्री एस. पी. महालिंगेश्वर ने अतिथियों का स्वागत किया तथा सम्मानित अतिथियों को मंच पर आमंत्रित किया।

प्रो. एन. गोपी ने कहा कि बच्चों के मानसिक विकास के लिए बाल साहित्य का होना ज़रूरी है। यद्यपि वर्तमान में पढ़ने की प्रवृत्ति कम हुई है। श्री पट्टिपका मोहन ने कार्यशाला के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि इस तरह का इतने उच्च स्तर पर पहली बार कार्यशाला का आयोजन सराहनीय क़दम है। यह एक सुखद आश्चर्य है कि कार्यक्रम का आरंभ

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते प्रो. एन. गोपी

सिरसिला से हो रहा है जहाँ से सी. नारायण रेड्डी, गुदुरी सीताराम और अन्य कवि आए। उन्होंने कहा कि दो दिन की कार्यशाला में विषय के विशेषज्ञ कहानियों, कविताओं और अन्य साहित्यिक विधाओं पर बात करेंगे तथा रात के ख़ाली समय में बच्चे उसके अनुसार कहानी लिखेंगे।

दूसरे दिन बारह छात्रों के समूह में विषय विशेषज्ञ ने बच्चों से चर्चा कर उनके संदेहों का निवारण किया। अंत में कार्यशाला के प्रतिभागियों ने अपना लेखन प्रस्तुत किया तथा दूसरे विशेषज्ञ ने अपने सुझाव और सलाह दिए।

विशिष्ट अतिथि श्री रंगिनेनी मोहन राव ने कहा कि जैसा कि श्री एन. गोपी ने सुझाव दिया है, ट्रस्ट के माध्यम से बच्चों के साहित्य के लिए एक पुरस्कार की स्थापना की जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि रंगिनेनी ट्रस्ट छात्रों के शारीरिक और मानसिक विकास के लिए जो भी कार्यक्रम होंगे, आगे आएगा। प्रसिद्ध बाल साहित्यकार श्री वसाला नरसैया ने कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम पूरे भारत वर्ष में किया जाना चाहिए।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध बाल साहित्यकार श्री भोपाल ने की। बाल साहित्यकार श्री चोककपू वेंकटरमण, श्री दसरी वेंकटरमण, श्री तिरुनगरी वेदांत सुरी, सुश्री अकेला वेंकट सुब्बलक्ष्मी, श्री पेंडम जगदीश्वर, श्री एस.के. अब्दुल हकीम ज्ञानी और श्री पिदीमरी रामकृष्णन ने कार्यक्रम में भाग लिया तथा बाल लेखन के प्रति जागरुक किया।

भोजनावकाश बाद के सत्र की अध्यक्षता विख्यात बाल कवि श्री माल्याश्री ने की। प्रसिद्ध बाल लेखक श्री वी.आर. शर्मा, श्रीमती कदेपी रानी प्रसाद, श्री दरला बुज्जी बाबू, श्री एस. रघु, श्री पेंडोरा वेंकटेश्वरलु, श्री वसरावेली परश रामुलु ने कार्यक्रम में भाग लिया और बाद में कविता लेखन के बारे में बात की।

कार्यशाला के दूसरे दिन प्रतिभागियों को बारह-बारह के दो समूह में विभाजित कर एक समूह को कहानी पर तथा दूसरे समूह को कविता पर बात करने के लिए कहा गया। बारह विशेषज्ञों ने भाग लिया तथा युवा कवियों/लेखकों के संदेहों को दूर किया।

प्रो. एन. गोपी ने समापन सत्र की अध्यक्षता की और सुझाव दिया कि कार्यशाला में अंतिम रूप दी गई रचनाओं को रंगिनेनी ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित किया जाए। क्षेत्रीय सचिव ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

लेखक से भेंट - वंशीधर षड़ंगी

10 सितंबर 2016, भुवनेश्वर

साहित्य अकादेमी द्वारा 10 सितंबर 2016 को के. एम.मुंशी हॉल, भारतीय विद्या भवन, भुवनेश्वर में प्रतिष्ठित ओडिया कवि वंशीधर षड़ंगी के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

अकादेमी के सहायक संपादक श्री गौतम पाल ने श्री षड़ंगी का स्वागत किया और सभा को उनकी कविताओं की विशेषता बताई। ओडिया परामर्श मंडल के संयोजक श्री गौरहरि दास ने अपने परिचयात्मक उद्बोधन में वंशीधर षड़ंगी को विश्वास एवं विरासत का कवि कहा। श्री गौरहरि दास ने कहा कि समकालीन ओडिया कविता में श्री षड़ंगी का योगदान अत्यंत विशाल है। वे आध्यात्मिक एकीकरण के कवि हैं।

श्री षड़ंगी ने अपने वक्तव्य में कहा कि उनके जीवन और कविता में कोई भेद नहीं है। उन्होंने कविताओं के माध्यम से आत्मकथा का लेखन किया। 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम के अंतर्गत चुनिंदा श्रोताओं के बीच श्री षड़ंगी ने अपने जीवन और कविताओं के बारे में विस्तार से बताया। अपनी काव्य-यात्रा के बारे में श्री षड़ंगी

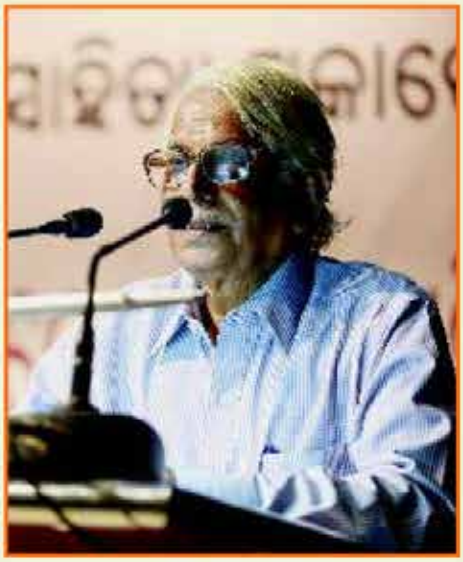

श्री वंशीधर षड़ंगी

ने बताया कि मेरे बाबा ने मुझे कविताएँ लिखने के लिए प्रेरित किया। जब मैं सातवीं कक्षा में था तभी से हस्तलिखित पत्रिका निकालनी शुरू कर दी थी। अपने आरंभिक जीवन के बारे में बताते हुए उन्होंने काफ़ी भावुक भाषण दिया। उन्होंने कहा कि जब वे हाईस्कूल में थे तब से आधुनिक ओडिया कवि के पथप्रदर्शक सचि राउत जी से प्रेरित हुए। अपने कॉलेज के दिनों में उन्होंने सहपाठियों का एक समूह बनाया जो ओडिया कवियों के नक्षत्रों का समूह था। मेरे सहपाठी सुभग्य कुमार मिश्र और हरिहर मिश्र, हरप्रसाद दास, देवदास छोत्रे, ज्ञानेश्वर मिश्र, ये सभी निपुण कवि एवं लेखक हैं। यह समय ओडिया कविता का स्वर्ण युग था। उन्होंने सभी के बारे में और उनके कविता-संग्रह के बारे में बात की। वे रमाकांत रथ और गुरु प्रसाद मोहंती से शुरुआती दिनों में प्रेरित हुए।

श्री षड़ंगी ने अपनी कई कविताओं का पाठ भी किया। तत्पश्चात् श्रोताओं ने अपने प्रश्न पूछे जिसका उत्तर कवि ने बड़े साधारण ढंग से दिया। कार्यक्रम में काफ़ी संख्या में श्रोता उपस्थित हुए। ओडिया परामर्श मंडल के सदस्य श्री पीटाबस राउतराय ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

लेखक से भेंट - दुर्गा प्रसाद श्रेष्ठ

22 अक्टूबर 2016, वाराणसी

साहित्य अकादेमी द्वारा श्री विद्याधर्म प्रचारिणी नेपाली समिति, वाराणसी के संयुक्त तत्त्वावधान में 22 अक्टूबर 2016 को नेपाली के सुपरिचित कथाकार, संपादक और अनुवादक श्री दुर्गा प्रसाद श्रेष्ठ के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने कार्यक्रम की परिकल्पना के बारे में बताया तथा श्री श्रेष्ठ का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया। हिंदी और नेपाली दोनों भाषाओं में समान रूप से लेखन,

श्री दुर्गा प्रसाद श्रेष्ठ

अनुवाद करने वाले श्री श्रेष्ठ ने अपना संपूर्ण जीवन साहित्य को समर्पित कर दिया। 1986 से निरंतर नेपाली पत्रिका 'उदय' के संपादन-प्रकाशन से संबद्ध श्री श्रेष्ठ नेपाल में निर्मित प्रथम नेपाली फ़िल्म की पटकथा, संवाद लेखन एवं निर्देशन में भी सहयोगी रहे।

इस अवसर पर श्री दुर्गा प्रसाद श्रेष्ठ ने अपनी साहित्यिक यात्रा पर प्रकाश डाला। उन्होंने अपने साहित्यिक गुरुओं श्री रुद्र काशिकेय, भैयाजी बनारसी और धर्मवीर भारती का उल्लेख किया। अपने पिता प्रतिष्ठित नेपाली साहित्यकार श्री काशी बहादुर श्रेष्ठ की प्रेरणा और शिक्षा का भी उन्होंने स्मरण किया तथा कहा कि उनके द्वारा आरंभ की गई पत्रिका का निरंतर प्रकाशन करके वे उन्हें गुरु दक्षिणा दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि अपनी रचनाओं में वे नेपाली समाज के दुख-दर्द को उकेरने का सतत प्रयास करते रहे हैं। उन्होंने इस अवसर पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर भी दिए।

अंत में अकादेमी के नेपाली भाषा परामर्श मंडल के संयोजक श्री प्रेम प्रधान ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन करते हुए श्री दुर्गा प्रसाद श्रेष्ठ के साहित्यिक अवदान और महत्त्व को रेखांकित किया।

लोक : विविध स्वर

10 सितंबर 2016, भुवनेश्वर

साहित्य अकादेमी क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा 10 सितंबर 2016 को के.एम. मुंशी सभागार, भारतीय विद्या भवन, भुवनेश्वर में 'लोक : विविध स्वर' कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसके अंतर्गत ओडिया लोकगीत 'संचार' की प्रस्तुति के लिए अलेख साहू और उनके साथियों को आमंत्रित किया गया।

कार्यक्रम के आरंभ में अकादेमी के सहायक

ओड़िया लोकगीत 'संचार' प्रस्तुत करते श्री आलेख साहू और उनके साथी

संपादक श्री गौतम पॉल ने समस्त कलाकारों का स्वागत किया और कार्यक्रम की प्रमुख झलकियों के बारे में श्रोताओं को बताया। लोक परंपराओं के अन्वेषक और ओड़िया सलाहकार मंडल के सदस्य डॉ. द्वारिकानाथ नायक ने 'संचार' के उद्भव एवं विकास के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने प्रदर्शित कला के बारे में, कलाकारों के निर्माण एवं लोककला के मूल ग्रंथों के संदर्भ में विस्तार से बात की। पूरी रात गाँव की गलियों में कला की प्रस्तुति होती रही। खुले प्रांगण में सैकड़ों और हज़ारों लोग इस उत्कृष्ट प्रदर्शित कला के साक्षी बने। यह कला ओडिशा के पश्चिमी भाग में प्रचलित 'संचार' नामक लोककथा पर आधारित थी। संचार का बुनियादी अर्थ संप्रेषण है, जो ओडिया कविता के तत्त्वों और विवेचनाओं को वास्तविक रूप से जनता के समक्ष प्रस्तुत करती है। भुवनेश्वर के श्रोताओं ने इस परंपरागत कला का स्वाद लिया।

अलेख साहू और उनके साथी जैमदर बेहरा और हीराधर नायक ने 'संचार' का संक्षिप्त रूप का भुवनेश्वर के लेखकों और विद्वानों के सामने प्रस्तुति किया। अलेख साहू प्रतिष्ठित लोक कलाकार हैं। आप यायावर और प्रसिद्ध तालवादक हैं। उनमें एक साथ संगीत, नृत्य, कविता, नाटकीय-मंच, व्याख्यान कौशल के तत्त्व मौजूद हैं।

संचार के मुख्य नायक ने मृदंग बजाया, गायन की भी प्रस्तुति की और सबका अर्थ भी बताया। अनेक लेखकों एवं विद्वानों ने कार्यक्रम में भाग लिया। डॉ. विजयानंद सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

लोक : विविध स्वर

26 सितंबर 2016, ककचिंग, मणिपुर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा 'लोक : विविध स्वर' नामक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में लोक स्वर की विभिन्न झलकियों की प्रस्तुति हुई जिनमें गायन एवं नृत्य की प्रस्तुति हुई। काकचिंग एवं काकचिंग कुखनऊ हराबो के नाम से लोकगायन एवं लोकनृत्य की प्रस्तुति हुई, यह कार्यक्रम 26 सितंबर 2016 को काकचिंग, इंफ़ाल में आयोजित हुआ। कार्यक्रम के आरंभ में श्री गौतम पॉल, सहायक संपादक, साहित्य अकादेमी ने प्रतिभागियों का स्वागत किया। अकादेमी अपनी सांस्कृतिक जड़ों की तलाश देश के दूरदराज विभिन्न क्षेत्र विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करके करती है।

मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक एच. बेहारी सिंह ने लोक कलाकारों का परिचय दिया। डॉ. लोकेंद्र अराबाम, लोक कलाकार और नाट्य लेखकों के लेखन का मणिपुरी समाज पर पड़ने वाले अद्वितीय प्रभाव पर व्याख्यान दिया। 'लाई हरोबा' नामक कार्यक्रम में विभिन्न प्रकार के 12 कार्यक्रमों का आयोजन विभिन्न चरणों में किया गया। इनमें 26 कलाकारों ने अपनी कला को प्रस्तुति किया।

नवनीता देव सेन द्वारा कहानी पाठ

25 सितंबर 2016, पथभवन, कोलकाता

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा 23 सितंबर 2016 को पथभवन, कोलकाता में नवनीता देवसेन द्वारा बाल साहित्य का कहानी पाठ का आयोजन किया गया। अंग्रेज़ी भाषा के परामर्श मंडल के सदस्य श्री अवीक मजूमदार ने बच्चों के सामने अकादेमी का परिचय दिया। श्री मजूमदार ने कार्यक्रम के उद्देश्य के बारे में बताया और कहा कि इस समय जब युवाओं के दिमाग़ पर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया छाया हुआ है ऐसे में बाल साहित्य और उनके लेखकों की वहाँ तक पहुँच एक बड़ी चुनौती है। उन्होंने अपने बचपन के बारे में बताते हुए कहा कि अपने प्रिय लेखकों से मिलना लगभग असंभव है।

उन्होंने आगे कहा कि प्रोफ़ेसर नवनीता देवसेन न केवल शिक्षाविद् हैं बल्कि कवयित्री, कहानीकार, उपन्यासकार हैं और यात्रा-वृत्तांत, युवाओं और बच्चों के लिए भी आपने लिखा है। महिलाओं के विभिन्न मुद्दे आपकी रचनाओं में निहित रहते हैं। प्रो. देवसेन कई दशकों से अपने पाठकों को मोहित करती रही हैं। आपकी कहानियों का क्षेत्र काफ़ी व्यापक है इसमें हास्य से लेकर रोमांच और अध्यात्म से लेकर भौतिक तत्त्वों का समावेश है। प्रो. देवसेन रचनात्मक आलोचना के अग्रणी पंक्ति की लेखिका हैं। प्रतिष्ठित लेखकों ने भी पथभावन के अध्यापकों की प्रशंसा की क्योंकि वे अपने विद्यार्थियों को स्वतंत्र रूप से सोचने के लिए प्रोरित करती हैं।

व्यक्ति एवं कृति - सुभाष क्षेत्री

11 सितंबर 2016, सितांग, प. बंगाल

साहित्य अकादेमी द्वारा गीतांजलि साहित्य संस्थान के सहयोग से सार्वजनिक भवन में 11 सितंबर 2016 को 'व्यक्ति एवं कृति' कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें प्रसिद्ध कलाकार श्री सुभाष क्षेत्री को आमंत्रित किया गया था। उन्होंने भानुभक्त के रामायण और इंद्र बहादुर राय और अन्य समकालीन की कुछ किताबों के बारे में बताया जिन पुस्तकों ने उन्हें प्रभावित किया। इस अवसर पर भारी संख्या में छात्र, लेखक, कवि उपस्थित थे।

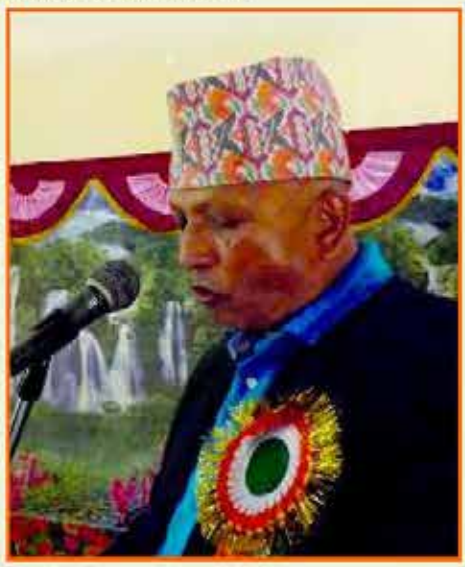

सुभाष क्षेत्री

अंतरराष्ट्रीय अनुवाद दिवस के अवसर पर आयोजित परिसंवाद

अनुवाद : बहुसांस्कृतिक चुनौतियाँ

30 सितंबर 2016, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा अंतरराष्ट्रीय अनुवाद दिवस पर 'अनुवाद एवं बहुसांस्कृतिक चुनौतियाँ' विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन किया गया। उद्घाटन सत्र में अपने बीज वक्तव्य में प्रख्यात विद्वान अवधेश कुमार सिंह ने कहा कि हमें अपने देश में अनुवाद की बेहद प्राचीन और महत्त्वपूर्ण परंपरा और उसके इतिहास को विधिवत् सामने लाना होगा। उन्होंने आगे कहा कि अनुवाद का महत्त्व इतना ज़्यादा है कि वह पूरे महाद्वीप के सांस्कृतिक परिवेश को भी बदल सकता है। अपनी बात की पुष्टि के लिए उन्होंने बौद्ध ग्रंथों के अनुवाद और उनके प्रभाव से चीन, जापान, कोरिया में बौद्ध संस्कृति के प्रसार की जानकारी प्रस्तुत की। उन्होंने नारद, कुमारजीवी और दारा शिकोह को भारत के अनुवाद इतिहास की महत्त्वपूर्ण कड़ियाँ बताते हुए भारत के लिए एक अलग अनुवाद दिवस तय किए जाने की ज़रूरत पर बल दिया।

कार्यक्रम के प्रारंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि अनुवाद मानवीय सभ्यता की बुनियादी ज़रूरत रही है और वर्तमान में भी इसकी स्वीकार्यता को नकारा नहीं जा सकता। उन्होंने कहा कि अनुवाद केवल शब्दों का ही नहीं होता बल्कि उसके साथ सांस्कृतियाँ भी अनुदित होती हैं। अनुवाद के अभाव में हमारी दुनिया बहुत छोटी और सीमित होती। उन्होंने साहित्य अकादेमी द्वारा 24 भारतीय भाषाओं में अनुवाद के लिए की जा रही महत्त्वपूर्ण परियोजनाओं के बारे में विस्तार से बताया।

उद्घाटन व्याख्यान देते हुए प्रख्यात बाङ्ला लेखक सुकांत चौधुरी ने कहा कि भारत जैसे बहुभाषी देश में अनुवाद एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। अनुवाद की भाषा के रूप में अंग्रेज़ी की स्वीकार्यता पर उन्होंने कहा कि विश्व साहित्य

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

कई भाषा में लिखा जाता है लेकिन सामान्यतः उसे अंग्रेज़ी या अन्य किसी एक दो भाषा में पढ़ पाना संभव है। यह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अनुवाद की राजनीति को भी प्रदर्शित करता है।

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि अनुवाद मूल लेखन से भी कठिन कार्य है। आज इस अवसर पर हमें उन महान अनुवादकों को याद करना चाहिए जिन्होंने अपना जीवन अनुवाद के लिए अर्पित कर दिया। उन्होंने भारत में अनुवाद के इतिहास जो कि पहली शताब्दी से शुरू होकर भक्तिकाल से लेकर अंग्रेज़ी राज्य तक पहुँचता है, के बारे में महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ दीं। जिन्होंने कहा कि सांस्कृतिक अनुवाद करते समय हमें मिथकों, प्रतीकों, संस्कारों और परंपराओं से संबंधित शब्दों को अनुवाद करते समय विशेष सावधानी बरतनी चाहिए। नहीं तो हम दिगंबर या हनुमान शब्दों के अर्थों को दूसरी संस्कृति तक पहुँचाने में असफल रहेंगे। उन्होंने स्पष्ट किया कि ग्लोबल शब्द व्यापार से प्रेरित है और सही मायनों में ग्लोबल विलेज की अवधारणा अनुवाद के सहारे ही पूरी हो पाएगी। हमें अपने अनुवादकों के प्रति अपने आदर भाव को और बढ़ाना होगा।

'बहुभाषी समाज में अनुवाद : चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ' विषय पर आधारित दूसरे सत्र की अध्यक्षता एच. एस. शिवप्रकाश ने की और एन. कल्याण रमन तथा शाफ़े क़िदवई ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। एन. कल्याण रमन का आलेख भारत में अंग्रेज़ी अनुवाद की स्थिति पर केंद्रित था। उन्होंने अनुवाद के प्रसार आदि में प्रकाशकों की भूमिका को भी रेखांकित किया।

'संस्कृति का अनुवाद' विषयक द्वितीय सत्र, जिसकी अध्यक्षता मालाश्री लाल ने की, में जीतेंद्र के. नायक ने 'ओड़िया में शेक्सपीयर के नाटक के अनुवाद', देवेंद्र चौबे ने अपने अनुवाद के अनुभवों को साझा करते हुए यह समझाने का प्रयास किया कि किस प्रकार एक अनुवादक अनुवाद की प्रक्रिया में एक राष्ट्र के उन तथ्यों एवं संदर्भों का अनुवाद करता है जिससे कि संबंधित देश और उसकी संस्कृति को समझा जा सके। चंद्रकांत पाटील ने मराठी में हुए सांस्कृति अनुवादों की चर्चा की। हर सत्र के बाद उपस्थित श्रोताओं ने प्रस्तुत आलेखों पर अपने सवाल रखे और संक्षिप्त टिप्पणियाँ भी प्रस्तुत की।

नए प्रकाशन

असमिया

कैनडिड
ले. वोल्टायर, अनु. रेहान शाह
पृ. 122 रु. 110/-
ISBN 978-81-260-

जनजातीय साधु (लोककथा संग्रह)
सं. एवं सं. बीरेंद्र कुमार भट्टाचार्य
पृ. 106 रु. 110/-
ISBN 978-81-260-0201-6 (पुनर्मुद्रण)

बाङ्ला

बाङ्ला एकांक नाट्य संग्रह
सं. एवं सं. अजित कुमार घोष
पृ. 560 रु. 210/-
ISBN 978-81-260-2670-8 (पुनर्मुद्रण)

बाङ्ला गल्प संकलन (खंड 1)
सं. एवं सं. असित कुमार बंद्योपाध्याय एवं अजित कुमार घोष
पृ. 244 रु. 130/-
ISBN 978-81-260-2655-5 (पुनर्मुद्रण)

ज्योतिर्मयी देवी (विनिबंध)
ले. सुदक्षिणा घोष
पृ. 124 रु. 50/-
ISBN 978-81-260-5159-5

नट सम्राट (अ.पु. मराठी उपन्यास)
ले. वी.वी. शिर्वाडकर, अनु. जगत देवनाथ
पृ. 96 रु. 80/-
ISBN 978-81-260-5156-4

पर्वा
ले. एस.एल.भैरप्पा,
अनु. पुष्पा मिश्र तथा कनिका बोस
पृ. 564 रु. 240/-
ISBN 978-81-260-3377-5 (पुनर्मुद्रण)

सत्येंद्रनाथ दत्ता (विनिबंध)
ले. आलोक राय
पृ. 96 रु. 50/-
ISBN 978-81-260-2501-5 (पुनर्मुद्रण)

विभूति भूषण बंद्योपाध्याय (विनिबंध)
ले. सुनील कुमार चट्टोपाध्याय
पृ. 96 रु. 50/-
ISBN 978-81-260-1507-8 (पुनर्मुद्रण)

अंग्रेज़ी

हिस्ट्री ऑफ़ असमीज़ लिट्रेचर
ले. बिरिंची कुमार बरुआ
पृ. 210 रु. 80/-
ISBN 978-81-260-2640-1 (पुनर्मुद्रण)

मिसिंग फोक टेल्स (नाटक संग्रह)
सं. एवं. सं. तबू तेड
पृ. 184 रु. 110/-
ISBN 978-81-260-5155-7 (पुनर्मुद्रण)

द टावर एंड द सी
सं. एवं सं. चिनमय गुहा
पृ. 364 रु. 170/-
ISBN 978-81-260-2640-1 (पुनर्मुद्रण)

हिंदी

आदिम बस्ती (पुरस्कृत नेपाली कविता-संग्रह)
ले. मन प्रसाद सुब्बा, अनु. बीना क्षत्रिय
पृ. 119, रु. 145/-
ISBN 978-81-260-5076-5

आँख हीये रा हरियल सपना
(पुरस्कृत राजस्थानी कृति)
ले. आईदान सिंह भाटी
पृ. 140, रु. 125/-
ISBN 978-81-260-5065-8

अब मुझे सोने दो (मलयाळम् कृति)
ले. पी.के. बालकृष्णन, अनु. जी. गोपीनाथन
पृ. 180, रु. 140/-
ISBN 978-81-260-5071-0

अंबिका प्रसाद वाजपेयी (विनिबंध)
ले. कुमुद शर्मा
पृ. 104, रु. 50/-
ISBN 978-81-260-5104-5

फिनिक्स की राख से उगा मोर...
(मराठी कहानी संग्रह)
ले. जयंत पवार, अनु. प्रकाश भातंब्रेकर
पृ. 172, रु. 150/-
ISBN 978-81-260-5064-2

घर (पुरस्कृत डोगरी काव्य-संग्रह)
लेखक : कुंवर वियोगी, अनु. छत्रपाल
पृ. 48, रु. 70/-
ISBN 978-81-260-5194-6

क्रांति कल्याण (पुरस्कृत कन्नड उपन्यास)
ले. बी.पुट्टा स्वामी, अनु. एन.डी. कृष्णमूर्ति
पृ. 328, रु. 200/-
ISBN 978-81-260-5083-3

महाकंबनी (पुरस्कृत पंजाबी कृति)
ले. दर्शन बुट्टर, अनु. राजेंद्र तिवारी
पृ. 136, रु. 130/-
ISBN 978-81-260-5059-8

ओ.एन.वी. कुरूप की प्रतिनिधि कविताएँ
अनु. पी. लता
पृ. 122, रु. 145/-
ISBN 978-81-260-5078-5

प्रतिनिधि नेपाली कहानियाँ
सं. दुर्गा प्रसाद श्रेष्ठ
पृ. 158, रु. 125/-
ISBN 978-81-260-5074-1

रामकुमार वर्मा (हिंदी विनिबंध)
ले. कृष्ण चंद लाल
पृ. 122, रु. 50/-
ISBN 978-81-260-5073-4

सुमित्र कुमारी सिन्हा (हिंदी विनिबंध)
ले. अमिताभ राय
पृ. 144, रु. 50/-
ISBN 978-81-260-5182-3

ओड़िया

अस्पृश्य (अ.पु. मराठी उपन्यास उचलया)
ले. लक्ष्मण गायकवाड, अनु. अर्जुन सत्पथी
पृ. 216 रु. 140/-
ISBN 978-81-260-2445-2 (पुनर्मुद्रण)

जगनमोहन लाल चयनिका
सं. एवं सं. बिजयनंद सिंह
पृ. 264 रु. 240/-
ISBN 978-81-260-5017-8

सास्वत विवेकानंद एका संकलन
सं. एवं सं. स्वामी लोकेश्वरानंद
अनु. श्रीनिवास मिश्र
पृ. 344 रु. 250/-
ISBN 978-81-260-5028-4

मैथिली

विद्यापति गीत रत्नावली (मैथिली काव्य संग्रह)
सं. एवं सं. बीना ठाकुर
पृ. 112 रु. 100/-
ISBN 978-81-260-5032-1

मणिपुरी

फुंगवारी शिंगबुल
सं. एवं सं. बी. जयंत कुमार सरमा
पृ. 304 रु. 150/-
ISBN 978-81-260-2911-2 (पुनर्मुद्रण)

थबलगी चीना (अ.पु. पंजाबी कहानी संग्रह)
ले. कर्तार सिंह दुग्गल, अनु. सुबराम
पृ. 120 रु. 160/-
ISBN 978-81-260-2911-2 (पुनर्मुद्रण)

गुजराती

अमृतलाल नागर (विनिबंध)
ले. श्रीलाल शुक्ल
अनु. आलोक गुप्त एवं गार्गी शाह
पृ. 120, रु. 50/-
ISBN 978-81-260-5791-5

मराठी

आरोग्य निकेतन (अ.पु.)
ले. ताराशंकर बंद्योपाध्याय
अनु. श्रीपद जोशी
पृ. 396, रु. 200/-
ISBN 978-81-260-1050-9 (पुनर्मुद्रण)

अमृत आणि विष (अ.पु. हिंदी उपन्यास)
ले. अमृतलाल नागर
अनु. उर्मिला जावडेकर
पृ. 524, रु. 250/-
ISBN 978-81-7201-283-7

कार्मेलिन (अ.पु. कोंकणी उपन्यास)
ले. दामोदर मावजो
अनु. नरेश कवडी
पृ. 248, रु. 185/-
ISBN 978-81-260-5171-7 (पुनर्मुद्रण)

जीवी
ले. पन्नालाल पटेल, अनु. आनंदी बाई शिर्के
पृ. 216, रु. 150/-
ISBN 978-81-260-1050-9 (पुनर्मुद्रण)

प्रेमचंद : लेखनीचे शेळदार
(अ.पु. हिंदी आत्मवृत्त)
ले. अमृत राय, अनु. बलवंत जेउरकर
पृ. 692, रु. 375/-
ISBN 978-81-260-4926-4

सत शिखरे
ले. अख़्तर मोहिउद्दीन, अनु. दत्ता भगत
पृ. 56, रु. 125/-
ISBN 978-81-260-5127-4 (पुनर्मुद्रण)

वान हांसी (कालजयी कृति)
ले. इब्सन, अनु. मामा वारेरकर
पृ. 140, रु. 125/-
ISBN 978-81-260-5127-4 (पुनर्मुद्रण)

तमिढ़

कविगनार बाला (विनिबंध)
ले. सी. सेतुपति
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN 978-81-260-5196-4

किझक्कू - मर्कू (खंड II)
ले. सुनील गंगोपाध्याय
अनु. एम. रामलिंगम
पृ. 1048, रु. 750/-
ISBN 978-81-260-5195-3

मोहना ओ मोहना मातृम सिला कवियइगल
(अ.पु. तेलुगु कविता)
ले. के. शिवारेड्डी
अनु. शांता दत्त
पृ. 112 रु. 90/-
ISBN 978-81-260-5197-7

पैयन कथइगल (अ.पु. मलयाळम् कहानी-संग्रह)
ले. वदक्के के. नारायणकुट्टी नायर
अनु. एम. कैला सेलवन
पृ. 752, रु. 365/-
ISBN 978-81-260-5014-7

पुदुचेरी मरबू कविगनरकलिन कविथई थोगुप्पू
(पांडिचेरी की बीसवीं सदी का पारंपरिक कविताओं का संग्रह), सं. आर. संबथ
पृ. 272, रु. 150/-
ISBN 978-81-260-5006-2

तमिळ इलक्किया वरलारु
(तमिढ़ साहित्य का इतिहास)
ले. मू. वरदरासन
पृ. 456, रु. 180/-
ISBN 81-7201-164-4 (पुनर्मुद्रण)

तेलुगु

नोरी नरसिम्हा शास्त्री (विनिबंध)
ले. अक्किराजु रमापति राव
पृ. 96, रु. 50/-
ISBN 978-81-260-5154-0

पुरीपंडा अप्पलास्वामी (विनिबंध)
ले. पुन्नामिराजू नागेश्वर राव
पृ. 120, रु. 50/-
ISBN 978-81-260-5148-9

थलपरगडा विश्वसुंदरम (विनिबंध)
ले. वसा प्रभावती, पृ. 96, रु. 50/-
ISBN 978-81-260-5150-2

वज्झला चिन्ना सीतारामस्वामी (विनिबंध)
ले. ए. गोपाल राव, पृ. 88, रु. 50/-
ISBN 978-81-260-5149-6

सितंबर-अक्टूबर 2016 के साहित्यिक आयोजन

सितंबर 2016

3 सितंबर 2016	सिरसिला, तेलंगाना	प्रसिद्ध तेलुगु लेखक एवं आलोचक डॉ. तिरुमला श्रीनिवासचार्य से 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन।
3 सितंबर 2016	मुंबई	कन्नड विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय के सहयोग से 'साहित्य मंच' का आयोजन।
3 सितंबर 2016	शिमला	हिमाचल एकेडमी ऑफ़ आर्ट, कल्चर एंड लैंग्वेजेज़ के सहयोग से 'अखिल भारतीय बहुभाषी कवि गोष्ठी' का आयोजन।
3-4 सितंबर 2016	कारगिल, लद्दाख़	जम्मू एंड कश्मीर एकेडमी ऑफ़ आर्ट, कल्चर एंड लैंग्वेजेज़ के सहयोग से 'जम्मू एवं कश्मीर जनजातीय भाषा सम्मिलन' का आयोजन।
3-4 सितंबर 2016	सिरसिला, तेलंगाना	रेंगिनेनी सुजाता मोहन राव एजुकेशन एंड चैरिटेबल ट्रस्ट के सहयोग से 'तेलुगु में बाल लेखन' कार्यशाला का आयोजन।
4 सितंबर 2016	सिरसिला, तेलंगाना	तेलुगु के लब्धप्रतिष्ठ कवि डॉ. आर. वासुनंदन के साथ 'कवि संधि' कार्यक्रम का आयोजन।
5 सितंबर 2016	मोगा, पंजाब	'नवीं पंजाबी कहानी' विषयक परिसंवाद का आयोजन।
7 सितंबर 2016	कोलकाता	बालका साहित्य विषयक पत्रिका के सहयोग से साहित्य अकादेमी के पूर्व अध्यक्ष स्व. श्री सुनील गंगोपाध्याय पर 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन।
9 सितंबर 2016	त्रिवेंद्रम	प्रसिद्ध न्यूरोलोजिस्ट डॉ. के. राजशेखरन नायर के साथ 'व्यक्ति एवं कृति' कार्यक्रम का आयोजन।
10 सितंबर 2016	जम्मू	कुँवा वियोगी ट्रस्ट, जम्मू के सहयोग से डोगरी के प्रतिष्ठित कवियों के साथ 'कवि गोष्ठी' का आयोजन।
10 सितंबर 2016	दार्जिलिंग	नेपाली साहित्य सम्मेलन, दार्जिलिंग के सहयोग से लब्धप्रतिष्ठ नेपाली उपन्यासकार श्री गुप्त प्रधान के साथ 'कथा संधि' कार्यक्रम का आयोजन।
10 सितंबर 2016	दार्जिलिंग	नेपाली साहित्य सम्मेलन, दार्जिलिंग के सहयोग से 'स्वतंत्र्योत्तर भारतीय नेपाली उपन्यासों की प्रवृत्तियाँ' विषयक परिसंवाद का आयोजन।
10 सितंबर 2016	भुवनेश्वर	ओडिया के लब्धप्रतिष्ठ लेखक श्री बंशीधर सारंगी के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन।
10 सितंबर 2016	भुवनेश्वर	'लोक : विविध स्वर' कार्यक्रम का आयोजन।
11 सितंबर 2016	सितोंग, प.बंगाल	गीतांजलि साहित्य संस्थान, सितोंग के सहयोग से 'नेपाली रचना पाठ' कार्यक्रम का आयोजन।
11 सितंबर 2016	सितोंग, प.बंगाल	गीतांजलि साहित्य संस्थान, सितोंग के सहयोग से जाने-माने कलाकार श्री सुभाष क्षेत्री के साथ 'व्यक्ति एवं कृति' कार्यक्रम का आयोजन।
11 सितंबर 2016	वडोदरा, गुजरात	बडोदरा युनाइटेड सिंधी यूथ के सहयोग से 'गुजरात में सिंधी नाट्य लेखन' विषयक परिसंवाद का आयोजन।
11 सितंबर 2016	अगरतला, त्रिपुरा	'पूर्वोत्तर लघु पत्रिका उत्सव 2016' का आयोजन।
12-13 सितंबर 2016	जोधपुर, राजस्थान	'राजस्थानी युवा लेखक सम्मिलन' का आयोजन।
14 सितंबर 2016	नई दिल्ली	हिंदी दिवस के अवसर पर ज़ी इंटरटेनमेंट इंटरप्राइज़ेज़ लिमिटेड के सहयोग से 'हिंदी की वर्तमान स्थिति : चुनौतियाँ एवं समाधान' विषयक 'संवाद' कार्यक्रम का आयोजन।
14 सितंबर 2016	कलोल, गुजरात	एम.एम. गाँधी आर्ट् एंड कॉमर्स कॉलेज, कलोल के सहयोग से 'साहित्य मंच' का आयोजन।
14-21 सितंबर 2016		अकादेमी के मुख्य कार्यालय दिल्ली एवं क्षेत्रीय कार्यालयों मुंबई, कोलकाता, बेंगळूरु एवं उपकार्यालय चेन्नै में 'हिंदी सप्ताह' का आयोजन।

16 सितंबर 2016	पोलाची, तमिलनाडु	एन.जी.एम. कॉलेज पोलाची के सहयोग से 'ए.एस. ज्ञानसमबंधन जन्मशतवार्षिकी' परिसंवाद का आयोजन।
16 सितंबर 2016	कोलकाता	महाश्वेता देवी शीर्षक से 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन।
16 सितंबर 2016	बेंगळूरु	नेशनल कॉलेज के सहयोग से 'बी.जी.एल. स्वामी जन्मशतवार्षिकी' संगोष्ठी का आयोजन।
16-30 सितंबर 2016		अकादेमी के मुख्य कार्यालय दिल्ली एवं क्षेत्रीय कार्यालयों मुंबई, कोलकाता, बेंगळूरु एवं उपकार्यालय चेन्नै में 'स्वच्छता पखवाड़ा' का आयोजन।
17 सितंबर 2016	श्रृंगेरी, कर्नाटक	जे.सी.बी.एम. कॉलेज के सहयोग से 'कुवेम्पु साहित्य स्पंदन' के व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व पर 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन।
17-18 सितंबर 2016	होन्नावारा, कर्नाटक	कन्नड विभाग, एस.डी.एम. कॉलेज के सहयोग से 'कन्नड युवा लेखक सम्मिलन' का आयोजन।
17-18 सितंबर 2016	बीकानेर, राजस्थान	'राजस्थानी नाटक : परंपरा और चुनौतियाँ' विषयक संगोष्ठी का आयोजन।
19 सितंबर 2016	नई दिल्ली	'राजभाषा मंच' शृंखला के अंतर्गत श्री जयप्रकाश कर्दम, निदेशक, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्था द्वारा व्याख्यान।
19-20 सितंबर 2016	गंगटोक, सिक्किम	सिक्किम विश्वविद्यालय, गंगटोक के सहयोग से 'मौखिक साहित्य के मार्ग' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन।
20 सितंबर 2016	नई दिल्ली	'हाली फ़हमी : मुख़्तलिफ़ जेहात' शीर्षक से 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन।
20 सितंबर 2016	अजमेर, राजस्थान	सिंधी विभाग, सम्राट पृथ्वीराज चौहान कॉलेज, अजमेर के सहयोग से सिंधी के लब्धप्रतिष्ठ लेखक श्री कलाधर मुतवा के साथ 'कथा संधि' कार्यक्रम का आयोजन।
20 सितंबर 2016	अजमेर, राजस्थान	सिंधी विभाग, सम्राट पृथ्वीराज चौहान कॉलेज, अजमेर के सहयोग से सिंधी के लब्धप्रतिष्ठ कवयित्री सुश्री विम्मी सदारंगानी के साथ 'कवि संधि' कार्यक्रम का आयोजन।
20 सितंबर 2016	मुंबई	अंग्रेज़ी विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय के सहयोग से 'भारतीय साहित्य में पारसी का योगदान' विषयक परिसंवाद का आयोजन।
22-23 सितंबर 2016	नई दिल्ली	पंजाबी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय के सहयोग से 'दिल्ली के पंजाबी साहित्य में बहुसभ्यचार्वाद : पहचान का संकट' विषयक संगोष्ठी का आयोजन।
22 सितंबर 2016	त्रिवेंद्रम, केरल	प्रो. एन. कृष्ण पिल्लै फ़ाउंडेशन, तिरुवनंतपुरम के सहयोग से 'एन. कृष्ण पिल्लै जन्मशतवार्षिकी' संगोष्ठी का आयोजन।
23 सितंबर 2016	आदीपुर, गुजरात	सिंधी विभाग, तोलानी कॉलेज ऑफ़ आर्ट्स एंड साईंस, आदीपुर, कच्छ, गुजरात के सहयोग से सिंधी लेखिकाओं के साथ 'नारी चेतना' कार्यक्रम का आयोजन।
23 सितंबर 2016	आदीपुर, गुजरात	सिंधी विभाग, तोलानी कॉलेज ऑफ़ आर्ट्स एंड साईंस, आदीपुर, कच्छ, गुजरात के सहयोग से सिंधी के लब्धप्रतिष्ठ कवि श्री हरीश कर्मचंदानी के साथ 'कवि संधि' कार्यक्रम का आयोजन।
23 सितंबर 2016	अजमेर, राजस्थान	पश्चिमी क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, उदयपुर के सहयोग से 'वर्तमान उत्तर-पूर्व साहित्य' विषयक परिसंवाद का आयोजन। साथ ही 'ओक्टेव' के अंतर्गत उत्तर-पूर्व कवि सम्मिलन का आयोजन।
23 सितंबर 2016	नई दिल्ली	टोकियो यूनिवर्सिटी ऑफ़ फ़ॉरेन स्टडीज़, टोकियो, जापान के हिंदी एवं समकालीन भारतीय इतिहास के प्रोफ़सर तकेशी फ़ुजी के साथ 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन।
23-24 सितंबर 2016	पुदुचेरी	पाँडीचेरी इंस्टीट्यूट ऑफ़ लिंग्विस्टिक्स एंड कल्चर के सहयोग से 'तमिलनाडु के जनजातीय मौखिक साहित्य' विषयक संगोष्ठी का आयोजन।
23-24 सितंबर 2016	कोलकाता	'पेयरीचंद मित्र जन्मशतवार्षिकी' संगोष्ठी का आयोजन।
24 सितंबर 2016	मुदबिद्री, कर्नाटक	अल्वा एजुकेशन फ़ाउंडेशन, मुदबिद्री के सहयोग से 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन।
24 सितंबर 2016	कोलकाता	पठा भवन, कोलकाता के सहयोग से 'बाल साहित्य' शीर्षक से 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन।

24 सितंबर 2016	नई दिल्ली	साहित्य अकादेमी के प्रतिष्ठित द्विमासिक हिंदी पत्रिका 'समकालीन भारतीय साहित्य' के पूर्व अतिथि संपादक श्री प्रभाकर श्रोत्रिय के निधन पर शोक सभा का आयोजन।
24-25 सितंबर 2016	उदलगुरी, असम	'प्रमोद च. ब्रह्म : जीवन एवं कृति' विषयक संगोष्ठी का आयोजन।
25 सितंबर 2016	इंफ़ाल	मणिपुरी लिट्रेरी सोसायटी, इंफ़ाल के सहयोग से 'मणिपुरी लघु कथा' विषय पर 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन।
26 सितंबर 2016	तिरुर, केरल	थुंचथ एझुथाचन मलयाळम् यूनिवर्सिटी, तिरुर के सहयोग से 'थुंचथ एझुथाचन : अवधि एवं उपलब्धि' विषयक परिसंवाद का आयोजन।
26 सितंबर 2016	कुरनुल, आंध्र प्रदेश	सिल्वर जुबली गवर्नमेंट कॉलेज, कुरनुल के सहयोग से 'तेलुगु उपन्यास : रायलसीमा का योगदान' विषयक 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन।
26 सितंबर 2016	गुवाहाटी	स्वर्जी : दि क्रिएशन के सहयोग से बोडो के युवा लेखकों के साथ 'मुलाक़ात' कार्यक्रम का आयोजन।
26 सितंबर 2016	गुवाहाटी	स्वर्जी : दि क्रिएशन के सहयोग से बोडो लेखिकाओं के साथ 'अस्मिता' कार्यक्रम का आयोजन।
26 सितंबर 2016	नई दिल्ली	हिंदी लेखिकाओं के साथ 'अस्मिता' कार्यक्रम का आयोजन।
26 सितंबर 2016	काकचिंग	लोक संग्रहालय, काकचिंग पुस्तकालय एवं सूचना केंद्र के सहयोग से 'लोक : विविध स्वर' कार्यक्रम का आयोजन।
26-27 सितंबर 2016	लद्दाख, जे. एंड के.	जम्मू एवं कश्मीर एकेडमी ऑफ़ आर्ट्स, कल्चर एवं लैंग्वेजेज़ के सहयोग से 'उत्तर-पूर्व एवं उत्तरी लेखक सम्मिलन' का आयोजन।
26-27 सितंबर 2016	प.मिदनापुर, प.बंगाल	भट्टर कॉलेज, पश्चिमी मिदनापुर के सहयोग से 'पूर्वी क्षेत्रीय भाषाओं में समकालीन महिला लेखन' शीर्षक संगोष्ठी का आयोजन।
27 सितंबर 2016	इंफ़ाल, मणिपुर	प्रगतिशील स्वैच्छिक संगठन, मणिपुर ड्रामेटिक यूनियन, इंफ़ाल के सहयोग से 'तेलेम जोगिंदरजीत सिंह' जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन।
27-28 सितंबर 2016	गोलकगंज, असम	कोच राजवंशी साहित्य सभा के सहयोग से 'पश्चिमी असम के कोच राजवंशियों में मिथक एवं कहानी' शीर्षक संगोष्ठी का आयोजन।
28 सितंबर 2016	कोलकाता	राजभाषा मंच के अंतर्गत 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन।
28 सितंबर 2016	इंफ़ाल	डी.एम. कॉलेज, इंफ़ाल के सहयोग से 'मेरे झरोखे से' कार्यक्रम का आयोजन जिसमें मणिपुरी के लब्धप्रतिष्ठ लेखक डॉ. एच. बिहारी सिंह ने मणिपुरी के विख्यात लेखक डॉ. खुमंथेम प्रकाश सिंह के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर व्याख्यान दिया।
28 सितंबर 2016	इंफ़ाल	मणिपुरी के लब्धप्रतिष्ठ उपन्यासकार डॉ. एल. प्रमाचंद सिंह के साथ 'कथा संधि' कार्यक्रम का आयोजन।
28-29 सितंबर 2016	शांतिनिकेतन	ईस्टर्न ज़ोनल कल्चरल सेंटर, कोलकाता के सहयोग से 'संताली लोक एवं मौखिक साहित्य' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन।
28-29 सितंबर 2016	इंफ़ाल	मणिपुर स्टेट कला अकादमी के सहयोग से 5वीं साहित्योत्सव के अवसर पर 'कवि गोष्ठी' का आयोजन।
29-30 सितंबर 2016	डिब्रूगढ़, असम	डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय में 'अंग्रेज़ी-असमिया अनुवाद कार्यशाला' का आयोजन।
29 सितंबर 2016	गोलाघाट, असम	जे.जी.एस.जी. कॉलेज, असम के सहयोग से 'कथा लेखन के हालिया रुझान : असमिया एवं बाङ्ला उपन्यास का तुलनात्मक अध्ययन' विषयक परिसंवाद का आयोजन।
29 सितंबर 2016	नई दिल्ली	छः सदस्यीय कोरियन लेखक प्रतिनिधिमंडल का अकादेमी भ्रमण।
30 सितंबर 2016	नई दिल्ली	अंतर्राष्ट्रीय अनुवाद दिवस के अवसर पर 'अनुवाद : बहुसांस्कृति चुनौतियाँ' विषयक परिसंवाद का आयोजन।

30 सितंबर 2016	संबलपुर, ओडिशा	ओडिशा साहित्य अकादमी के सहयोग से 'ओडिया नाटक' विषयक संगोष्ठी का आयोजन।
अक्टूबर 2016		
1 अक्टूबर 2016	मुंबई	'मोती प्रकाश : व्यक्तित्व एवं कृतित्व' विषयक परिसंवाद का आयोजन।
1 अक्टूबर 2016	कोलकाता	'पंडित रघुनाथ मुर्मू' विषयक परिसंवाद का आयोजन।
1 अक्टूबर 2016	कोलकाता	संताली की प्रतिष्ठित लेखिका सुश्री जोबा मुर्मू के साथ 'कथा संधि' कार्यक्रम का आयोजन।
1 अक्टूबर 2016	मंगलोर, कर्नाटक	गोवर्नमेंट फ़र्स्ट ग्रेड कॉलेज, दक्षिण कन्नड ज़िला, कर्नाटक के सहयोग से 'कन्नड हास्य लेखन' शीर्षक से 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन।
2 अक्टूबर 2016	चपलगाँव, महाराष्ट्र	ग्रामीण विद्या विकास विद्यालय के सहयोग से अकादेमी की ग्रामीण क्षेत्रों के साहित्य प्रेमियों के लिए नया कार्यक्रम 'ग्रामलोक' का आयोजन।
3-4 अक्टूबर 2016	सोलापुर	हीराचंद नेमचंद कॉलेज, सोलापुर के सहयोग से 'महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश एवं कर्नाटक के भक्ति आंदोलन : समकालीन परिदृश्य' विषयक संगोष्ठी का आयोजन।
4 अक्टूबर 2016	मलेरकोटला, पंजाब	पंजाब उर्दू अकादेमी के सहयोग से 'उर्दू साहित्य के इतिहास में पंजाब के उर्दू लेखकों का योगदान' विषयक परिसंवाद का आयोजन।
4 अक्टूबर 2016	सिल्चर, असम	मणिपुरी विभाग, जी.सी. कॉलेज, सिल्चर के सहयोग से 'आधुनिक मणिपुरी साहित्य में बाङ्ला साहित्य का प्रभाव' विषयक 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन।
4 अक्टूबर 2016	उडुपी, कर्नाटक	कन्नड विभाग, एम.जी.एम. कॉलेज, उडुपी के सहयोग से 'साहित्य सोबागु' शीर्षक से 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन।
5 अक्टूबर 2016	सिल्चर, असम	मणिपुरी विभाग, असम विश्वविद्यालय, सिल्चर के सहयोग से 'समकालीन मणिपुरी साहित्य की ओर लोक आख्यान' विषयक परिसंवाद का आयोजन।
7 अक्टूबर 2016	गोवा	गोवा विश्वविद्यालय एवं अखिल भारतीय कोंकणी परिषद् के सहयोग से 'कोंकणी पटकथा लेखन में साहित्यिक तत्त्व' विषयक परिसंवाद का आयोजन।
7-8 अक्टूबर 2016	जालंधर, पंजाब	गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी कॉलेज, जालंधर के सहयोग से 'उत्तर-पूर्व एवं उत्तरी लेखक सम्मिलन' का आयोजन।
15 अक्टूबर 2016	ओरोविल्ले, तमिलनाडु	तमिळ हेरिटेज सेंटर, ओरोविल्ले के सहयोग से 'बाल साहित्य : वर्तमान एवं भविष्य' विषयक परिसंवाद का आयोजन।
17 अक्टूबर 2016	नई दिल्ली	अंग्रेज़ी की लब्धप्रतिष्ठ लेखिका सुश्री नमिता गोखले के साथ 'कथा संधि' कार्यक्रम का आयोजन।
20 अक्टूबर 2016	कडप्पा	साहिति मित्रमंडली, प्रोद्दातुर, कडप्पा के सहयोग से 'तेलुगु उपन्यास : तेलुगु साहित्यिक आलोचना का विकास एवं रायलसीमा का योगदान' विषयक 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन।
20 अक्टूबर 2016	मुंबई	कन्नड विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय के सहयोग से 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन।
20 अक्टूबर 2016	जम्मू	जम्मू विश्वविद्यालय के सहयोग से 'संघर्ष क्षेत्र से साहित्य एवं कथा' विषयक परिसंवाद का आयोजन।
21 अक्टूबर 2016	गुवाहाटी	बोडो के लब्धप्रतिष्ठ कवि श्री धरानींधर वेरी के साथ 'कवि संधि' कार्यक्रम का आयोजन।
22 अक्टूबर 2016	भुवनेश्वर	'निर्मला देवी' विषयक परिसंवाद का आयोजन।
22 अक्टूबर 2016	कर्बी ओङ्लॉग	बोडो साहित्य सभा के सहयोग से बोडो लेखिकाओं के साथ 'नारी चेतना' कार्यक्रम का आयोजन।
22 अक्टूबर 2016	कुंद्राकुडी, तमिलनाडु	साहित्यिक पत्रिका 'थोड़ादम' के सहयोग से 'तमिळ की बाल पत्रिकाएँ' विषयक परिसंवाद का आयोजन।
22 अक्टूबर 2016	वाराणसी, उत्तर प्रदेश	श्री विद्याधर्म प्रचारणी नेपाली समिति के सहयोग से 'नेपाली कवि गोष्ठी' का आयोजन।

22 अक्टूबर 2016	वाराणसी, उत्तर प्रदेश	श्री विद्याधर्म प्रचारणी नेपाली समिति के सहयोग से नेपाली के लब्धप्रतिष्ठ लेखक श्री दुर्गा प्रसाद श्रेष्ठ के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन।
22-23 अक्टूबर 2016	कटक, ओडिशा	सरला साहित्य संसद के सहयोग से 'प्रकृति एवं साहित्य' विषयक संगोष्ठी का आयोजन।
22-23 अक्टूबर 2016	सुरत, गुजरात	राष्ट्रेत्र तेलुगु समख्या एवं गुजरात साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित 'राष्ट्रीय साहित्योत्सव' में साहित्य अकादेमी का आंशिक प्रायोजन।
22-24 अक्टूबर 2016	शिलाँग, मेघालय	'खासी-उर्दू अनुवाद कार्यशाला' का आयोजन।
23-24 अक्टूबर 2016	कोटा, राजस्थान	'सुर्यमल मिश्रान' द्विवार्षिक जन्मशती संगोष्ठी का आयोजन।
23 अक्टूबर 2016	भिवंडी, महाराष्ट्र	अदबी कारवाँ के सहयोग से 'उर्दू, मराठी, कोंकणी लोक गीत' शीर्षक परिसंवाद का आयोजन।
24 अक्टूबर 2016	नई दिल्ली	हिंदी के लेखकों के साथ 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन।
25 अक्टूबर 2016	इंफ़ाल, मणिपुर	लोकतक खोरजे लुप के सहयोग से 'हेइसनाम मंगोलजाओ सिंह' जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन।
25 अक्टूबर 2016	इंफ़ाल, मणिपुर	मणिपुरी के लब्धप्रतिष्ठ लेखक डॉ. एन. विद्यासागर सिंह के साथ 'कवि संधि' कार्यक्रम का आयोजन।
26 अक्टूबर 2016	चेन्नै	मद्रास विश्वविद्यालय के सहयोग से 'ला.सा.रा.' शीर्षक से परिसंवाद का आयोजन।
26 अक्टूबर 2016	चेन्नै	राजभाषा शृंखला के अंतर्गत 'दक्षिण भारतीय राज्यों में राजभाषा का कार्यान्वयन' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन।
26 अक्टूबर 2016	मोइराँग, मणिपुर	मणिपुरी विभाग, मोइराँग गवर्नमेंट कॉलेज के सहयोग से 'लोकतक एवं मणिपुरी साहित्य' विषयक परिसंवाद का आयोजन।
26 अक्टूबर 2016	त्रिचुर, केरल	भाषापोशिनी के सहयोग से 'साहित्यिक पत्रकारिता' विषयक परिसंवाद का आयोजन।
26 अक्टूबर 2016	त्रिचुर, केरल	भाषापोशिनी, मलयाळम् मनोरमा के सहयोग से मलयाळम् के लब्धप्रतिष्ठ लेखक श्री पी.के. परक्कादावु के साथ 'कथा संधि' कार्यक्रम का आयोजन।
26 अक्टूबर 2016	पुरानत्तुकारा, केरल	राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, केरल के सहयोग से 'संस्कृत में तकनीकी साहित्य' विषयक संगोष्ठी का आयोजन।
27 अक्टूबर 2016	कुप्पम, आंध्र प्रदेश	तेलुगु विभाग, द्रवेडियन विश्वविद्यालय, कुप्पम के सहयोग से 'दक्षिण भारतीय लघुकथा में समकालीन रुझान' विषयक परिसंवाद का आयोजन।
28 अक्टूबर 2016	नई दिल्ली	अंग्रेज़ी, हिंदी, पंजाबी एवं उर्दू भाषा के लेखकों के साथ 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन।
29 अक्टूबर 2016	त्रिवेंद्रम, केरल	वाई.एम.सी.ए., त्रिवेंद्रम के सहयोग से 'मलयाळम् यात्रा लेखन एवं अनुभव' विषयक 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन।
29 अक्टूबर 2016	भौंजानगर, ओडिशा	संस्कृतिक परिषद के सहयोग से 'ओडिया साहित्य का तत्कालीन रुझान' विषयक परिसंवाद का आयोजन।
30 अक्टूबर 2016	भुवनेश्वर, ओडिशा	ओडिशा लेखक को-आप्रेटिव सोसायटी लि. के सहयोग से 'गुरचरण पटनायक' जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन।
30 अक्टूबर 2016	मंगलोर, कर्नाटक	कोंकणी भाषा मंडल के सहयोग से कोंकणी के लब्धप्रतिष्ठ कवि श्री सरतचंद्र शेनॉय के साथ 'कवि संधि' कार्यक्रम का आयोजन।
30 अक्टूबर 2016	मंगलोर, कर्नाटक	कोंकणी भाषा मंडल के सहयोग से कोंकणी के लब्धप्रतिष्ठ कथाकार श्री एडविन जे.एफ़. डिसूज़ा के साथ 'कथा संधि' कार्यक्रम का आयोजन।
31 अक्टूबर - 5 नवंबर 2016		अकादेमी के मुख्य कार्यालय एवं क्षेत्रीय कार्यालयों में 'सतर्कता जागरूकता सप्ताह' का अनुसरण।

प्रधान कार्यालय
रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग
नई दिल्ली 110 001
दूरभाष : 011-23386626/27/28
फ़ैक्स : 091-11-23382428
ई-मेल : secretary@sahitya-akademi.gov.in

विक्रय कार्यालय
स्वाति, मंदिर मार्ग
नई दिल्ली 110 001
दूरभाष : 011-23745297, 23364204
फ़ैक्स : 091-11-23364207
ई-मेल : sales@sahitya-akademi.gov.in

मुंबई क्षेत्रीय कार्यालय
172, मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग
दादर, मुंबई 400 014
दूरभाष : 022-24135744, 24131948
फ़ैक्स : 091-22-24147650
ई-मेल : rs.rom@sahitya-akademi.gov.in

कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय
4, डी.एल. खान मार्ग
कोलकाता 700 025
दूरभाष : 033-24191683, 24191705/06
फ़ैक्स : 091-33-24191684
ई-मेल : rs.rok@sahitya-akademi.gov.in

बेंगळूरु क्षेत्रीय कार्यालय
सेंट्रल कॉलेज परिसर
डॉ बी.आर.अम्बेडकर वीथी, बेंगळूरु 560 001
दूरभाष : 080-22245152
फ़ैक्स : 091-80-22121932
ई-मेल : rs.rob@sahitya-akademi.gov.in

चेन्नै कार्यालय
मेन बिल्डिंग, गुना बिल्डिंग (द्वितीय तल), 443 (304)
अन्नासलाई, तेनामपेट, चेन्नै 600 018
दूरभाष : 044-24311741, 24354815
फ़ैक्स : 091-44-24311741
ई-मेल : chennaioffice@sahitya-akademi.gov.in

वेबसाइट : http://www.sahitya-akademi.gov.in

खुर्शीद आलम द्वारा संपादित तथा के.श्रीनिवासराव, सचिव द्वारा
साहित्य अकादेमी, रवींद्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली 110 001 के लिए प्रकाशित
एवं विकास कंप्यूटर एंड प्रिंटर्स, दिल्ली द्वारा मुद्रित